بسم اللہ الرحمن الرحیم

اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ ؕ

(العنکبوت۲۹، آیت:٤٥)

अज़मते नमाज़

मुअल्लिफ़

मौलाना साजिद अली मिस्बाही

उस्ताज़ अल-जामियतुल अशरफिया, मुबारकपुर, आज़मगढ़

नाशिर

महफ़िले फैज़ाने हाफ़िज़े मिल्लत

दारुल उलूम महबूबे यज़्दानी

निकट: वानजावाड़ी मस्जिद, माहिम शरीफ़, मुंबई

जुमला हुक़ूक़ बहक़्क़े नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब : अज़मते नमाज़
मुअल्लिफ़ : मौलाना साजिद अली मिस्बाही
उस्ताज़ अल-जामियतुल अशरफिया, मुबारकपुर, आज़मगढ़, 9450827590
प्रूफ़रीडर्स : (1) मौलाना जुनैद मिस्बाही
उस्ताज़ अल-जामियतुल अशरफिया, मुबारकपुर
(2) मौलाना अब्दुर रहमान मिस्बाही
उस्ताज़ अल-जामियतुल अशरफिया, मुबारकपुर
सफ़हात : 144
साले इशाअत : जुमादल ऊला 1439/ फरवरी 2018
नाशिर : महफ़िले फैज़ाने हाफ़िज़े मिल्लत,
दारुल उलूम महबूबे यज़्दानी, निकट वानजावाड़ी मस्जिद, माहिम शरीफ़, मुंबई

मिलने के पते

1- महफ़िले फैज़ाने हाफ़िज़े मिल्लत, दारुल उलूम महबूबे यज़्दानी, निकट वानजावाड़ी मस्जिद, माहिम शरीफ़, मुंबई
2- नूरी किताब घर, मुबारकपुर, आज़मगढ़, यु०पी०
3- मकतबा ह़ाफिज़े मिल्लत, मुबारकपुर, आज़मगढ़, यु०पी०

शरफ़े इंतिसाब

अपनी मुशफ़िक़ा, मुहसिना माँ के नाम जिसने मुझे अपना खूने जिगर पिलाया और सर्द व गर्म हालात में अपनी आग़ोश -ए-मुहब्बत को मेरी पनाह-गाह (रहने की जगह) बनाया और अपने मुशफ़िक़ व मेहरबान बाप के नाम जिसने हमेशा मुझे संवारने की कोशिश की और मसाइब व आलाम (मुसीबत और तकलीफ) की भट्टी में सुलगते हुए भी मुझे तलबे इल्म के लिए आज़ाद रखा।

अल्लाह तबारक व तआला अपने महबूब ﷺ के तुफ़ैल उनके साय-ए-शफ़क़त व मुहब्बत को मेरे सर पर तादेर क़ायम रखे। आमीन।

तालिबे दुआ

साजिद अली मिस़बाही

कसिया, महेन्दु पार, संतकबीर नगर (यू.पी.)

हदीय-ए-शुक्र व सिपास

ख़तीबुलबराहीन हज़रत अल्लामा सूफ़ी मुहम्मद निज़ामुद्दीन क़ादरी बरकाती रिज़बी (دامت برکاتهم العالیه) की बारगाह में, जिन्होंने समय की कमी के बावजूद कुछ मुक़ामात से किताब का अध्ययन फ़रमाया और अपने नूरानी कलिमात व दुआ-ए-बरकात से नवाज़ा।

पीरे तरीक़त मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत अल्लामा मुहम्मद अब्दुल मुबीन नोमानी क़ादरी (دامت فیوضهم المبارکه) के हुज़ूर में, जिन्होंने अपने मसरूफ़ तरीन औक़ात में से कुछ मौक़ा निकाल कर इस किताब पर बिलस्तीआब (पूरे तौर पर) नज़रे सानी फ़रमाई और अपनी गिराँ-बहा फ़िक्र व तदबीर व बेशक़ीमत तहरीर से सरफ़राज़ फ़रमाया।

उस्ताज़ुश्शुअरा, अदीबे लबीब सय्यद क़ैसर वारसी की शाने आला निशान में, जिन्होंने अपने मुफ़ीद मश्वरों के साथ मंजूम तबसिरा से किताब की अहमियत को दो-चंद कर दिया।

अपने उन तमाम करम फ़र्माओं की ख़िदमत में जो गाहे-ब-गाहे कोताहियों पर निशान दही और हौसला-अफ़ज़ाई फ़रमाते रहते हैं, बिल ख़ुसूस मुहिब्बे गिरामी मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ मिस्बाही की ख़िदमत में जिन्होंने इस किताब का मुसव्वदा पूरा देखा और अपने मुफ़ीद सलाह से नवाज़ा।

अल्लाह جل شانه इन हज़रात की नवाज़िशात का सिलसिला ब दस्तूर बाक़ी रखे, आमीन।

नियाज़-मंद

साजिद अली मिस्बाही

उस्ताज़ अल-जामियतुल अशरफ़िया, मुबारकपुर, आज़मगढ़

दुआइया कलिमात

ख़तीबुल बराहीन हज़रत अल्लामा
सूफ़ी **मुहम्मद निज़ामुद्दीन** क़ादरी बरकाती रिज़वी
शेख़ुल हदीस दारुल-उलूम तनवीरुल इस्लाम, अमरडोभा, संतकबीर नगर (यू.पी.)

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی حَبِیْبِہِ الْکَرِیْم

अज़ीज़ी मौलाना साजिद अली मिस्बाही सल्लमहु जमाते अहले सुन्नत के ज़िम्मेदार आलिमे दीन हैं। ज़ेरे नज़र किताब अज़मते नमाज़ मौलाना मौसूफ़ की शाह-कार तसनीफ़ है जो अवाम व ख़वास सब के लिए मुफ़ीद है। समय की कमी की वजह से किताब का अध्ययन ना कर सका, लेकिन मुख़्तलिफ़ मुक़ामात से किताब को पढ़ा। ये किताब अपने मौज़ू के एतबार से बेहद इफ़ादीयत की हामिल है। मेरी दुआ है कि मौला तआला عَزَّوَجَلَّ अपने हबीब-ए- पाक ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल इस किताब को फायदेमंद बनाए और मुसन्निफ़ मौसूफ़ को मज़ीद तसनीफ़ व तालीफ़ के ज़रीया ख़िदमत-ए-दीन-ए-मतीन का जज़्बा अता फ़रमाए।

آمِیْن بِجَاہِ حَبِیْبِہِ الْکَرِیْم.

मुहम्मद निज़ामुद्दीन क़ादरी बरकाती रिज़वी
11 / रबीउल-अव्वल 1424 हि० /14 / मई 2003 ई०

तअस्सुराती कलिमात

हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद हबीबुल्लाह ख़ान मिस्बाही
उस्ताज़ व मुफ़्ती दारुल-उलूम फ़ज़ले रह़मानिया, पचपेड़वा,
बलरामपुर (यू.पी)

मुहिब्बे गिरामी क़दर मौलाना साजिद अली मिस्बाही क़ादरी
सलाम मसनून.....अवाफ़ी तरफ़ैन मतलूब

आपकी किताबे मुअल्लफ़ **अज़मते नमाज़** तोहफ़तन बासिरा नवाज़ हुई। याद आवरी का तहे दिल से शुक्रिया।

अव्वले नज़र में तो किताब मज़कूर के बारे में यही समझा कि नमाज़ से संबंधित आपकी इल्मी तहक़ीक़ का गिरांमाया तोहफ़ा -ए-नायाब है और रख दिया, बाद में जब मौक़ा मिला और तन्हाई में किताब को मुकम्मल गहरी नज़र से अध्ययन किया तो समझा कि ये आपके इल्मी कारनामों में से एक अच्छा कारनामा है जो रहती दुनिया तक अह्ले इल्म से दादे तहसीन लेता रहेगा, इसलिए कि किताब बड़ी मालूमाती और असर अंगेज़ है, दिल को दहलाने वाली और बे नमाज़ियों की अगर दिल की हरारते ईमानी बुझ ना गई हो नमाज़ी बनाने वाली है। मौला तआला की बारगाह में इस बंद-ए-नाचीज़ की तरफ़ से ये दुआ है कि आपके इल्म व फ़ज़ल में इज़ाफ़ा फ़रमाए और सआदते दारैन से नवाज़े, नीज़ अज़मते नमाज़ किताब के सदक़े में दीन व दुनिया की इज़्ज़त व अज़मत में सैकड़ों चांद लगाए।

آمین بجاہ حبیبہ الکر یم صلی اللہ تعالیٰ علیہ و سلم . فقط والسلام

मुहम्मद हबीबुल्लाह عفي عنه
24 / शव्वालुल मुअज़्ज़म 1424 हि०
20 / दिसंबर 2003 ई०

अनोखी फ़िक्र व तदबीर

मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत अल्लामा
मुहम्मद अब्दुल मुबीन नोमानी क़ादरी مد ظله النوراني
मुहतमिम व सदरुल मुदर्रिसीन जामिआ क़ादरिया, चिरय्या कोट, मऊ (यू.पी.)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰی حَبِیۡبِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَصَحۡبِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ.

नमाज़ की अहमियत व फ़ज़ीलत अहले ईमान के नज़दीक मुसल्लमात से है। और ये भी मुत्तफ़क़ अलैह है कि नमाज़ अहम्मुल फ़राइज़ और अफ़ज़लुल इबादात है, क़ुर्बे ख़ुदावंदी व रज़ाए इलाही का सबसे बड़ा ज़रीया भी। लेकिन इस के साथ ये बात भी मुसल्लम है कि आज नमाज़ ही से सबसे ज़्यादा ग़फ़लत बरती जाती है जो कमजोर ईमान की दलील है और हुब्बे दुनिया व ऐश परस्ती की भी, ऐसे माहौल में ज़रूरत है कि नमाज़ के फ़ज़ाइल व बरकात तक़रीरों, तहरीरों दोनों तरह से आम किए जाएं। जुमे की तक़रीरों और दीनी कानफ्रेंनसों में भी फ़ज़ाइले नमाज़ पर मुसलसल रोशनी डाली जाये और किसी एक मुक़र्रिर को नमाज़ पर बोलने के लिए ख़ास कर दिया जाये, हत्ता कि महाफ़िले मीलाद शरीफ़ के बयानात में भी एक हिस्सा नमाज़ के लिए रखा जाये।

फ़ज़ाइल के साथ साथ तर्के नमाज़ की वईदें भी बयान की जाएं, घरों के गार्जियन और मदारिस के ज़िम्मेदार हज़रात भी अपने मातहतों को नमाज़ की सिर्फ ताकीद ही ना करें, बल्कि तर्क व ग़फ़लत पर सख़्त सुस्त सज़ाएं भी दें। यूँही माकदार मुसलमान कारख़ानेदार अपने मज़दूरों को नमाज़ की ताकीद करें, पाबंद बनाएँ, बल्कि

मुलाज़मत में नमाज़ की शर्त लगा दें, यानी नमाज़ी मुलाज़िमीन को तर्जीह दें। इस तरह हाजत मंद मज़दूर ब आसानी नमाज़ी बन जाऐंगे। और वक़तन फ़वक़तन नमाज़ की अहमियत पर वाअज़ व नसीहत और तरग़ीब व तरहीब का भी एहतिमाम किया जाये ताकि सिर्फ आदत के तौर पर या महज़ ज़ोर ज़बरदस्ती की बुनियाद पर नमाज़ें ना पढ़ी जाएं, बल्कि इबादत समझ कर पूरे ख़ुलूस व हुस्ने नीयत के साथ नमाज़ें अदा की जाएं, ताकि नमाज़ महज़ रस्म बन कर ही ना रह जाये, क्यों कि नमाज़ के हक़ीक़ी समरात उसी वक़्त मुरत्तब होंगे, जब कि उसे ज़ाहिरी व बातिनी आदाब से आरास्ता किया जाये और सेहत के साथ पढ़ा जाये।

बड़ी बड़ी कानफ्रेंसों और जलसों में देखा ये जाता है कि दीगर ज़रूरीयात पर तो हज़ारों और कहीं लाखों रुपये ख़र्च किए जाते हैं, लेकिन नमाज़ के इंतिज़ामात से यकसर ग़फ़लत बरती जाती है। ना वुज़ू के लिए पानी और लोटों का इंतिज़ाम होता है, ना ही इस्तिंजा ख़ाने वग़ैरा का, ना ही वक़्त पर अज़ान व जमाअत का कोई ख़ास एहतिमाम व इंतिज़ाम होता है, जिसकी वजह से कितने नमाज़ों के पाबंद हज़रात भी वक़्त पर बा जमाअत नमाज़ नहीं पढ़ पाते, चे जाए कि कोई आदमी नया नमाज़ी बन जाये।

इस ग़फ़लत व लापरवाही का एक सबब तो ये है कि अक्सर व बेशतर जलसा व कानफ्रेंस कराने वाले ख़ुद ही बे नमाज़ी होते हैं, तो दूसरों की नमाज़ की क्या फ़िक्र करेंगे। हाँ! जो इजलास और कानफ्रेंसें पाबंदे शरा हज़रात की ज़ेरे निगरानी मुनअक़िद होती हैं या जिनके ज़िम्मादार अक्सर उलमा होते हैं, उनमें ज़रूर ब आसानी नमाज़ का माक़ूल इंतिज़ाम व एहतिमाम किया जा सकता है और ये एहतिमाम दूसरी कानफ्रेंसों और जलसों के लिए नमूना भी बन जाएगा।

और जहां कहीं मालूम हो कि बानियाने इजलास नमाज़ों से ग़ाफ़िल हैं, उनको ग़ैरत दिलाई जाये और कहा जाये कि आप लोग ख़ुद

ही अमल नहीं करते तो फिर दूसरों की इस्लाह का सामान कैसे फ़राहम कर रहे हैं? उम्मीद है कि इन तदाबीर पर अमल करने कराने से ज़रूर नमाज़ियों की तादाद बढ़ जाएगी और हमारा मुआशरा तेज़ी के साथ सुधरता सँवरता नज़र आएगा। اِن شاءاللہ تعالیٰ۔

इस ज़माने में नमाज़ों की पाबंदी का एक ज़रीया ये भी है कि आलमी सुन्नी तहरीक दावते इस्लामी से अपने को वाबस्ता कर लिया जाये और इस के इजतिमाआत का इनइक़ाद अमल में लाया जाये। आज बाअज़ गुमराह जमातें नमाज़ों का सहारा लेकर हमारी सफ़ों में घुसती चली जा रही हैं। सुन्नी क़ौम को उनके चंगुल से बचाने का भी आसान रास्ता यही है कि हर हर गांव में दावते इस्लामी के ज़रीया मुसलमानों को नमाज़ी और सुन्नतों का पाबंद बनाया जाये।

ज़ेरे नज़र किताब अज़मते नमाज़ जिसे फ़ाज़िले नौजवान मौलाना साजिद अली मिस्बाही ने बड़ी अर्क़ रेज़ी और मेहनत से मुरत्तब किया है, उसी तहरीके सलात व सुंन्नत की तरफ़ एक मुस्तहसन इक़दाम है, ज़रूरत है कि इस को आम किया जाये और घर-घर पहुंचाया जाये। किताब में वाक़िआत भी काफ़ी मिक़दार में आए हैं जिनसे अच्छे असरात की उम्मीद है कि अवाम वाक़िआत व हिकायात से ज़्यादा दिलचस्पी रखते हैं और ग़ौर से सुनते, पढ़ते भी हैं। दुआ है कि मौला तआला मुसन्निफ़ की मेहनतों को क़बूलीयत का शरफ़ अता फ़रमाए और मुसलमानों को इस से ज़्यादा से ज़्यादा नफ़ा दे।

آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہِ الصَّلَاۃُ وَالتَّسْلِیْم۔

मुहम्मद अबदुल मुबीन नोमानी क़ादरी

दारुल उलूम क़ादरिया, चिरय्या कोट, मऊ, यू.पी.

2 / सफ़रुअ मुज़फ्फ़र 1424 हि०

अज़मते नमाज़ पर मंजूम तबसिरा (1)

शायरे इस्लाम हज़रत क़ारी
मुहम्मद इस्माईल तबस्सुम अज़ीज़ी
मुबारकपुर,आज़मगढ़, यू०पी०

क्या ख़ूब है ये अज़मत व रिफ़अत नमाज़ की
क़ुरआन में रक़म है फ़ज़ीलत नमाज़ की

हम क्या समझ सकेंगे भला अज़मते नमाज़
बस रब ही जानता है हक़ीक़त नमाज़ की

चेहरे से उस की होती है नूरानियत अयाँ(1)
सीने में जो भी रखता है उलफ़त नमाज़ की

वो जान बूझ कर, ना करेगा कभी क़ज़ा
जिसके भी दिल में होगी मुहब्बत नमाज़ की

पाबंदी से जो पढ़ता है हर वक़त की नमाज़
दिन रात उस को मिलती है बरकत नमाज़ की

हर गिज़ किसी भी हाल में छोड़ो ना तुम नमाज़
अल्लाह को पसंद है आदत नमाज़ की

कैसे ख़ुदा के बंदे हैं, मोमिन हैं कैसे वो
मिलती नहीं है जिन को अभी फ़ुर्सत नमाज़ की

(1) ज़ाहिर।

बंदों को ये बनाती है अल्लाह का वली[1]
ए मोमिनो! ये देख लो ताक़त नमाज़ की

सज्दे में रब से होता है मोमिन बहुत क़रीब
क़ुरबत ख़ुदा की देती है क़ुरबत नमाज़ की

सारी बुराईयों से बचाती है ये नमाज़
क़ुरआन में लिखा है ये बाबत नमाज़ की

हर एक ग़म से होगा वो आज़ाद हश्र में
मिल जाएगी जिसे भी ज़मानत नमाज़ की

सच्चा नमाज़ी होगा जो उस को ब-रोज़े हश्र
हो जाएगी नसीब शफ़ाअत नमाज़ की

सारी इबादतों में है अफ़ज़ल यही नमाज़
कितनी अज़ीम-तर है इबादत नमाज़ की

मस्जिद में जाके सर को झुकाओ ए मोमिनो!
दी जाये जिस घड़ी तुम्हें दावत नमाज़ की

सद-मरहबा[2] कि हज़रते साजिद ने बा ख़ुदा
लिखी है क्या ही ख़ूब ये अज़मत नमाज़ की

जाएगा एक रोज़ **तबस्सुम** वह ख़ुल्द में
वल्लाह जिसके साथ है नुसरत[3] नमाज़ की

तबस्सुम अज़ीज़ी, मुबारक पूरी
19 / जनवरी 2017 ई०

(1) दोस्त। (2) सौ बार मुबारकबादी। (3) मदद।

अज़मते नमाज़ पर मंज़ूम तबसिरा(2)

उस्ताज़ुश शोअरा सय्यद क़ैसर वारसी

सचिव दारुल उलूम वारसिया, गोमती नगर, लखनऊ

ए मोमिनो! समझ लो तुम अज़मत नमाज़ की
क़ुरआन में लिखी है फ़ज़ीलत नमाज़ की

रब की इबादतों में ये अफ़ज़ल नमाज़ है
इस्लाम के निज़ाम में अव्वल नमाज़ है

ठंडक नबी की आँखों की है इस नमाज़ में
मेराजे मूमिनीन भी है इस नमाज़ में

बे-शक बुराईयों से बचाती है ये नमाज़
मोमिन को नेकियों से सजाती है ये नमाज़

पेश-ए-नज़र जो आज मेरे ये किताब है
हर एतबार से ये बड़ी ला-जवाब है

रखा है इस का नामे हसीं अज़मते नमाज़
पढ़िए इसे तो आए नज़र हिकमते नमाज़

इस में मिलेंगे तुमको फ़ज़ाइल नमाज़ के
शामिल किए हैं इसमें मसाइल नमाज़ के

मौलाना साजिद इस के मुअल्लिफ़ हैं बा-कमाल
ताज़ा है उनका इल्म, बुलंद उनके हैं ख़्याल

उनके क़लम में मिलती हैं हमको रवानियाँ
फ़ाज़िल हैं अशरफ़िया के, आलिम हैं नौजवां

इस को पढ़ेगा जो भी हिदायत वो पाएगा
मुझको यक़ीं है ख़ुलद में वो घर बनाएगा

जो हैं नमाज़ी उनके लिए हैं बशारतें
इस में हैं प्यारी प्यारी नबी की रिवायतें

कैसे पढ़ें नमाज़, सिखाएगी ये किताब
सब फ़र्ज़ व वाजिबात बताएगी ये किताब

सुन्नत का क्या सवाब है, नफ़्लों का क्या सवाब
किस तरह से पढ़ें कि नमाज़ें ना हों ख़राब

सीखो तरीक़े इस से रुकू व सुजूद के
समझो मसाइल इस से क़ियाम व क़ुऊद के

अल-मुख़्तसर किताब बड़ी लाजवाब है
इस को समझ के जो भी पढ़े कामयाब है

क़ैसर नफ़्स नफ़्स है ख़ुदा से दुआ यही
फैले हर एक घर में नमाज़ों की रोशनी

सय्यद क़ैसर वारसी लखनवी

3 / जुलाई 2003 ई०

अज़मते नमाज़ पर मंजूम तबसेरा (3)

हज़रत मौलाना
हकीम फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ साहेब क़िबला
गोलपुर, किछौछा शरीफ

अर्शे बरीं से आई है नेअमत नमाज़ की
दौलत मिली नबी के बदौलत नमाज़ की

ख़लवत में रब ने ये दिया तोहफ़ा हबीब को
मेराजे बंदगी है सदाक़त नमाज़ की

वो यारे ग़ार मुस्तफ़ा सिद्दीक़े बा-सफ़ा
सिदक़ व सफ़ा से पूछ हक़ीक़त नमाज़ की

वो जिसकी ज़ात फ़र्क़ है इस्लाम व कुफ़्र में
हज़रत उमर को कैसी है उलफ़त नमाज़ की

उसमाने बा हया वही सरदारे अज़्किया
उन की ग़ेना में देख हलावत नमाज़ की

जिस तीर का निकलना ब-मुश्किल तरीन था
आसान हो गया वो ब-हालत नमाज़ की

वो वज्हहुल-करीम अली बाबे इलम से
शेर ख़ुदा से पूछ फ़ज़ीलत नमाज़ की

तारीख़ है गवाह कि मैदाने जंग में
छोड़े नहीं सहाबा जमाअत नमाज़ की

सारे नबी, सहाबी, वली और ताबिईन
सब मोमिनीन रखते हैं चाहत नमाज़ की

चालीस साल एक वुज़ू से इशा ता फ़ज्र
क्या ग़ौसे पाक रखते हैं रग़बत नमाज़ की

अव्वल सवाल हश्र में होगा नमाज़ का
नज़दीक रब के कितनी है अज़मत नमाज़ की

क़दमों को उस के छूने लगीं सर बुलंदीयां
सीने में जिसके बस गई उलफ़त नमाज़ की

राक़िम हैं इस के हज़रत साजिद अली अज़ीज़
इक बार पढ़के देखिए अज़मत नमाज़ की

रब की अता नबी का करम है लिखा हुआ
ज़ौक़े नमाज़ है, लिखी रिफ़अत नमाज़ की

बन कर के नूर क़बर में मूनिस मुहाफ़िज़ा
मिलती है आख़िरत में रिफ़ाक़त नमाज़ की

इनाम रब के कैसे हैं अहले नमाज़ पर
महशर में जगमगाएगी तलअत नमाज़ की

बा-दीन बा-नमाज़ है, बे-दीन बे-नमाज़
पढ़ देख और समझ ले ज़रूरत नमाज़ की

है बे-नमाज़ी और नमाज़ी का आईना
तहरीर में झलकती है सूरत नमाज़ की

या रब जो ये किताब पढ़े बा-अमल बने
बस जाये दिल में **फ़ैज़** मोहब्बत नमाज़ की

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़
ग्रामः गोलपुर, किछौछा मुक़द्दसा

हासिले मुतालआ

हज़रत मौलाना मुहम्मद अफ़रोज़ क़ादरी फ़हमी चिरय्याकोटी
फ़ाज़िल मर्कज़ुस सक़ाफ़ा अस्सुन्नीया, केरला

नमाज़ की अहमियत और इस की बेपायाँ फ़ज़ीलत के हवाले से मुअल्लिमे कायनात ﷺ का यह इरशाद बस है:

اِنَّ اَوَّلَ مَا یُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ یَوْمَ الْقِیَامَةِ مِنْ عَمَلِهٖ صَلَاتُهٗ.

बरोज़े महशर बंदा के नाम -ए- आमाल से पहले-पहल नमाज़ की पुरसिश होगी। आरिफ़ बिल्लाह हज़रत शरफ़ुद्दीन अबु तोआमा رحمۃ اللہ علیہ ने इसी हदीस की रोशनी में ये ला-फ़ानी शेअर कहा था ؎

روز محشر کہ جاں گداز بود　　اولیں پرسش نماز بود

रोज़े महशर कि जां गुदाज़ बुवद　　अव्वलीं पुरसिशे नमाज़ बुवद

इस शेअर को वो मक़बूलियते अनाम और सनदे दवाम मिली कि आज मस्जिद व मेहराब की पेशानियों पर उमूमन कंदा क्या मिलता है।

इधर माज़ी क़रीब में नमाज़ के तअल्लुक़ से छोटी बड़ी कई किताबें देखने को मिलीं, जिनमें मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अबुल हसन साहब मिस्बाही की तसनीफ़े लतीफ़ **अनवारे नमाज़** को नमाज़ के हवाले से एक मुकम्मल दाइरतुल मआरिफ़ की हैसियत हासिल है, और मौलाना अब्दुस सत्तार हमदानी साहेब की किताब **मोमिन की नमाज़** भी ख़ासे की चीज़ है। मगर इन ख़ुसूसियात के बावजूद ये किताबें ऐसी नहीं कि हर अबजद ख़ां और कम पढ़ा लिखा शख़्स ब सहूलत समझ सके और बिला तकल्लुफ़ शाहिद माना तक रसाई हासिल कर ले, और फिर अस्रे रवाँ के हालात कुछ ऐसे हैं कि उमूमन तबीअतें मसाइल ख़वानी की तरफ़ कम राग़िब होती हैं और अगर किसी का मैलान हुआ भी तो गाढ़े जुमले, मुश्किल अलफ़ाज़ और पेचीदा तरकीबें देखकर रहा

सहा ज़ौक़ भी सर्द पड़ जाता है। ऐसे ना-गुफ़्ता बेह हालात में एक क़ारी के दीदा-व-दिल तक दीन की बात पहुंचाना और इस के मिज़ाज व मज़ाक को मलहूज़ रखते हुए उसे मसाइल से आशना करना कितना मुश्किल काम है, उसे वही महसूस कर सकता है जिसने इस राह में आबला-पाई की हो।

इस वक़्त एक सेहत मंद व तवाना फ़िक्र व नज़र के मालिक जनाब मौलाना साजिद अली मिस्बाही की किताब **अज़मते नमाज़** मेरे पेशे निगाह है जिसे बजा तौर पर तरग़ीब व तरहीब का आमेख़्ता कहा जा सकता है। फ़ाज़िले मुअल्लिफ़ ने इस किताब को दो बाब (1) में तक़सीम कर के बाबे अव्वल के ज़िम्न में नमाज़ की अहमियत व अज़मत और बाबे दोम के तहत तर्के नमाज़ के वबाल को बयान किया है। इन बाबों में क्या कुछ बयान हुआ है ये तो आपको मुताले के बाद मालूम होगा लेकिन बाबे दोम पढ़ते वक़्त मुझ पर जो कैफ़ीयत तारी थी उसे लफ़्ज़ों का लिबादा नहीं पहना सकता। बस इतना समझ लें कि कोई सतर इस सब्र व सुकून से नहीं पढ़ सका कि आँखें ना भीगी हों और क़लब व रूह में गुदाज़ व गुदाख़्त की एक ख़ास कैफ़ियत महसूस ना हुई हो। बिलाशुब्हा इस किताब में इबरत व मवाइज़त का एक जहां आबाद है, और हर वाक़िया अपने अंदर जज़्ब व कशिश की बेपनाह तासीर का हामिल है, जिसे ख़ुलूसे दिल से पढ़ लेने के बाद नामुमकिन है कि एक तारिके नमाज़ या तारिके जमाअत नमाज़ों की मुदावमत पर ख़ुद को आमादा ना कर ले, और इस का आने वाला दिन गुज़रे हुए दिन से बेहतर ना हो। दीन से बेज़ारी और नमाज़ से बे-एअतनाई के इस ख़ूँ

(1) कुछ अहबाब की फ़र्माइश पर इस ऐडीशन में एक बाब का इज़ाफ़ा कर दिया गया है, जिसमें वुज़ू व नमाज़ के तरीक़े और कुछ अहकाम व मसाइल के साथ बेशतर नवाफ़िल के तरीक़े और उनके फ़ज़ाइल वग़ैरा भी शामिल किए गए हैं और उनवान की मुनासबत से बाबे दोम के कुछ मबाहिस मसलन क़ज़ा नमाज़ों के अहकाम व मसाइल, क़ज़ाए उमरी का तरीक़ा और इस की कुछ आसान सूरतें और फ़िदया-ए-नमाज़ के मसाइल भी तीसरे बाब ही में शामिल कर दिए गए हैं। उम्मीद है कि ये इज़ाफ़ा अवाम के लिए बहुत मुफ़ीद होगा । 12 साजिद अली मिस्बाही

चुकां अह्द में फ़ाज़िले मुअल्लिफ़ ने ऐसी दिल पज़ीर और इबरत-अंगेज़ किताब लिख कर जहां बेनमाज़ियों को ज़ौक़े नमाज़ से लज़्ज़त आशना करने की सई-ए-महमूद की है वहीं अपनी सआदतों का दायरा भी वसीअ से वसीअ-तर किया है। इस से क़बल वह दो बार दावत व तब्लीग़ का आफ़ाक़ी पैग़ाम क़ौम के सामने पेश कर चुके हैं। एक इक़ामत के वक़्त खड़े होने की तीन सूरतों की शक्ल में, दूसरे शादी और तर्ज़-ए-ज़िंदगी के रूप में, और अब ये तीसरी बार अज़मते नमाज़ की सौग़ात लेकर आपके रूबरू हुए हैं। वो अपनी इस क़लमी तग व दौ में कहाँ तक कामयाब हैं, इस का फ़ैसला आपका ज़ौक़े मुताअला करेगा। हमारी हैसियत तो बस एक मुबस्सिर की है। यानी हमने समुंद्र की राह आशकार कर दी है, अब अपने अपने ज़र्फ़ और अपनी अपनी तिशनगी के मुताबिक़ सैराबी आपका काम है।

ब-फ़ज़लिल्लाह (بفضل اللہ) मुहिब्बे गिरामी मौलाना साजिद अली मिस्बाही उन इक़बालमंद नौजवानों में से हैं जिन्हें वफ़ूरे इल्म व ख़ुलूसे नीयत के साथ ख़ुलूसे फ़िक्र व अमल की नेअमत भी ख़ुदाए बख़शिंदा ने ब-तौरे ख़ास मरहमत फ़रमाई है। सोज़ व असर की जो कैफ़ियत मौसूफ़ की तहरीरों में पाई जाती है और सरशारी की जो शराब उन के लफ़्ज़ लफ़्ज़ से छलकी पड़ती है इस का तअल्लुक़ महज़ फ़न, मश्क़ व मुज़ावलत और महज़ मलक-ए-तहरीर ही से नहीं, बल्कि उस का असल सर चश्मा वो गहरा ख़ुलूस, और सुन्नतों से लगाव है जिस से उनकी ज़िंदगी का लम्हा लम्हा रचा हुआ है।

फ़ाज़िले मुअल्लिफ़ ने जिन उमंगों और वलवलों के साथ अज़मते नमाज़ को हुलिय-ए-तर्तीब से आरास्ता करना चाहा था अफ़सोस किताबत व तबाअत की ख़स्तगी और बे-उमदगी के बाइस क़ारेईन अपनी भरपूर तवज्जोह इस तरफ़ महमेज़ ना कर सके होंगे। इस की वजह जो भी रही हो ताहम, हम इतना ज़रूर कहेंगे कि किताब की इन्फ़िरादियत व जामईयत उस की मुस्तहिक़ है कि उसे दुबारा सुथरी किताबत और पाकीज़ा तबाअत का चोला पहनाया जाये, ताकि तालिबाने शौक़ और शयुफ़्तगाने हक़ीक़त रूह की आसूदगी में कोई तिश्नगी महसूस ना करें। (ब-शुक्रिया माहनामा अशरफिया, अक्टुबर 2003)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ جَعَلَ الصَّلٰوۃَ عَلَمَ الۡاِیۡمَانِ وَعِمَادَ الدِّیۡنِ

وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنۡ اُتِیَ بِھَا مِنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَبَشَّرَ بِاَنَّھَا نُوۡرٌ

وَّنِجَاۃٌ لِّلۡمُصَلِّیۡنَ یَوۡمَ الدِّیۡنِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصۡحَابِہٖ اَجۡمَعِیۡنَ

बाबे अव्वल

नमाज़ की अज़मत व अहमियत

ख़ुदाए वहदहू ला-शरीक और उस के हबीब ﷺ पर ईमान लाने और अहले सुन्नत व जमाअत के मसलक के मुताबिक़ अपने अक़ाएद दुरुस्त कर लेने के बाद इंसान के लिए सबसे अज़ीम और मुहतम बिश्शान चीज़ नमाज़ है नमाज़ दीन का सुतून और ईमान की पहचान है। हुज़ूर सरवरे कायनात ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं:

اَلصَّلٰوۃُ عِمَادُ الدِّیۡنِ فَمَنۡ اَقَامَھَا فَقَدۡ اَقَامَ الدِّیۡنَ وَمَنۡ تَرَکَھَا فَقَدۡ ھَدَمَ الدِّیۡنَ.

(منیۃ المصلی،ص:۱۳)

नमाज़ दीन का सुतून है, जिसने नमाज़ को क़ायम रखा, उसने दीन को क़ायम रखा और जिसने नमाज़ छोड़ दी, उसने दीन को ढा दिया।

और एक दूसरी हदीसे पाक के अलफ़ाज़ इस तरह मनक़ूल हैं:

لِکُلِّ شَیۡءٍ عَلَمٌ وَعَلَمُ الۡاِیۡمَانِ الصَّلٰوۃُ (ایضاً)

हर चीज़ की एक पहचान होती है, ईमान की पहचान नमाज़ है।

नमाज़ की अज़मत व अहमियत का अंदाज़ा इस से भी लगा सकते हैं कि :

❋ हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह ﷺ ने ख़ुदा-ए-तआला की

बारगाह में अपने और अपनी मोमिन औलाद के लिए जो दुआ फ़रमाई वो नमाज़ ही से संबंधित थी। चुनाँचे क़ुराने पाक में इस का तज़किरा इस तरह है:

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ۝ (پ:١٣، ابراهيم:١٤، آيت:٤٠)

ए मेरे रब! मुझे नमाज़ का क़ायम करने वाला रख और कुछ(1) मेरी औलाद को। ए हमारे रब! और मेरी दुआ सुन ले।(कंज़ुल ईमान)

❋ हज़रत मूसा कलीमुल्लाह عليه السلام को जो सबसे पहले वह़ी हुई वो भी नमाज़ ही से संबंधित थी। चुनाँचे क़ुराने पाक में इस को इन अलफ़ाज़ में बयान किया गया है:

وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى ۝ اِنَّنِيْۤ اَنَا اللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاعْبُدْنِيْ ۙ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝

(پ:١٦، طٰهٰ:٢٠، آيت:١٣، ١٤)

और मैंने तुझे पसंद किया, अब कान लगा कर सुन जो तुझे वह़ी होती है, बे-शक मैं ही हूँ अल्लाह कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तो मेरी बंदगी कर और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम रख। (कंज़ुल ईमान)

❋ हज़रते ईसा रूहुल्लाह عليه السلام ने अपनी माँ की आग़ोश में ज़बान खोली तो आमाल में सबसे पहले नमाज़ की ताकीद का ही ज़िक्र फ़रमाया, जिसे क़ुरआन पाक में इस तरह बयान किया गया है:

قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰىنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۝ وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ (پ:١٦، مريم:١٩- آيت:٣٠، ٣١)

बच्चे (हज़रते ईसा عليه السلام)ने फ़रमाया: मैं हूँ अल्लाह का बंदा, उसने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया और उसने मुझे मुबारक किया मैं कहीं हूँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूँ। (कंज़ुल ईमान)

---

(1) आपने बाअज़ ज़ुर्रिय्यत के वास्ते नमाज़ों की पाबंदी और मुहाफ़िज़त की दुआ की, इसलिए कि बाअज़ की निसबत आपको ब-एलामे इलाही मालूम था कि वो काफ़िर होंगे। 12 (ख़ज़ाइनुल ईरफ़ान)

❋ हज़रत लुक़्मान عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने बेटे को जो नसीहत फ़रमाई उस में सबसे पहले नमाज़ क़ायम रखने का ज़िक्र किया। क़ुराने पाक में वो नसीहत इस तरह महफ़ूज़ है:

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۚ

(پ:۲۱، لقمٰن:۳۱، آیت:۱۷)

ए मेरे बेटे ! नमाज़ बरपा (क़ायम) रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर और जो उफ़्ताद (परेशानी) तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर, बे-शक ये हिम्मत के काम हैं।(कंज़ुल ईमान)

❋ हुज़ूर ताजदारे मदीना ﷺ के किसी सहाबी से एक गुनाह सर ज़द हो गया और वो उस की तलाफ़ी के लिए बारगाहे रसूल में हाज़िर हुए तो नमाज़े पंजगाना की मुहाफ़िज़त का हुक्म दिया गया और उस वक़्त ये आयते करीमा नाज़िल हुई:

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۚ

(پ:۱۲، هود:۱۱، آیت:۱۱٤)

और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों किनारों (1) और कुछ रात के हिस्सों (2) में, बेशक नेकियां बुराईयों को मिटा देती हैं ।ये नसीहत है नसीहत मानने वालों को। (कंज़ुल ईमान)

इस से मालूम हुआ कि नमाज़ अपनी बेपनाह अज़्मतों और तमाम-तर ख़ूबीयों के साथ साथ गुनाहों के धोने का बेहतरीन ज़रीया भी है।

हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान पर (चाहे वो मर्द हो या औरत) रोज़ाना पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। जो शख़्स उस की फ़र्ज़ीयत का इनकार करे वो काफ़िर है और जो शख़्स जान-बूझ कर नमाज़ छोड़े अगरचे एक ही वक़्त की, वो फ़ासिक़ है ।और जो नमाज़ ना पढ़ता हो

(1) दिन के दोनों किनारों से सुबह व शाम मुराद हैं, ज़वाल से पहले का वक़्त सुबह में और बाद का शाम में दाख़िल है, सुबह की नमाज़े फ़ज्र और शाम की नमाज़ ज़ुहर व अस्र हैं। 12 (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

(2) रात के हिस्सों की नमाज़ें मग़रिब व इशा हैं। 12 (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

उस के लिए हुक्म ये है कि उसे इतना मारा जाये कि ख़ून बहने लगे और क़ैद कर दिया जाये यहां तक कि वो तौबा करे और नमाज़ पढ़ने लगे। (आम्म-ए-कुतुब)

क़ुरआन व हदीस में जगह जगह नमाज़ को इस के सही वक़्त पर अदा करने की ताकीद आई है और इस के छोड़ने और वक़्त पर अदा ना करने वालों के लिए सज़ायें हैं। यहां चंद आयतें और हदीसें ज़िक्र की जाती हैं ताकि आप अपने परवरदिगार और उसके महबूब ﷺ के इरशादात पढ़ें और उन पर अमल करने की कोशिश करें।

इरशादाते रब्बानी

❋ اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا۝ (پ:٥، النساء:٤، آیت:١٠٣)

बेशक नमाज़ मुसलमानों पर वक़्त बाँधा हुआ फ़र्ज़ है।(कंज़ुल ईमान)

❋ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ۝

(پ:١، البقرہ:٢، آیت:٢،٣)

(क़ुरआन) हिदायत है डर वालों को वो जो बे-देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ायम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं। (कंज़ुल ईमान)

❋ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ۝ (پ:١، البقرہ:٢، آیت:٤٣)

और नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात दो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। (कंज़ुल ईमान)

❋ اَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ اِلٰى غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ؕ اِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا۝

(پ:١٥، بنی اسرائیل:١٧، آیت:٧٨)

नमाज़ क़ायम रखो सूरज ढलने (1) से रात की अँधेरी तक और सुबह का क़ुरआन, बेशक सुबह के क़ुरआन में फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं। (कंज़ुल ईमान)

❋ حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ۝ (پ:٢، البقرہ:٢، آیت:٢٣٨)

---

(1) सूरज ढलने से रात की अँधेरी तक चार नमाज़ें हुईं, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा। और सुबह के क़ुरआन से मुराद नमाज़े फ़ज्र है। जिसमें रात के फ़रिश्ते भी होते हैं और दिन के भी हाज़िर होजाते हैं।12 (ख़ज़ाइनुल ईरफ़ान मुलख़सन)

निगहबानी करो सब नमाज़ों और बीच की नमाज़ (अस्र) की और खड़े हो अल्लाह के हुज़ूर अदब से। (कंज़ुल ईमान)

❋ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝

(پ:۱۰، التوبة:۹، آیت:۷۱)

और मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ (साथी) हैं भलाई का हुक्म दें और बुराई से मना करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें, ये हैं जिन पर अनक़रीब (जल्द ही) अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (कंज़ुल ईमान)

अहादीसे मुस्तफ़ा

❋ اَلصَّلٰوةُ عِمَادُ الدِّيْنِ فَمَنْ اَقَامَهَا فَقَدْ اَقَامَ الدِّيْنَ وَمَنْ تَرَكَهَا فَقَدْ هَدَمَ الدِّيْنَ ●

(منية المصلى،ص:۱۳)

नमाज़ दीन का सुतून है जिसने नमाज़ को क़ायम रखा उसने दीन को क़ायम रखा और जिसने नमाज़ छोड़ दी, उसने दीन को ढा दिया।

❋ اَوَّلُ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الصَّلٰوةُ، فَاِنْ صَلُحَتْ صَلُحَ سَائِرُ عَمَلِهٖ وَاِنْ فَسَدَتْ فَسَدَ سَائِرُ عَمَلِهٖ. وَفِيْ رِوَايَةٍ: فَاِنْ صَلُحَتْ فَقَدْ اَفْلَحَ وَاِنْ فَسَدَتْ خَابَ وَخَسِرَ ●

(الترغيب والترهيب،ص:۲۴۵، ج:۱)

क़यामत के दिन बंदा से सबसे पहले नमाज़ का हिसाब लिया जाएगा। अगर ये ठीक रही तो बाक़ी आमाल भी ठीक रहेंगे और अगर ये ख़राब हुई तो उस के सारे आमाल ख़राब हो जाऐंगे। और एक रिवायत में है : अगर नमाज़ दुरुस्त हुई तो वो कामयाब हो जाएगा और अगर नमाज़ ख़राब हुई तो वो ख़ाइब व ख़ासिर (नाकाम व नामुराद) होगा।

❋ مَنْ لَقِيَ اللّٰهَ وَهُوَ مُضِيْعٌ لِلصَّلٰوةِ لَمْ يَعْبَأِ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِنْ حَسَنَاتِهٖ (الاحياء للغزالى،۲۵۲، ج:۱)

जो शख़्स अल्लाह جل شانه से मिले इस हाल में कि वो नमाज़ को बर्बाद करने वाला हो तो अल्लाह तआला उस की नेकियों का एतबार नहीं करेगा।

❋ مَنْ حَافَظَ عَلَيْهَا كَانَتْ لَهُ نُوْرًا وَّبُرْهَانًا وَّنَجَاةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ لَّمْ يُحَافِظْ عَلَيْهَا لَمْ تَكُنْ لَهُ نُوْرًا وَّلَا بُرْهَانًا وَّلَا نَجَاةً، وَكَانَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ قَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَاُبَيِّ بْنِ خَلْفٍ•

(مشکوٰۃ، ص:۵۸)

जो इस (नमाज़) की पाबंदी करेगा उस के लिए नमाज़ क़यामत के दिन नूर, दलील और ज़रीय-ए-नजात होगी। और जो उस की पाबंदी नहीं करेगा उस के लिए ना नूर होगी ना दलील और ना ही ज़रीय-ए-नजात और वो क़यामत के दिन क़ारून व फ़िरऔन और हामान व उबय बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

❋ مَا افْتَرَضَ اللّٰهُ عَلٰى خَلْقِهٖ بَعْدَ التَّوْحِيْدِ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنَ الصَّلٰوةِ وَلَوْ كَانَ شَيْءٌ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْهَا لَتَعَبَّدَ بِهِ الْمَلَائِكَةُ فَمِنْهُمْ رَاكِعٌ وَمِنْهُمْ سَاجِدٌ وَمِنْهُمْ قَائِمٌ وَقَاعِدٌ•

(الاحیاء للغزالی، ص:۲۰۲، ج:۱)

अल्लाह तआला ने अपनी मख़लूक़ पर तौहीद के बाद नमाज़ से ज़्यादा महबूब कोई चीज़ फ़र्ज़ नहीं फ़रमाई अगर उस के नज़दीक नमाज़ से ज़्यादा महबूब कोई और चीज़ होती तो फ़रिश्ते उसी के ज़रीया उस की इबादत करते । तो उनमें कुछ रुकूअ में हैं और कुछ सजदे में और कुछ क़ियाम में हैं और कुछ क़ुऊद में (और ये सब नमाज़ ही के काम हैं)।

इन आयात व अहादीस से ये हक़ीक़त बिलकुल ज़ाहिर हो जाती है कि नमाज़ तमाम इबादतों में सबसे अफ़ज़ल और मुहतमबिश्शान है। नमाज़ का सही वक़्त पर अदा करना ख़ुदा व रसूल की ख़ुश-नूदी और आख़िरत में नजात व कामयाबी का बेहतरीन ज़रीया है। अल्लाह جل شانه तमाम मुसलमानों को नमाज़े पंजगाना बा-जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।आमीन।

पाँच वक़्त की नमाज़ें और उनका समरा

❋ हज़रत उबादा बिन सामित ﷺ से मर्वी है कि रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: पाँच वक़्त की नमाज़ें अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ कीं जो उनके लिए अच्छी तरह वुज़ू करे और उन्हें सही वक़्त पर अल्लाह की बारगाह में दिल लगा कर अदा करे उस के लिए अल्लाह तआला का वादा है कि उसे बख़्श देगा।और जो ऐसा ना करे उस के लिए कोई वादा नहीं, चाहे तो बख़्श दे और चाहे तो अज़ाब दे। (1)

❋ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर नबी करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह ! मदीना मुनव्वरा के किनारे मैंने एक औरत को गले लगाया लेकिन मैंने उस से सोहबत नहीं की । सरकार! मुजरिम हाज़िर है । मेरे संबंधित जो चाहें फ़ैसला फ़रमाएं । हज़रत उमरे फ़ारूक़ आज़म ﷺ भी वहां मौजूद थे फ़रमाने लगे: अल्लाह तआला ने तेरी पर्दा पोशी की थी, काश तु भी अपने ऊपर पर्दा डाले रहता। (यानी छुप कर) तौबा कर लेता और इस का ऐलान ना करता)। रावी कहते हैं कि सरकारे दो-आलम ﷺ ने उसे कुछ जवाब ना दिया तो वो शख़्स उठा और चल दिया (ये समझ कर कि शायद मेरे बारे में कोई आयत उतरे तब फ़ैसला किया जाये) ।हुज़ूर ﷺ ने उस के पीछे एक आदमी भेज कर उसे बुलवाया और उस पर इस आयते करीमा की तिलावत फ़रमाई:

وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَیِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّیْلِ ؕ اِنَّ الْحَسَنٰتِ یُذْهِبْنَ السَّیِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِیْنَ ۚ

(پ:۱۲، هود :۱۱، آیت:۱۱٤)

और नमाज़ क़ायम रखो दिन के दोनों किनारों और कुछ रात के हिस्सों में, बेशक नेकियां बुराईयों को मिटा देती हैं। ये नसीहत है नसीहत मानने वालों को। (कंज़ुल ईमान)

(1) मिशकात स: 58

(यानी तुझसे इत्तिफ़ाक़न जो गुनाह सरज़द हो गया है इस पर कोई सज़ा नहीं क्यों कि ये गुनाहे सगीरा (छोटा गुनाह) है और गुनाहे सगीरा नमाज़ पढ़ने से माफ़ हो जाता है।)

ये सुनकर एक सहाबी ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! क्या ये उस के लिए ख़ास है? आपने फ़रमाया: नहीं! बल्कि ये सारे लोगों के लिए है।(1)

मतलब ये है कि जो शख़्स भी पाँच वक़्त की नमाज़ें अदा करेगा अल्लाह جل شانه उस के सगीरा गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।

❃ हज़रत कअब अहबार رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैंने मूसा कलीमुल्लाह عليه السلام पर नाज़िल शूदा किसी आसमानी किताब में अल्लाह عزوجل का ये इरशाद पढ़ा है कि ऐ मूसा ! दो रकअत नमाज़ होगी जिसे मेरा प्यारा रसूल और उस के उम्मती पढ़ा करेंगे । ये नमाज़े फ़ज्र है, जो शख़्स उसे अदा करता रहेगा, मैं उस के दिन व रात के गुनाह बख़्श दूँगा और वह मेरी पनाह में रहेगा।

ऐ मूसा ! चार रकअत नमाज़ होगी जिसे मेरा प्यारा हबीब और उस के उम्मती अदा करेंगे, ये नमाज़े ज़ुहर है, मैं उन्हें इस नमाज़ की पहली रकअत के बदले में मग़फ़िरत अता करूँगा, और दूसरी रकअत के सवाब में उनके मीज़ाने अमल (अमल का तराज़ू) का नेकियों वाला पल्ला भारी कर दूँगा, और तीसरी रकअत के बदले में उन पर फ़रिश्ते मुक़र्रर कर दूँगा जो मेरी तस्बीह और उनके लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत करेंगे, और चौथी रकअत पर उनके लिए आसमानों के दरवाज़े खोल दूँगा जिनसे जन्नत की हूरें उन्हें झांकेंगी। और मैं हूराने जन्नत को उनकी ज़ौजीयत यानी निकाह में दूँगा।

ऐ मूसा! चार रकअत नमाज़ होगी जो मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ और उनकी उम्मत पढ़ेगी ये नमाज़े अस्र है इस के सवाब में आसमान व ज़मीन का कोई ऐसा फ़रिश्ता ना होगा जो उन के लिए दुआ-ए-मग़फ़िरत ना करे, और जिस शख़्स के लिए फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत

(1) मिश्कात, स:58

करें उसे कभी अज़ाब ना होगा।

ऐ मूसा! तीन रकअत नमाज़ होगी जिसे मेरा महबूब और उस के उम्मती सूरज डूबने के फ़ौरन बाद पढ़ेंगे ये नमाज़े मग़रिब है इस की अदाएगी से मैं उनके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दूँगा, और वो अपनी जिस हाजत के संबंधित भी मुझसे सवाल करेंगे मैं वो हाजत पूरी कर दूँगा।

ऐ मूसा! चार रकअत नमाज़ होगी जिसे मेरा प्यारा नबी और उस के उम्मती रात में शफ़क़[1] ग़ायब हो जाने के बाद पढ़ेंगे ये नमाज़े इशा है, ये नमाज़ उनके लिए दुनिया व माफ़ीहा (यानी दुनिया और जो कुछ इस में है) सबसे बेहतर होगी और वो अपने गुनाहों से इस तरह पाक व साफ़ हो जाऐंगे जैसे आज ही अपनी माँ के पेट से पैदा हुए हैं।[2]

नमाज़ किस तरह पढ़नी चाहिए

नमाज़ किस तरह पढ़नी चाहिए, उस के संबंधित तफ़सीरे रूहुल बयान शरीफ़ में है कि एक मर्तबा हातिम ज़ाहिद, आसिम बिन यूसुफ़ के पास तशरीफ़ ले गए तो आसिम बिन यूसुफ़ ने उनसे पूछा: आप नमाज़ किस तरह पढ़ते हैं ?

हातिम ज़ाहिद ने फ़रमाया: जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आता है तो मैं पहले अच्छी तरह वुज़ू करता हूँ, फिर मुसल्ले पर सीधा खड़ा होता हूँ और दिल मैं ये महसूस करता हूँ कि काबा मोअज़्ज़मा मेरे चेहरे के सामने है और मक़ामे इबराहीम मेरे सीने के आगे अल्लाह جل شانه मेरे पास है जो मेरे तमाम कार्यों को देख रहा है। मैं पुल सिरात पर खड़ा हूँ जन्नत मेरी दाहिनी जानिब है दोज़ख़ मेरी बाएं तरफ़ है और मौत का फरिश्ता मेरे पीछे खड़ा हैं और हर नमाज़ के संबंधित मैं यही ख़्याल करता हूँ कि ये मेरी आख़िरी नमाज़ है फिर तकबीरे तहरीमा

(1) मग़रिब के बाद आसमान में फैलने वाली लाली।
(2) फतावा रज़विय्या, ज:2, स:166,167.

कहता हूँ फिर क़ुरआन पाक की तिलावत करता हूँ, इस तरह कि इस के एक एक लफ़्ज़ के माना पर ग़ौर करता हूँ आजिज़ी के साथ रुकूअ करता हूँ और गिरया व ज़ारी के साथ सजदा फिर इतमीनान से क़ायदा करता हूँ और क़बूलियत की उम्मीद पर अत्तहिय्यात पढ़ता हूँ और सुन्नत के तरीक़े पर सलाम फेरता हूँ फिर जब नमाज़ से फ़ारिग़ होता हूँ तो उस के मक़बुल होने की उम्मीद और मरदूद होने के ख़ौफ़ में मशग़ूल हो जाता हूँ।

आसिम बिन यूसुफ़ ने हैरत से पूछा: आप इस तरह नमाज़ पढ़ते हैं? हातिम ज़ाहिद ने फ़रमाया: हाँ, तीस साल से इसी तरह मैं नमाज़ पढ़ रहा हूँ। (तफ़सीरे रूहुल बयान, स:33-34, ज:1)

हज़रत इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ मुकाशफ़तुल-क़ुलूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा علیہ السلام को वह्ी की: ऐ मूसा ! जब तू परेशानी की हालत में मुझे याद करता है तो मैं तुझे याद करता हूँ कामिल इतमीनान और विनम्रता से मेरा ज़िक्र किया कर, अपनी ज़बान को दिल का फरमाँ बरदार बना, मेरी बारगाह में फ़रमाँ बरदार बंदे की तरह हाज़िरी दे, ख़ौफ़-ज़दा दिल से मुझे पुकार और सच्चाई की ज़बान से मुझे बुलाता रह।(मुकाशफ़तुल-क़ुलूब मुतर्जम, स:154)

एक सबक़ आमोज़ हदीस

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा सरकारे दो-आलम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم मस्जिद में एक किनारे तशरीफ़ फ़रमा थे। एक साहब मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ी, फिर ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने फ़रमाया: وعلیك السلام जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो, क्यों कि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी (तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई) । वो वापस लौटे और पहले की तरह नमाज़ अदा की। फिर बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ किया। आपने फ़रमाया : وعلیك السلام जाओ नमाज़ पढ़ो क्यों कि तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई। तीसरी या चौथी बार उन्होंने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! (मैं इस से अच्छी नमाज़ नहीं पढ़

सकता) आप मुझे नमाज़ का सही तरीक़ा बताएं।

सरकारे दो-आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जब तुम नमाज़ का इरादा करो तो अच्छी तरह से वुज़ू करो,फिर काबा की तरफ़ मुँह कर के اَللّٰہُ اکبر कहो, फिर कुर्आने पाक की तिलावत करो जितना तुमसे आसानी के साथ हो सके, फिर रुकूअ करो, इस तरह कि तुम्हें रुकूअ में इतमीनान हो जाए, फिर उठो यहां तक कि सीधे खड़े हो जाओ, फिर कामिल इतमीनान के साथ सजदा करो, फिर सजदा से उठो, यहां तक कि बैठने में इतमीनान हो जाये, फिर दूसरा सजदा करो इस तरह कि सजदा मैं इतमीनान हो जाये, फिर उठो और सीधे खड़े हो जाओ। (ये एक रकअत मुकम्मल हो गई) इसी तरह पूरी नमाज़ अदा करो। (बुख़ारी, ज:1, स:105/ मुस्लिम, ज:1, स:170)

इस हदीसे पाक में उन नमाज़ियों के लिए दरसे इबरत है जो तादीले अरकान (सारे अरकान को सुकून के साथ अदा करना) का ख़्याल नहीं रखते हैं और रुकूअ से सीधे खड़े हुए बग़ैर सजदा में चले जाते हैं, या एक सजदा करने के बाद अच्छी तरह बैठे बग़ैर दूसरा सजदा कर लेते हैं। उन्हें ये बात अच्छी तरह ज़हन नशीन कर लेनी चाहिए कि इस तरह नमाज़ पढ़ने से नमाज़ दुरुस्त नहीं होती, बल्कि उस का दोहराना उनके ज़िम्मा वाजिब होता है, जैसा कि ऊपर वाली हदीसे पाक से ज़ाहिर है । मुफ़तियाने किराम फ़रमाते हैं: ताअदीले अरकान यानी रुकूअ, सुजूद, क़ौमा[1] व जलसा[2] में कम अज़ कम एक-बार सुब्हान-अल्लाह कहने की मिक़दार ठहरना वाजिब है। (बहारे शरीयत, स:63, ह:3)

बारगाहे ख़ुदावंदी का अदब

हज़रत मौलाना मुहम्मद बिन शेख़ मुहम्मद रिबहामी तबीबुल-क़ुलूब के हवाला से तहरीर फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा ख़्वाजा अली दक़्क़ाक़ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ से पूछा गया कि आप इस शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं

(1) रुकूअ से सीधा खड़ा होना |
(2) दोनों सजदों के दरमियान बैठना

जो नमाज़ की हालत में अपने जिस्म से मक्खियों को भगाता रहता है?

ख़्वाजा अली दक़्क़ाक़ رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया: ख़ुदा-ए-वहदहू ला-शरीक की बारगाह में इस से कम मोअद्दब नहीं होना चाहिए जितना कि अयाज़ ग़ुलाम सुलतान महमूद के सामने रहा करता था।

फिर आपने अयाज़ के तौर तरीक़े और बारगाहे सुलतानी में उस की हाज़िरी के आदाब पर रोशनी डालते हुए इरशाद फ़रमाया:

एक दिन का वाक़िया है कि अयाज़ दस्तूर के मुवाफ़िक़ बादशाह की ख़िदमत में खड़ा था, अचानक उसने अपने मोज़ा को हरकत दी, बादशाह को इस हरकत से बहुत तअज्जुब हुआ क्यों कि ये पहला इत्तिफ़ाक़ था कि उस से इस क़िस्म की बे-अदबी सरज़द हुई थी, बादशाह फ़िरासत से समझ गया कि ज़रूर इस में कोई राज़ है या ये माज़ूर है सुलतान ने फ़ौरन उसे किसी काम से बाहर भेजा और एक दूसरे शख़्स को हुक्म दिया कि वो अयाज़ के पीछे जाये और छुप कर उस के अहवाल मालूम करे सुलतान के दूसरे ख़ादिम ने एक कोने में छिप कर देखा कि अयाज़ ने बाहर जा कर मोज़ा निकाला तो उस में से एक बिच्छू गिरा। अयाज़ उसे मोज़ा की नोक से कुचलने लगा और कहने लगा कि अब तक मुझसे कोई बे-अदबी नहीं हुई थी लेकिन आज तूने बादशाह के सामने मेरी इज़्ज़त बर्बाद कर दी और उनकी निगाहों में मुझे गुस्ताख व बे-अदब बना दिया।

इस शख़्स ने ये सारा वाक़िया बादशाह के सामने बयान कर दिया। जब अयाज़ बाहर से वापस आया तो सुलतान ने उस से कहा: अयाज़ ! आज तुमने बे-अदबी क्यों की और मेरे सामने पांव क्यों हिलाया?

अयाज़ ने आजिज़ी करना शुरु किया और कहा : हुज़ूर ! ग़ुलामों का ग़लती करना और आक़ाओं का माफ़ करना पुराना दस्तूर है। ए मेरे आक़ा ! इसलिए आप भी मुझे माफ़ कर दें।

सुलतान ने कहा: अयाज़! बिच्छू का वाक़िया मुझे मालूम हो चुका है। अयाज़ ने कहा: (नाचीज़ पर सुलतान की नवाज़िश हमेशा रहे) जब आक़ा

को वाक़िया मालूम हो गया है । तो ये भी जान लें कि बिच्छू ने सात मर्तबा मेरे पांव में डंक मारा, मैंने बर्दाश्त किया, लेकिन जब उसने आठवीं मर्तबा डंक मारा तो मैं बर्दाश्त ना कर सका और तकलीफ़ की शिद्दत से पांव ज़मीन से ऊपर उठा लिया। (रियाज़ुन नासिहीन फ़ारसी : स:93)

हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब رحمۃ اللہ علیہ से किसी ने पूछा, क्या नमाज़ में मक्खी आपको तकलीफ़ नहीं पहुंचाती है कि आप उसे हटाऐं?

आपने फ़रमाया: मैं अपने नफ़्स को ऐसी चीज़ का आदी नहीं बनाता जो मेरी नमाज़ ख़राब कर दे।

पूछने वाले ने फिर पूछा: आपको मक्खियों के काटने पर सब्र कैसे होता है?

आपने फ़रमाया: मैंने सुना है कि फ़ासिक़ शाही कोड़ों पर सब्र करते हैं ताकि लोग कहें कि फ़ुलां बड़ा साबिर है, बल्कि वो इस पर फ़ख़्र भी करते हैं। और मैं तो अपने परवरदिगार की बारगाह में खड़ा हूँ, तो क्या एक मामूली सी मक्खी की वजह से हरकत करूँ। (अल इहया, स:157, ज:1)

अल्लाहु-अकबर ! बारगाहे सुलतानी मैं अयाज़ का ये अदब व एहतिराम हमारे लिए मार्ग दर्शक और ख़लफ़ बिन अय्यूब رحمۃ اللہ علیہ का फ़रमान हमारे लिए नमून-ए- अमल है। अल्लाह جل شانه अपने हबीब عليه التحية والثنا के सदक़ा व तुफ़ैल हमारे अंदर भी यही जज़्बा-ए-हुज़ूरी पैदा फ़रमाए।आमीन।

हालते नमाज़ में शयातीन का हमला

इमाम समरक़ंदी رحمۃ اللہ علیہ से मनक़ूल है कि जब नमाज़ फ़र्ज़ हुई तो इबलीस दहाड़ें मार मार कर रोने लगा, जिसे सुनकर सारे शयातीन उस के पास जमा हो गए और रोने का सबब दरयाफ़त किया।

इबलीस ने कहा: अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर नमाज़ फ़र्ज़ कर दी है । शयातीन ने कहा: नमाज़ फ़र्ज़ हो गई तो क्या हुआ, उस की वजह से कौन सी क़यामत क़ायम हो गई जो तुमने इस क़दर चिल्ला

चिल्ला कर आसमान सर पर उठा रखा है?

इबलीस ने कहा : मेरे बुध्धू चेलो! तुम नहीं समझते, समझदार मुसलमान नमाज़ पढ़ेंगे और इस की बरकत से गुनाहों से बच जाऐंगे और हमारे हाथ से निकल जाऐंगे।

शैतानों ने चिंतित हो कर पूछा: तो अब तुम ही बताओ हम लोग क्या करें ? इबलीस ने कहा: उन्हें नमाज़ों से ग़ाफ़िल करो, उनके दिल में नमाज़ पढ़ने का ख़्याल ही ना आने पाए। शैतानों ने फिर पूछा: अगर ये ना हो सके तो हम क्या करें ? इस पर इबलीस ने कहा: अगर ये ना हो सके तो जब कोई मुसलमान नमाज़ पढ़ना शुरु करे तो उसे चारों तरफ़ से घेर लो। एक उस के दाएं खड़ा हो कर उस से कहे: दाहिनी तरफ़ देखो, दूसरा उस के बाएं खड़ा हो कर कहे: बाएं तरफ़ देखो, तीसरा उस के ऊपर हो जाये और उस से कहे: ऊपर देखो और चौथा उस से कहे: जल्दी पढ़ो (उस के बाद ये काम करना है, वो काम करना है)। इस तरह उस को उलझा डालो ताकि उस की नमाज़ बेहतर तरीक़े पर अदा ना हो सके।

फिर इबलीस ने ये भी कहा: ऐ मेरे चेलो! अगर तुम इस में कामयाब ना हो सके और नमाज़ी ने खुशूअ व ख़ुज़ूअ के साथ (खुब दिल लगा कर) अपनी नमाज़ पूरी कर ली तो इस की ये नमाज़ उस के हक़ में चार-सौ नमाज़ों के बराबर लिखी जाएगी।(नुज़हतुल मजालिस, स:135, ज:1)

इस वाक़िया से मालूम होता है कि इबलीस और उस के चेले हमेशा इस कोशिश में रहते हैं कि मुसलमानों को दुनिया के मुआमलात में इस तरह उलझा दें कि उनको नमाज़ का ख़्याल ही ना रह जाये, और अगर कुछ लोग इस से बच कर किसी तरह मस्जिद में आ जाएं तो उनके दिलों में ऐसे ऐसे औहाम व ख़्यालात पैदा कर दें जिससे उनका दिल नमाज़ में हाज़िर ही ना रहे और जैसी तैसी पढ़ कर मस्जिद से निकल जाएं ताकि उनकी ये नमाज़ उनके मुँह पर मार दी जाये।

दो नमाज़ों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़

हुज़ूर सरवरे कायनात फ़ख़रे मौजूदात ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नमाज़ें सही वक़्त पर अदा करता है और उनके लिए अच्छी तरह वुज़ू करता है (यानी फ़राइज़ के इलावा सुनन व मुस्तहब्बात की भी रियायत रखता है) फिर पूरे अदब व वक़ार से खड़ा होता है और उस के खुशूअ, रुकूअ और सुजूद को बख़ूबी पूरा करता है तो वो नमाज़ निहायत रोशन व चमकदार बन कर जाती है और नमाज़ी के लिए दुआ करती है: अल्लाह جل شانه तेरी भी ऐसी ही हिफ़ाज़त फ़रमाए जैसी तूने मेरी हिफ़ाज़त की है और जो शख़्स समय पर नमाज़ नहीं पढ़ता है, वुज़ू भी अच्छी तरह नहीं करता और खुशूअ, रुकूअ व सुजूद में कमी करता है तो वो नमाज़ बुरी सूरत, सियाह रंग में ऊपर जाती है और नमाज़ी को बद्दुआ देती हुई कहती है: अल्लाह तआला तुझे भी इसी तरह बर्बाद करे जिस तरह तूने मुझे बर्बाद किया है। फिर जब वो नमाज़ उस जगह पहुंच जाती है जहां अल्लाह तआला चाहता है तो पुराने कपड़े की तरह लपेट कर नमाज़ी के मुँह पर मार दी जाती है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, स:257, ज:1)

प्यारे इस्लामी भाईयो! जब हमें मालूम हो गया कि इबलीस हमारा ऐसा ख़तरनाक दुश्मन है जो हमें नमाज़ जैसी अहम इबादत से रोकने की अनथक कोशिशें करता है और जो उस के जाल में फंस जाता है वो अज़ाबे क़ह्हार व जब्बार का मुस्तहिक़ व सज़ावार होता है तो क्यों ना हम भी मर्दानावार उस से मुक़ाबला करने के लिए तैयार हो जाएं और सत्तार व ग़फ़्फ़ार के सच्चे फ़रमां बरदार और उस के माफी व करम के हक़दार बन जाएं। जब भी हमारे दिलों में नमाज़ छोड़ने का ख़्याल आए तो फ़ौरन शैतान पर लानत भेजें और नमाज़ के लिए तैयार हो जाएं और जब कभी नमाज़ में इधर उधर का ख़्याल आए तो ख़ुदा व रसूल की याद से उसे ख़त्म करने की कोशिश करें। अल्लाह جل شانه हमें शयातीन के हमलों से महफ़ूज़ रखे। आमीन।

शैतान की तरफ़ तवज्जोह ना करने का इनाम

हज़रते ईसा रूहुल्लाह عليه السلام के ज़माने में एक परहेज़गार, पाबंदे नमाज़ औरत थी, एक मर्तबा उसने तन्नूर में रोटियाँ लगायीं, अभी रोटियाँ तन्नूर ही में थीं कि नमाज़ का वक़्त हो गया, उस नेक औरत ने नमाज़ पढ़ना शुरु कर दिया।

शैताने लईन नमाज़ की ये पाबंदी देखकर जल भुन उठा, और उसे नमाज़ से हटाने की ये तरकीब की कि एक औरत बन कर उस के पास आया और कहा : बी-बी ! तन्नूर में तेरी रोटियाँ जल रही हैं उस नेक औरत ने कुछ तवज्जोह ना दी और बराबर नमाज़ पढ़ती रही।

शैतान ने जब देखा कि औरत पर उस के फ़रेब का कुछ भी असर नहीं हुआ तो उस के बच्चे को जो वहीं क़रीब में खेल रहा था उठा कर गर्म गर्म तन्नूर में डाल दिया, फिर भी अल्लाह की वो नेक बन्दी नमाज़ पढ़ती रही। इतने में इस का शौहर आ गया। उसने देखा कि बच्चा तन्नूर में बैठा अंगारों से खेल रहा है, जिन्हें अल्लाह جل شانه ने इस के लिए अक़ीक़े अहमर (सुर्ख़-रंग का क़ीमती पत्थर)बना दिया है।

ये शख़्स हज़रते ईसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूरा वाक़िया बयान किया। आपने फ़रमाया: उस नेक ख़ातून को मेरे पास लाओ जब वो हाज़िर हुई तो आपने उस से पूछा: बी-बी! तू कौन सा नेक अमल करती है जिसकी वजह से ये वाक़िया ज़ाहिर हुआ?

इस नेक ख़ातून ने अर्ज़ किया! ए रूहुल्लाह! मेरा अमल ये है कि जब मैं बे-वज़ू होती हूँ तो फ़ौरन वुज़ू कर लेती हूँ और जब वुज़ू करती हूँ तो नमाज़ भी पढ़ती हूँ और जब मुझसे कोई रज़ा-ए-इलाही के लिए सवाल करता है तो मैं उसे ज़रूर पूरा करती हूँ। (यानी जिसकी मेरे अंदर ताक़त होती है) और लोगों की तरफ़ से जो तकलीफ़ पहुँचती है इस पर सब्र करती हूं। (नुज़हतुल मजालिस, स:124, ज:1)

इस से उन औरतों को सबक़ हासिल करना चाहिए, जो घर के

काम काज, बच्चों की परवरिश और खाने पकाने में उलझ कर रह जाती हैं और नमाज़ जैसी अहम इबादत का बिल्कुल ख़्याल नहीं रखतीं जब कि क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ ही का हिसाब लिया जाएगा, जो इस में कामयाब होगा उस के लिए नजात होगी और जो इस में नाकाम होगा वो जहन्नम के अज़ाब में गिरिफ़्तार होगा।

मेरे प्यारे इस्लामी भाइयो! नमाज़ शुरू करने से पहले अच्छी तरह वुज़ू कर लिया जाये यानी ऐसा वुज़ू जिसमें फ़राइज़ के इलावा सुनन व मुस्तहब्बात का भी ख़्याल रखा जाये क्यों कि ये अल्लाह جل شانه का हुक्म है और इस के बेशुमार फ़ायदे भी हैं। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ (پ:٦، المائدة:٥، آیت:٦)

ऐ ईमान वालो! जब नमाज़ को खड़े होना चाहो तो अपने मुँह धोओ और कोहनियों तक हाथ और सरों का मसह करो और गट्टों तक पांव धोओ। (कंज़ुल ईमान)

जन्नत में ले जाने वाला अमल

❋ हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मर्वी है कि रसूले गिरामी वक़ार صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया: क्या तुम्हें ऐसी चीज़ ना बताऊं जिसके सबब अल्लाह तआला ख़ताएँ मिटा दे और दरजात बुलंद करे? सहाबा ने अर्ज़ किया : क्यों नहीं, या रसूलल्लाह (आप ज़रुर बताएं)। आपने इरशाद फ़रमाया : जिस वक़्त वुज़ू करना ना-गवार हो उस वक़्त अच्छी तरह वुज़ू करना और मस्जिदों की तरफ़ क़दमों की कसरत और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतिज़ार। उस का सवाब ऐसा है जैसा कि कुफ़्फ़ार की सरहद पर इस्लामी मुल्क की मदद के लिए घोड़ा बाँधने का है। (मुस्लिम शरीफ़, स:127, ज:1)

❋ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मर्वी है कि

रसूले पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: तुम में से जो कोई वुज़ू करे और कामिल वुज़ू करे फिर पढ़े:

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ•

उस के लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दीये जाते हैं जिस दरवाज़ा से चाहे जन्नत में दाख़िल हो। (मुस्लिम शरीफ़ स:122, ज:1)

✱ हज़रत अबदुल्लाह बिन सुनाबिही رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मर्वी है कि रसूल अल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जब मुसलमान बंदा वुज़ू करता है तो कुल्ली करने से मुँह के गुनाह गिर जाते हैं और जब नाक में पानी डाल कर नाक साफ़ करता है तो नाक के गुनाह निकल जाते हैं और जब चेहरा धोता है तो उस के चेहरे के गुनाह धुल जाते हैं यहां तक कि पलकों के नीचे से निकल जाते हैं और जब हाथ धोता है तो हाथों के गुनाह गिर जाते हैं यहां तक कि हाथ के नाख़ुनों से गिर जाते हैं और जब वो सर का मसह करता है तो सर के गुनाह निकल जाते हैं यहां तक कि इस के कान से निकल जाते हैं और जब पांव धोता है तो पांव के गुनाह गिर जाते हैं यहां तक कि पांव के नाख़ुनों से गिर जाते हैं। फिर उस का मस्जिद जाना और नमाज़ पढ़ना उस से ज़्यादह है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब, स:153, ज:1)

इमामे आज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ की बसीरत

हदीस शरीफ़ में जगह जगह आया है कि वुज़ू करने से गुनाह झड़ते हैं और जो अंग बंदा वुज़ू करने में धोता है उस के सारे गुनाह गिर जाते हैं। हमें अगरचे गुनाहों का झड़ना और बदन से गिरना नज़र नहीं आता है लेकिन जो अल्लाह جل شانہ के मुक़र्रब बंदे हैं वो अपनी सफ़ा-ए-क़लब की वजह से उन गिरते हुए गुनाहों को अच्छी तरह देखते हैं और उनकी हक़ीक़त व नौइय्यत भी पहचानते हैं। चुनाँचे शारेहे बुख़ारी हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी رحمۃ اللہ علیہ मीज़ानुश शरीअतिल कुबरा के हवाला से इमामे आज़म अबू हनीफा رضی اللہ تعالیٰ عنہ का एक वाक़िया इस तरह तहरीर फ़रमाते हैं:

इमामे आज़म अबू हनीफा ﷺ एक-बार कूफ़ा की जामा मस्जिद में तशरीफ़ ले गए, एक नौजवान को हौज़ में वज़ू करते देखा, धोवन जब गिरा तो आपने उस से फ़रमाया : बेटे! माँ बाप को ईज़ा देने से तौबा कर। उसने फ़ौरन तौबा की। दूसरे का धोवन देखा तो उस से फ़रमाया: ए भाई ज़िना से तौबा कर एक और को देखा तो उस से फ़रमाया: शराब पीने और मज़ामीर (गाने बजाने) से तौबा कर। इन दोनों ने भी तौबा की। (नुज़हतुल क़ारी स:60, ज:2)

एक राहिब के इस्लाम लाने का वाक़िआ

एक मर्तबा हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ ﷺ सफ़र करते हुए एक राहिब (ईसाइयों का पादरी) के चर्च के पास पहुंचे। आपके दिल में ख़्याल आया कि पादरी के पास चलूं और उसे नसीहत करूँ शायद वो इस्लाम क़बूल कर ले। ये सोच कर आप चर्च के दरवाज़ा पर आए तो देखा कि दरवाज़ा बंद है। आपने दस्तक दी। पादरी ने अंदर से जवाब दिया और कुछ देर के बाद दरवाज़ा खोला। आप चर्च के अंदर तशरीफ़ ले गए और पादरी से पूछा: भाई! जिस वक़्त तुमने जवाब दिया उसी वक़्त दरवाज़ा क्यों नहीं खोला, इतनी ताख़ीर करने की वजह क्या है?

राहिब ने कहा : बात ये है कि जब मैंने आपकी आवाज़ सुनी तो मेरे दिल में कुछ ख़ौफ़ सा महसूस हुआ और मैं डर गया, इसलिए मैंने पहले वुज़ू किया फिर दरवाज़ा खोला, क्यों कि मैंने तौरेत शरीफ़ में पढ़ा है कि जिस शख़्स को किसी आदमी या किसी चीज़ से ख़ौफ़ मालूम हो उसे चाहिए कि फ़ौरन वुज़ू कर ले ताकि उस आदमी या उस चीज़ के शर से महफ़ूज़ हो जाए और उसे कोई तकलीफ़ ना पहुंचे।

इस बात चीत के बाद इमाम जाफ़र सादिक़ ﷺ ने इस पादरी के सामने इस्लाम के फ़ज़ाइल व कमालात बयान किए। और उसे इस्लाम क़बूल करने की दावत दी। वुज़ू की बरकत से पादरी के दिल का दरवाज़ा खुल गया और उसने इस्लाम क़बूल कर लिया।

मालूम हुआ कि वुज़ू एक ऐसी नेअमत है जिससे गुनाह झड़ते हैं और डर व भय भी दूर होता है, बल्कि अगर हालते वुज़ू में आदमी का इंतिक़ाल हो जाए तो उस के लिए शहादत लिख दी जाती है। हुज़ूर ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं:

يَا اَنَسُ! اِذَا سْتَطَعْتَ اَنْ تَكُوْنَ اَبَدًا عَلَى الْوُضُوْءِ فَافْعَلْ فَاِنَّ مَلَكَ الْمَوْتِ اِذَا قَبَضَ رُوْحَ عَبْدٍ وَهُوَ عَلٰى وُضُوْءٍ كُتِبَتْ لَهٗ شَهَادَةٌ (نزهة المجالس ص :۱۲۰، ج:۱)

ऐ अनस! अगर तुमसे हो सके कि तुम हमेशा बावुज़ू रहो तो ऐसा ही करो क्यों कि मलकुल-मौत (यमराज) जब किसी बंदे की रूह निकालते हैं और वो बावुज़ू होता है तो उस के लिए शहादत लिख दी जाती है।

ख़ूबियां हैं क्या-क्या नमाज़ में

हज़रत अली كرم الله تعالى وجهه الكريم से मर्वी है कि सरकारे दो-आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: नमाज़ रब की रज़ा, फ़रिश्तों की मुहब्बत, अम्बिया-ए-किराम की सुन्नत, मारिफत का नूर, ईमान की जान, दुआ की इजाबत[1], आमाल की क़बूलीयत, रिज़्क़ में बरकत, और दुश्मनों के मुक़ाबले में हथियार है।

नीज़ नमाज़ शैतान को नापसंद, नमाज़ी और मलकुल-मौत के बीच शफ़ी, दिल का नुर, जिगर का सुकून, मुनकर नकीर के सवालों का जवाब और क़यामत तक क़ब्र में मूनिस व ग़मगुसार है, और जब क़यामत क़ायम होगी तो नमाज़, नमाज़ी के सर पर साया-फ़िगन हो कर उस के सर का ताज और बदन का लिबास साबित होगी और अनवार व तजल्लियात से सज कर उस के आगे आगे चलेगी।

इसके अलावा यह कि नमाज़ी और जहन्नम के बीच आड़, सारी कायनात के परवरदिगार की बारगाह में ईमान वालों के लिए दलील,

(1) क़बूलियत

मीज़ाने अमल में भारी, पुल सिरात पर तेज़ रफ़्तार सवारी और जन्नत की कुंजी होगी । क्यों कि नमाज़ अल्लाह جل شانه की तारीफ़ व तौसीफ़, उस की अज़मत व पाकीज़गी के बयान, उस के नाम की तस्बीह, क़ुरआने मजीद की तिलावत और दुआ पर मुश्तमिल है, इसी लिए तो तमाम आमाल में सबसे अफ़ज़ल अमल नमाज़ों का सही वक़्त पर अदा करना ही है। (नुज़हतुल मजालिस स:121, ज:1)

एक शायर ने इस हक़ीक़त का इज़हार इस अंदाज़ में किया है

तन की सफ़ाई, हक़ की रिज़ा,दिल की रोशनी
ऐ बंदे! खूबियां हैं क्या-क्या नमाज़ में

ये क़ब्र में अनीस और महशर में है शफ़ी
उक़्बा का चैन, ख़ुल्द का वादा नमाज़ में

बेदिल नमाज़ क्यों ना हो मेराजे मोमिनीन
पाता उरूज (बलंदी) व क़ुर्ब है बंदा नमाज़ में

क़यामत के दिन रोशन चेहरे

हुज़ूर नबी करीम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं: जब क़यामत क़ायम होगी तो अल्लाह جل شانه कुछ लोगों को इस तरह उठाएगा कि उनके चेहरे रोशन सितारों की तरह चमकते होंगे। फ़रिश्ते उनसे पूछेंगे : तुम्हारे आमाल क्या थे? (यानी तुम दुनिया में कौन सा नेक अमल करते थे)। वो लोग जवाब देंगे: जब हम अज़ान सुनते थे तो फ़ौरन तहारत (पाकी) व वुज़ू के लिए खड़े हो जाया करते थे और इस के इलावा किसी दूसरे काम की तरफ़ तवज्जोह नहीं देते थे ।

एक क़ौम को इस तरह उठाएगा कि उनके चेहरे चौदहवीं के चांद की तरह चमक रहे होंगे। फ़रिश्ते उनसे पूछेंगे : तुम्हारे आमाल क्या थे? वो कहेंगे : हम अज़ान होने से पहले वुज़ू किया करते थे ।

और कुछ लोगों को इस तरह उठाएगा कि उनके चेहरे आफ़ताब

की तरह रोशन व चमकदार होंगे। वो फ़रिश्तों के सवाल के जवाब में कहेंगे: हम अज़ान मस्जिद में ही सुना करते थे। (यानी अज़ान होने से पहले हम वुज़ू कर के मस्जिद में पहुंच जाया करते थे, फिर अज़ान होती थी और हम नमाज़ पढ़ते थे।) (दुर्रतुन नासेहीन, अरबी स:30)

नमाज़ी के लिए नौ सआदतें

तीसरे ख़लीफ़ा सय्यदना उसमान बिन अफ्फान ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: जो शख़्स नमाज़े पंजगाना उनके सही समय पर हमेशा पाबंदी से (जैसी कि शरअन मतलूब है) पढ़ता है। अल्लाह तबारक व तआला उसे नौ क़ीस्म की सआदतें अता फ़रमाता है।

(1) अल्लाह جل شانه उसे अपने प्यारों में शामिल कर लेता है।
(2) उस का जिस्म तंदुरुस्त रहता है और उस की आत्मा में पाकीज़गी पैदा होती है।
(3) फ़रिश्ते उस की हिफाज़त करते हैं और उसे सख़्त गज़ंद व तकलीफ से बचाते हैं।
(4) उस के घर में बरकतों का नुज़ूल होता है।
(5) उस के चेहरे पर नेकोकारों की निशानियाँ और रोशनियाँ झलकती हैं।
(6) अल्लाह तआला उस के दिल में रिक़्क़त और गहरी मुहब्बत पैदा फ़रमा देता है।
(7) वो पुल सिरात से पलक झपकते ऐसे गुज़र जाएगा जैसे कि बिजली की चमक।
(8) अल्लाह तआला उसे जहन्नम से आज़ाद कर देगा।
(9) रब्बे करीम अपने फ़ज़ल व करम से उसे अपने उन बंदगाने ख़ास का पड़ोस अता फ़रमाएगा जिन्हें ना कोई ग़म है ना हुज़न व मलाल। (तंबीहुल ग़ाफिलीन उर्दू, स:306)

क़ैदख़ाना का नमाज़ी और अमीरे खुरासान

बयान किया जाता है कि अब्दुल्लाह ताहिर के दौर में जब कि वह खुरासान के गवर्नर थे और नीशापूर उस की राजधानी थी । एक लोहार शहरे हिरात से नीशापूर गया और चंद दिन वहां कारोबार किया, फिर अपने बाल बच्चों से मुलाक़ात के लिए वतन (हिरात) लौटने का इरादा किया और रात के पिछले-पहर सफ़र करना शुरू कर दिया । इन ही दिनों अबदुल्लाह ताहिर ने सिपाहीयों को हुक्म दे रखा था कि वो तमाम रास्ते चोरों से महफ़ूज़ व मामून बना दें ताकि किसी मुसाफ़िर को कोई ख़तरा ना हो इत्तिफ़ाक़ ऐसा कि सिपाहीयों ने उसी रात चंद चोरों को गिरफ़्तार किया और अमीरे खुरासान (अब्दुल्लाह ताहिर) को इस की जानकारी भी पहुंचा दी लेकिन अचानक उनमें से एक चोर भाग खड़ा हुआ, अब ये घबराए कि अगर अमीर को मालूम हो गया कि एक चोर भाग गया है तो वो हमें सज़ा देगा । इतने में उन्हें सफ़र करता हुआ यह लोहार नज़र आ गया । उन्होंने उसे फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिया और बाक़ी चोरों के साथ उसे भी अमीर के सामने पेश कर दिया। अमीरे खुरासान ने समझा कि ये सब चोरी करते हुए पकड़े गए हैं । इसलिए मज़ीद किसी तफ़तीश व तहक़ीक़ के बग़ैर सबको क़ैदख़ाना में बंद करने का आदेश दिया।

नेक सीरत लोहार समझ गया कि अब मेरा मुआमला सिर्फ ख़ुदा-ए-वहदहू ला-शरीक की बारगाह से ही हल हो सकता है और मेरा मक़सद इसी के करम से हासिल हो सकता है । उसने वुज़ू किया और क़ैदख़ाना के एक कोने में नमाज़ पढ़ना शुरु कर दिया। हर दो रकअत के बाद सर सजदा में रख कर ख़ुदा-ए-तआला की बारगाह में दर्द में डूबी हुई दुआएं माँगना शुरू कर देता और कहता : ऐ मेरे परवरदिगार! तू अच्छी तरह जानता है कि मैं इस गुनाह से बरी हूँ और इस मुआमला में बे-क़सूर हूँ । जब रात हुई तो अब्दुल्लाह ताहिर ने सपना देखा कि चार

बहादुर व ताक़तवर लोग आए और सख़्ती से उस के तख़्त के चारो पायों को पकड़ कर उठाया और उलटने लगे, इतने में इस की नींद टूट गई, उसने फ़ौरन لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ पढ़ा, फिर वुज़ू किया और उस अहकमुल-हाकिमीन की बारगाह में दो रकअत नमाज़ अदा की जिसकी तरफ़ तमाम बादशाह व फ़कीर अपनी अपनी परेशानीयों के वक़्त रुजू करते हैं उस के बाद दुबारा सोया तो फिर वही सपना नज़र आया, इस तरह चार मर्तबा हुआ । हर बार वो यही देखता था कि वो चारों नौजवान उस के तख़्त के पायों को पकड़ कर उठाते हैं और उलटना चाहते हैं।

अमीरे खुरासान अब्दुल्लाह ताहिर इस वाक़िया से घबरा गए और उन्हें यक़ीन हो गया कि ज़रूर इस में किसी मज़लूम की आह का असर है जैसा कि किसी साहबे इल्म व दानिश ने कहा है:

نکند صد ہزار تیر و تبر　　آنچہ یک پیرہ زن کند بہ سحر
ای بسا نیزۂ عدو شکناں　　ریزہ گشت از دعاے پیر زناں (مثنوی)

यानी लाखों तीर और भाले वो काम नहीं कर सकते, जो काम एक बुढ़िया सुबह के वक़्त कर देती है। बारहां ऐसा हुआ है कि दुश्मनों से मर्दानावार मुक़ाबला करने और उन्हें शिकस्त देने वाले, बूढ़ी औरतों की बद्दुआ से तबाह व बर्बाद हो गए हैं।

अमीरे खुरासान ने रात ही में जेलर को बुलाया और उस से पूछा कि बताओ! तुम्हारे इल्म में कोई मज़लूम शख़्स जेल में बंद तो नहीं कर दिया गया है?

जेलर ने अर्ज़ किया : हुज़ूर! मैं तो ये नहीं जानता कि मज़लूम कौन है, लेकिन इतनी बात ज़रूर है कि में एक शख़्स को देख रहा हूँ जो जेल में नमाज़ पढ़ता है और रिक़्क़त अंगेज़ व दिल-सोज़ दुआएं करता है।

अमीर ने हुक्म दिया: उसे फ़ौरन हाज़िर किया जाये । जब वह शख़्स अमीर के सामने हाज़िर हुआ तो अमीर ने उस के मुआमला की

तहक़ीक़ की, मालूम हुआ कि वह बे-क़सूर है।

अमीर ने उस शख़्स से माफ़ी मांगी और कहा: आप मेरे साथ तीन काम कीजीए, पहला काम ये है कि आप मुझे माफ़ कर दें दूसरा काम ये है कि मेरी तरफ़ से एक हज़ार हलाल दिरहम क़बूल फ़रमाएं तीसरा काम ये है कि जब भी आपको किसी तरह की परेशानी सामने आये तो मेरे पास तशरीफ़ लाएं ताकि में आपकी मदद कर सकूं।

नेक सीरत लोहार ने कहा : आपने जो ये फ़रमाया कि मैं आपको माफ़ कर दूं, तो मैंने माफ़ कर दिया और आपने जो ये फ़रमाया कि एक हज़ार दिरहम क़बूल कर लूं, तो वो मैंने क़बूल किया लेकिन आपने जो ये फ़रमाया कि जब कोई मुसीबत मेरे सामने आये तो मैं आपके पास आऊँ, ये मुझसे नहीं हो सकता।

अमीर ने पूछा: ये क्यों नहीं हो सकता ? तो इस शख़्स ने जवाब दिया : इसलिए कि वह परवरदिगार जो मुझ जैसे फ़क़ीर के लिए आप जैसे बादशाह का तख़्त एक रात में चार मर्तबा औंधा करता है उस को छोड़ देना और अपनी ज़रूरत किसी दूसरे के पास ले जाना उसूले बंदगी के ख़िलाफ़ है मेरा वो कौन सा काम है जो नमाज़ पढ़ने से पूरा नहीं हो जाता है कि मैं उसे ग़ैर के पास ले जाऊं। यानी जब मेरा सारा काम नमाज़ की बरकत से पूरा हो जाता है तो मुझे दूसरे के पास जाने की क्या ज़रूरत है। (रियाज़ुन नासिहीन स:104,105)

नमाज़ी औरत और ज़ालिम शौहर

बनी इसराईल में एक नेक, नमाज़ी औरत थी जो हमेशा सही वक़्त पर नमाज़ अदा करती थी, लेकिन उस का शौहर बड़ा ज़ालिम व जाबिर शख़्स था जो उसे नमाज़ पढ़ने से रोकता था। वो औरत मार पीट के बावजूद नमाज़ नहीं छोड़ती थी। शौहर ने इस से ऊब कर एक तरकीब सोची ताकि बीवी को नमाज़ पढ़ने से रोक सके। उसने कुछ माल बीवी को देकर कहा कि इस को घर में महफ़ूज़ जगह पर रख दो,

जब माँगूँ तब देना । कुछ दिनों बाद शौहर ने वो माल चुपके से उठा कर नदी में फेंक दिया । अल्लाह तआला की क़ुदरत से वह माल एक मछली ने निगल लिया। वह मछली एक मछली मारने वाले के जाल में आगई और बिकने के लिये आई । हुस्न-ए-इत्तिफ़ाक़ कि वह मछली उस के शौहर ने ख़रीदी और घर ले आया । उस नेक ख़ातून ने पकाने के लिए जब मछली का पेट चाक किया तो माल वाली थैली इस से बरामद हुई। वो सारा मुआमला समझ गई। बहर हाल उसने वो माल एक महफ़ूज़ जगह रख दिया । शौहर ने अपनी चाल के मुताबिक़ बीवी से माल मांगा । बीवी ने वो माल निकाल कर शौहर के हवाले कर दिया । माल मिलने पर शौहर बहुत हैरान हुआ कि माल तो मैंने नदी में फेंक दिया था, यहां वापस कैसे आ गया।

ज़ालिम शौहर ने सोचा कि इस में ज़रूर औरत की कोई चाल है और इस वाक़िया से सबक़ हासिल करने के बजाय अपनी बीवी को जलते हुए तन्नूर में डाल दिया ताकि वो इसी में जल कर मर जाये।

तन्नूर में गिरते ही उस नमाज़ी औरत ने ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ किया : ए मेरे अल्लाह! मैं हमेशा नमाज़ पढ़ती हूँ। आज नमाज़ के सदक़े मेरी लाज रख ले । ख़ुदा-ए-वहदहु ला-शरीक की बारगाह में ये दुआ क़बूल हुई और उस के हुक्म से तन्नूर की आग फ़ौरन ठंडी हो गई और वह नमाज़ी औरत नमाज़ की बरकत से ज़िन्दा बच गई। (नुज़हतुल मजालिस 134, 135, ज:1)

नमाज़ की दस नुमायां खूबियां

हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से मर्वी है कि नबी-ए-अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: नमाज़ दीन का सुतून(पाया) है और इस में दस खूबियां हैं।

(1) नमाज़, नमाज़ी के चेहरे की रौनक है (कि दुनिया व आख़िरत में इस का चेहरा चमकदार रहेगा और इस से नूर बरसेगा)।

(2) नमाज़ मोमिन के दिल की रोशनी है (कि ईमान बिल्कुल ताज़ा रहता है)।
(3) नमाज़ बदन की सेहत व आफ़ियत की ज़ामिन है (कि नमाज़ी मुसलमान दूसरों की बनिसबत ज़्यादा तंदुरुस्त रहता है।)
(4) नमाज़ क़ब्र की मूनिस व साथी है।
(5) नमाज़ नुज़ूले रहमते हक़ का सबब है।
(6) नमाज़ आसमानी खैरात व बरकात की कुंजी है।
(7) नमाज़ से मीज़ाने अमल भारी होगा (और इस के नतीजा में जन्नत की दौलतें हासिल होंगी)।
(8) नमाज़ अज़ाबे जहन्नम की ढाल है (कि इंशा अल्लाह तआला नमाज़ी को अज़ाबे दोज़ख़ से वास्ता नहीं पड़ेगा।)
(9) जिसने नमाज़ क़ायम रखी, उसने अपना दीन क़ायम रखा ।
(10) जिसने नमाज़ छोड़ दी, उसने अपना दीन ढा दिया।(तंबीहुल ग़ाफिलीन, उर्दू स:369)

वीरान घर की आबादी का बसीरत अफ़रोज़ वाक़िया

एक शख़्स ने ग़ुलाम ख़रीदा, तो ग़ुलाम ने मालिक से कहा: ए मेरे आक़ा ! मैं आप से तीन शर्तें चाहता हूं: (1) जब नमाज़ का समय हो जाये तो आप मुझे नमाज़ अदा करने से ना रोकें । (2) आप मुझसे दिन में जो चाहें ख़िदमत लें, लेकिन रात में मुझे अपनी ख़िदमत में मशग़ूल न रखें । (3) मुझे रहने के लिए ऐसा कमरा दें जिसमें मेरे इलावा कोई और ना आए।

मालिक ने कहा: तेरी तीनों शर्तें मंज़ूर हैं । इन कमरों में से जो चाहो अपने रहने के लिए पसंद कर लो। ग़ुलाम ने सब कमरों का जायज़ा लिया और उनमें जो सबसे ख़राब था उसी को पसंद कर लिया।

आक़ा ने पूछा: तूने ये ख़राब कमरा क्यों पसंद किया, जब कि इस से बेहतर कमरे मौजूद हैं? ग़ुलाम ने कहा: आक़ा! आपको मालूम नहीं कि ख़राब घर अल्लाह तआला की याद से बेहतर हो जाता है। चुनांचे

वह ग़ुलाम दिन में आक़ा की ख़िदमत करने लगा और रात में इस कमरे में रहने लगा। एक रात उस के आक़ा ने शराब व कबाब और खेल कूद की मजलिस क़ायम की। जब आधी रात हुई और उस के दोस्त व अहबाब चले गए तो वह अपने घर का जायज़ा लेने लगा। जब वह घूमता हुआ ग़ुलाम के कमरे के पास पहुंचा तो देखा कि कमरा रोशन है, उस में आसमान से नूर की एक चिराग़ लटका हुआ है और ग़ुलाम सर सजदा में रख कर अपने परवरदिगार से इस तरह दुआ कर रहा है:

ख़ुदावंदा! तूने दिन में मालिक की ख़िदमत मेरे ज़िम्मा वाजिब कर दी है। अगर मुझ पर ये ज़िम्मेदारी ना होती तो मैं रात व दिन तेरी ही इबादत में मशग़ूल रहता ए मेरे परवरदिगार! मेरा उज़्र क़बूल फ़रमा ले।

मालिक रात-भर उस की तरफ़ देखता रहा, जब सुबह हुई तो वह क़ंदील (चिराग़) बुझ गई और कमरे की छत पहले की तरह बराबर हो गई। वो वापस लौटा और अपनी बीवी को सारा किस्सा सुनाया।

जब दूसरी रात आई तो वह मालिक अपनी बीवी को लेकर उस ग़ुलाम के दरवाज़ा पर पहुंचा। अन्दर देखा तो ग़ुलाम सजदा में था और नूरानी क़ंदील रोशन थी। वो दोनों (मियां बीवी) ग़ुलाम के दरवाज़े पर खड़े रहे, और पूरी रात उसे देख देख कर रोते रहे। जब सुबह हुई तो इन्होंने ग़ुलाम से कहा : हमने तुझे अल्लाह तआला के लिए आज़ाद कर दिया है ताकि तू फ़ुर्सत से उस की इबादत कर सके, फिर उसे रात का वाक़िया बताया। ग़ुलाम ने जब ये सुना तो दोनों हाथ आसमान की तरफ़ उठा कर अर्ज़ किया :

يَاصَاحِبَ السِّرِّ إِنَّ السِّرَّ قَدْ ظَهَرَ وَلَا أُرِيْدُ حَيٰوتِيْ بَعْدَ مَا اشْتَهَرَ

ऐ साहिब राज़! राज़ ज़ाहिर हो गया, अब मैं राज़ फाश होने के बाद ज़िंदगी नहीं चाहता, लिहाज़ा तू मेरी रूह निकाल ले, इतने में वो गिरा और उस की रूह निकल गई।

ख़ुदा की इबादत का अनोखा जज़बा

हज़रत बा-यज़ीद बुस्तामी رضی اللہ تعالیٰ عنہ के बचपन का ज़माना था, मकतब में पढ़ रहे थे, जब आप सूरा-ए-मुज़म्मिल (यानी

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ۙ

ऐ झुरमुट मारने वाले! रात में क़ियाम फ़र्मा सिवा कुछ रात के) पर पहुंचे तो अपने वालिदे गिरामी (पिता) से पूछा: ये कौन हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने रात में क़ियाम करने (नमाज़े तहज्जुद अदा करने) का हुक्म दिया है? वालिदे माजिद ने फ़रमाया: बेटा! ये हम सब के आक़ा हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم हैं।

आपने अर्ज़ किया: अब्बा हुज़ूर! आप ऐसा क्यों नहीं करते जैसा कि हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ने किया?

वालिदे माजिद ने फ़रमाया: बेटा !ये ऐसा मुआमला है जिससे अल्लाह جل شانہ ने हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم को अता फ़रमाया है।

फिर जब आप पढ़ते हुए وَطَآىِٕفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ (और एक जमाअत तुम्हारे साथ वाली) पर पहुंचे तो अर्ज़ किया: अब्बा हुज़ूर! ये कौन लोग हैं?

वालिदे माजिद ने जवाब दिया: बेटा! ये हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के सहाबा हैं ।

आपने अर्ज़ किया: अब्बा हुज़ूर! फिर आप ऐसा क्यों नहीं करते हैं जैसा कि हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के सहाबा ने किया?

वालिदे माजिद ने फ़रमाया: बेटा! अल्लाह جل شانہ ने उन्हें रात रात-भर नफ़ल नमाज़ पढ़ने और तहज्जुद अदा करने की ताक़त अता फ़रमाई थी, हम उनकी तरह नहीं हैं।

आपने फ़रमाया:अब्बा हुज़ूर! उस शख़्स की ज़िंदगी में कोई भलाई नहीं है जो हुज़ूर صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم और उनके सहाबा की पैरवी नहीं करता और उनके तरीका-ए-कार के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। आपकी इस ईमान अफ़रोज़ गुफ़्तगु का असर ये हुआ कि आपके वालिदे माजिद तहज्जुद गुज़ार बन गए।

फिर आप ने अपने वालिदे माजिद से अर्ज़ किया : अब्बा हुज़ूर ! मुझे नमाज़े तहज्जुद अदा करने का तरीक़ा बता दीजीए। वालिदे माजिद ने फ़रमाया: बेटा! अभी तुम छोटे हो (तुम अभी से सीख कर क्या करोगे?)।

आपने अर्ज़ किया: अब्बा हुज़ूर! जब अल्लाह तआला कल क़यामत के दिन तमाम लोगों को जमा करेगा और नमाज़े तहज्जुद अदा करने वालों को जन्नत में जाने का हुक्म जारी फ़रमाएगा, उस वक़्त में ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ करूँगा : ऐ मेरे परवरदिगार ! मैं नमाज़े तहज्जुद अदा करना चाहता था लेकिन मेरे बाप ने मुझे मना कर दिया था। ये हैरत-अंगेज़ जवाब सुनकर आपके वालिदे माजिद ने फ़रमाया: ठीक है, तुम नमाज़े तहज्जुद अदा करो। और इस का तरीक़ा भी बता दिया। (नुज़हतुल मजालिस, स:139,ज:1)

अल्लाहु अकबर! ये था मुसलमानों का वह जज़्बा-ए-ईमानी जिसकी बुनियाद पर वो हर जगह कामयाब व कामरां और बाइज़्ज़त थे, और आज हम इसी जज़्बा-ए-बंदगी के ठंड पड़ जाने की वजह से हर जगह ज़लील व ख़्वार और बेइज़्ज़त हैं। आज हम इस्लामी अहकामात से इस क़दर दूर हो चुके हैं कि नफ़ल तो नफ़ल, फ़र्ज़ भी सही वक़्त पर अदा करने की फ़िक्र नहीं करते ।

अल्लाह جل شانه इन बुज़ुर्गों के सदक़े में हमें भी नमाज़े पंजगाना बा-जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

जन्नत में कौन रहेगा?

हज़रत इबने अब्बास رضی اللہ عنہ से मर्वी है कि हज़रत दाऊद علیہ السلام ने अपनी दुआ में अर्ज़ किया? इलाही! तेरे घर (जन्नत) में कौन रहेगा? तू किस की नमाज़ क़बूल करता है?

अल्लाह तआला ने उनके पास वही भेजी कि ए दाऊद! जो मेरी अज़मत के सामने आजिज़ी करता है और दिन मेरी याद में गुज़ारता है और अपने नफ़्स को मेरी वजह से शहवात(इच्छाओं) से रोकता है, भूके

को खाना खिलाता है, मुसाफ़िर को जगह देता है, परेशान हाल पर तरस खाता है, वही मेरे घर में रहेगा और मैं उसी की नमाज़ क़बूल करता हूँ उस का नूर आसमानों में सूरज की तरह जगमगाता है अगर वो मुझे पुकारता है तो मैं जवाब देता हूँ, अगर वो मुझसे कुछ मांगता है तो मैं उसे अता करता हूँ। मैं उस के लिए जह्ल को इल्म, ग़फ़लत को ज़िक्र और तारीकी को रोशनी कर देता हूँ उस का मर्तबा लोगों में ऐसा है जैसा कि जन्नतुल-फ़िरदौस का तमाम जन्नतों में, कि ना उस की नहरें सूखती हैं और ना ही उस के मेवे ख़राब होते हैं। (अल इहया, स:157, ज:1)

एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत

हज़रत अब्दुल-वाहिद बिन ज़ैद ﷺ फ़रमाते हैं कि एक बार हम समुंद्री सफ़र कर रहे थे और हमारा जहाज़ हवा के मुख़ालिफ़ होने की वजह से ऐसे जज़ीरा (द्वीप) में जा पहुंचा जहां हमने एक शख़्स को बुत की पूजा करते देखा। हमने उस से कहा! ये कैसा माबूद (खुदा) है जिसकी तुम पूजा कर रहे हो, ऐसे माबूद तो हम सैकड़ों अपने हाथ से बना सकते हैं।

बुत का पुजारी:तो फिर आप लोग किस की इबादत व पूजा करते हैं?

अब्दुल वाहिद : हम उस ख़ुदा-ए- वहदहू ला-शरीक की इबादत करते हैं जिसका अर्श (निहांसन) आसमान पर है और जिसकी पकड़ ज़मीन पर है।

पुजारी : आप लोगों को ये तालीम किस ने दी?

अब्दुल वाहिद : अल्लाह तआला ने, इस तरह से कि उसने हमारी तरफ़ एक रसूल भेजा। जिसने हमें उस ख़ुदा के बारे में बताया और उस की इबादत का हुक्म दिया।

पुजारी : वो रसूल कहाँ हैं?

अब्दुल वाहिद : उनकी वफ़ात हो गई, खुदा-ए-तआला ने उन्हें अपने पास बुला लिया।

पुजारी : तुम्हारे पास उनकी कोई निशानी है?

अब्दुल वाहिद : हाँ! हमें वो ख़ुदा की किताब दे गए हैं।

पुजारी : वो किताब मुझे दिखाओ।

अब्दुल-वाहिद फ़रमाते हैं कि हमने उस के सामने मुसहफ़ (क़ुरआन) शरीफ़ पेश किया और सूरे "الرَّحمٰن" पढ़ कर सुनाया तो उस पर ऐसी रिक़्क़त तारी हुई कि वो पुकार उठा : जिसका ये फ़रमान है उस की ना-फ़रमानी बिल्कुल जायज़ नहीं और "اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ" पढ़ता हुआ मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गया(इस्लाम क़ुबूल कर लिया)।

हमने उस नव मुस्लिम को इस्लाम की तालीम दी जब हम रात में इशा की नमाज़ पढ़ कर सोने लगे तो वह शख़्स हमसे पूछने लगा: वह ख़ुदा जिसके बारे में आप लोगों ने मुझे बताया है, क्या सोता भी है?

अब्दुल वाहिद : नहीं! वो "حیّ وقیّوم" है, उसे नींद और ऊँघ नहीं आती है।

नव मुस्लिम : जब तो तुम सब बड़े अजीब बंदे हो, तुम्हारा मालिक जागता है और तुम सोते हो।

हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद फ़रमाते हैं : जब हम वहां से चलने लगे तो उस की कुछ माली इमदाद (रुपये पैसे से मदद) करना चाहा, इस पर उसने कहा: मुसलमानो! तुम सबने हमें ऐसा रास्ता बताया है जिस पर तुम ख़ुद नहीं चल रहे हो। जब मैं उस के इलावा की पूजा कर रहा था तब तो उसने मुझे बर्बाद नहीं किया, तो अब वो मुझे क्यों बर्बाद करेगा जब कि मैं उस मालिक व ख़ालिक़ की हक़्क़ानियत पर ईमान ला चुका हूँ और उस की इबादत कर रहा हूँ।

हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद कहते हैं: फिर तीन दिनों के बाद मालूम हुआ कि वो नव मुस्लिम नज़ा (मौत का समय) के आलम में है, मैं उस के पास गया और कहा : कोई ज़रूरत हो तो बताओ उसने कहा: मेरी ज़रूरतें उसने पूरी कर दी जिसने मुझे जज़ीरा से बाहर निकाला

फिर मुझ पर ग़ुनूदगी (नीन्द) तारी हो गई, और मैंने सपने में देखा कि एक सर सब्ज़ व शादाब (हरा भरा) बाग़ में एक गुंबद है और उस में एक औरत है जो कह रही है: ब-ख़ुदा! उस के साथ जल्दी करो, क्यों कि उस से मुलाक़ात का जज़्बा इंतिहा को पहुंच चुका है । इतने में मेरी नींद खुल गई और मैंने देखा कि उस मर्द का इंतिक़ाल हो चुका है اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ۔

मैंने उस के कफ़न दफ़न का इंतिज़ाम किया, फिर मैंने सपने में उस नव मुस्लिम नेक मर्द को उसी गुंबद के अंदर देखा जो ये आयते करीमा पढ़ रहा था:

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍۚ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

(پ:۱۳، الرعد:۱۳، آیت: ۲۳، ۲٤)

और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उन पर ये कहते आएँगे,सलामती हो तुम पर तुम्हारे सब्र का बदला, तो पिछला घर किया ही ख़ूब मिला।(कंज़ुल ईमान)

जन्नत का अज़ीमुश्शान महल

नुज़हतुल मजालिस में है कि नबी-ए-पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह جل شانه ने जन्नत में एक शहर बसाया है जिसका नाम मदीनतुल जलाल है, उस में एक अज़ीमुश्शान महल है जिसे क़सरुल उज़मा कहा जाता है और उस में एक घर है जिसका नाम बैतुर्रहमा है उस लंबे चौड़े घर में चार हज़ार तख़्त सजाये गए हैं जिनमें से हर तख़्त पर चार हज़ार हूरें मौजूद हैं और उस में ऐसी चीज़ें रखी हुई हैं जिन्हें ना तो किसी कान ने सुना, और ना ही किसी आँख ने देखा, और ना ही किसी इन्सान के दिल में उनका ख़्याल आया ।

सहाबा ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! ये अज़ीमुश्शान महल किस ख़ुशनसीब को अता किया जाएगा?

सरकारे दो-आलम रूही फ़िदाहु ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: उन मुसलमानों को अता किया जाएगा जो नमाज़े पंजगाना बाजमाअत अदा करते हैं। (नुज़हतुल मजालिस, स:136, ज:1)

अल्लाहु-अकबर! ये कैसी नफ़ा बख़्श इबादत है जो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे हबीब ﷺ और उनकी उम्मत पर फ़र्ज़ फ़रमाई है।

ये इबादत फ़रिश्तों की तमाम इबादतों को शामिल है । इस की पाबंदी करने वाला इन्सान दुनिया में अफ़्लास व तंग दस्ती (गरीबी) से महफ़ूज़ रहता है और आख़िरत में बैतुर रहमां का हक़दार होता है। अल्लाह جل شانه तमाम मुसलमानों को ब-हुस्न व ख़ूबी इस इबादत की अदाएगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

दुनिया में जन्नती बीवी से मुलाक़ात

अल्लामा अब्दुर्रहमान सफ़ूरी अपनी किताब नुज़हतुल मजालिस में तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत इबराहीम बिन अदहम رضی اللہ عنہ ने ख़ुदा-ए-वहदहू ला-शरीक की बारगाह में अर्ज़ किया: ए मेरे परवरदिगार! मुझे वो औरत दिखा दे जो जन्नत में मेरी बीवी होगी उनकी दुआ क़बूल हुई और उन्हें ख़ाब में बताया गया कि फ़ुलां जगह एक सुरमही रंग की ख़ातून बकरीयां चराती है उस का नाम सलामा है, वही जन्नत में तुम्हारी बीवी होगी ।

जब हज़रत इबराहीम बिन अदहम रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु उस औरत को देखने के लिए वहां पहुंचे तो उस से कुछ इस तरह गुफ़्तगु हुई।

इबराहीम बिन अदहम : अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि-व-बरकातुहु।

सलामा : व-अलैकुमस्सलाम ऐ इबराहीम!

इबराहीम : तुम्हें किस ने बताया कि मैं इबराहीम हूँ?

सलामा : जिसने तुम्हें ये बताया कि मैं जन्नत मैं तुम्हारी बीवी हूँ।

इबराहीम : सलामा मुझे कुछ अच्छी बातें बताओ।

सलामा : शब-बेदारी (रात में जागना) करो, क्यों कि ये ऐसा अमल है जो बंदा को परवरदिगार तक पहुंचा देता है अगर तुम अल्लाह جل شانه की मुहब्बत के दावेदार हो तो तुम पर सोना हराम है। (नुज़हतुल मजालिस, स: 138, ज:1)

महज़ दावा बेकार है

हज़रत शफ़ीक़ बलख़ी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ फ़रमाते हैं: दुनियादार तीन बातें ज़बान से कहते हैं मगर अमल उस के ख़िलाफ़ करते हैं।

(1) वो कहते हैं कि हम अल्लाह तआला के बंदे हैं, लेकिन काम ग़ुलामों जैसे नहीं करते, बल्कि आज़ादों की तरह अपनी मर्ज़ी पर चलते हैं।

(2) वो कहते हैं कि अल्लाह तआला ही हमें रिज़्क़ देता है, लेकिन उनके दिल दुनिया और दुनिया के सामान जमा किए बग़ैर मुतमइन नहीं होते, और ये उनके इक़रार के सरासर ख़िलाफ़ है।

(3) वो कहते हैं: आख़िर हमें मर जाना है, मगर काम ऐसे करते हैं जैसे उन्हें कभी मरना ही नहीं है। (मुकाशफतुल क़ुलूब,स:67)

मुसलमानो! ज़रा सोचो तो सही, अल्लाह तआला के सामने तुम कौन सा मुँह लेकर जाओगे और किस ज़बान से जवाब दोगे जब वो तुमसे हर छोटे बड़े अमल के संबंधित सवाल करे गा। इन सवालात का जवाब देने के लिए अभी से अच्छा अमल शुरू कर दो ताकि उस वक़्त शर्मिंदगी ना उठानी पड़े। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِیْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ۝ (پ:۲۸، الحشر:۵۹، آیت:۱۸)

और अल्लाह से डरो बे-शक अल्लाह को तुम्हारे कामों की ख़बर है।(कंज़ुल ईमान)

सो दीनारों की थैली

अल्लामा सफ़ूरी की किताब नुज़हतुल मजालिस में है कि बसरा में एक आबिद (खुदा की इबादत करने वाला) लक्ड़ी ख़रीदने गया तो उसे

रास्ते में एक थैली पड़ी नज़र आई जिस पर लिखा हुआ था इस में सौ दीनार हैं। ऐन उसी वक़्त आबिद को इक़ामत की आवाज़ सुनाई दी। उसने थैली वहीं छोड़ दी और नमाज़ बाजमाअत अदा करने के लिए मस्जिद की तरफ़ दौड़ पड़ा। नमाज़ पढ़ने के बाद लकड़ियों का गट्ठर ख़रीदा और घर आ गया शाम को जब उसने लकड़ियों का गट्ठर खोला तो देखा कि वो सौ दीनारों वाली थैली उस में मौजूद है। वो आबिद उसी वक़्त ख़ुदा-ए-वहदहु ला-शरीक की बारगाह में दुआ करने लगा और कहने लगा: इलाही! जिस तरह तूने मेरे रिज़्क़ का इंतिज़ाम फ़रमाया है इसी तरह मुझे अपनी इबादत में मशग़ूल रखने का इंतिज़ाम फ़र्मा। (स:135, ज:1)

मालूम हुआ कि जिसके दिल में ख़ुदा-ए-तआला का ख़ौफ़ होता है वह कभी यादे इलाही से ग़ाफ़िल नहीं रहता, और अल्लाह جل شانه ग़ैब से उस के रिज़्क़ का इंतिज़ाम फ़रमाता है। और यही एक मोमिन की शान और पहचान होती है कि उस का दिल हमेशा खुदा के हुक्म को पूरा करने के जज़बे से भरा हुवा और उस का सीना मुहब्बते रसूल का मदीना होता है। वो खाने पीने से ज़्यादा फ़राइज़ व वाजिबात की अदाएगी की फ़िक्र करता है।

एक मर्तबा हुज़ूर ताजदारे मदीना ﷺ से मोमिन और मुनाफ़िक़ के बारे में पूछा गया तो आपने इरशाद फ़रमाया:

मोमिन की हिम्मत नमाज़ और रोज़े की तरफ़ रहती है, और मुनाफ़िक़ की हिम्मत जानवरों की तरह खाने पीने की तरफ़ रहती है और वो नमाज़ व रोज़ा की तरफ़ मुतवज्जह ही नहीं होता है। मोमिन अल्लाह की राह में ख़र्च करने और बख़शिश तलब करने में मशग़ूल रहता है जब कि मुनाफ़िक़ हिर्स व लालच में मसरूफ़ रहता है। (स:71)

नमाज़ी और शेर का सामना

एक आबिद व ज़ाहिद आलिमे दीन ने ख़लीफ़-ए-दिमशक़ मरवान के गाने बजाने के आलात तोड़ फोड़ दिए ख़लीफ़ा ने गुस्सा हो कर हुक्म

दिया कि उनको शेर के सामने डाल दिया जाये ताकि वो उन्हें चीर फाड़ कर खा जाये, आलिमे रब्बानी जब शेर के सामने लाए गए तो इन्होंने नमाज़ शुरू कर दी शेर उन को देखकर दुम हिलाते हुए आगे बढ़ा और उनके पांव चाटने लगा, और ये बराबर नमाज़ पढ़ते रहे। इसी हालत में पूरी रात गुज़र हो गई। ख़लीफ़ा ने सुबह को हाल पूछा और कहा कि देखो शेर आलिम-ए- दीन को खा गया ? जब दरबारी देखने गए तो देखा कि आलिमे दीन नमाज़ पढ़ रहे हैं और शेर उन के पांव चाट रहा है। दरबारियों ने आलिमे दीन को शेर के पिंजरे से निकाल कर दरबार में हाज़िर किया।

मरवान ने पूछा: तुझे शेर का डर नहीं था जो इतने इतमीनान से तुम नमाज़ पढ़ रहे थे?

आलिमे दीन ने जवाब दिया: मैं तो रात-भर इस चिंता में था कि शेर ने मेरा पांव चाट लिया है और शेर का जूठा नापाक है, तो मेरी नमाज़ किस तरह होगी, मुझे इस चिंता से फ़ुर्सत ही नहीं मिली कि मैं शेर का ख़ौफ़ करता।

मरवान आलिमे दीन के इस जवाब से हैरान रह गया और हक़ के हैबत से भैभित कर उसने आलिमे दीन को रिहा कर दिया। (रुहानी हिकायात अव्वल,स:135)

इस वाक़िया से पता चलता है कि जो बंदा ख़ुदा-ए-तआला की याद में लगा रहता है, अल्लाह جل شانه उस की इज़्ज़त व अज़मत में इज़ाफ़ा फ़रमाता है और उसे हर क़िस्म के दुश्मनों के शर से महफ़ूज़ रखता है। हज़रत शेख़ सादी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं

تو ہم گردن از حکم داور مپیچ — کہ گردن نہ پیچد ز حکم تو ہیچ

محال ست چوں دوست دارد ترا — کہ در دستِ دشمن گزارد ترا

यानी तू ख़ुदा-ए-वहदहु ला-शरीक के हुक्म से मुँह ना मोड़, ताकि कोई मख़लूक़ तेरे हुक्म से भी मुँह ना मोड़े। ये मुहाल है कि अल्लाह جل شانه तुझे दोस्त रखे और फ़िर दुशमन के हाथ में बे-यार व

मददगार छोड़ दे।

मुसलमानो! अभी वक़्त है अगर आपसे गलतीयाँ हो चुकी हैं तो आज ही उनसे तौबा कीजिए और ख़ुदा व रसूल के फरमान को पुरा करना शुरु कर दीजिए, नमाज़ें सही वक़्त पर बा-जमाअत अदा कीजीए ताकि अल्लाह جل شانه आपको अपना दोस्त बना ले और आप दुनिया व आख़िरत में कामयाब व कामरां हो सकें।

आफ़त हज़ारों टलती हैं सदक़े नमाज़ के
एहसान हम पे कितना है ये कारसाज़ का

इस उम्मत के नमाज़ियों की मिसाल

एक बार हज़रत ईसा रूहुल्लाह علیہ السلام समुंद्र के साहिल से गुज़र रहे थे। अचानक आपकी नज़र एक ख़ूबसूरत पंछी पर पड़ी, क्या देखते हैं कि वो समुंद्र के किनारे कीचड़ में उतर गया जिस से उस का जिस्म कीचड़ से गंदा हो गया, फिर वहां से निकला और समुंद्र में डुबकी लगाई जिससे वो फिर पहले की तरह ख़ूबसूरत हो गया, इस तरह उसने पाँच बार किया।

हज़रते ईसा علیہ الصلوٰۃ والسلام परिंदे के इस अमल से बहुत अचंभित हुए, इतने में हज़रत जिब्रीले अमीन हाज़िर ख़िदमत हुए और फ़रमाया:

ऐ ईसा! ये परिन्दा जो आपको दिखाया गया है, ये उम्मते मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) के नमाज़ियों की मिसाल है, और ये कीचड़ उनके गुनाहों की मिसाल है और दरिया उनकी नमाज़ों की मिसाल है। ये कीचड़ में उतरना और उस से गंदा होना उनके गुनाह करने की मिसाल है। ये समुंद्र में डुबकी लगाना, नमाज़ें अदा करने की मिसाल है। (नुज़हतुल मजालिस , स:126, ज:1)

इस वाक़िया से आप बख़ूबी समझ गए होंगे कि ये उम्मत उस नूरी ख़ुशनुमा परिंदे की तरह है, और उस का गुनाह करना और बुरे काम करना उस परिंदा के कीचड़ में घुसने की तरह है, फिर पाँच वक़्त की नमाज़ें पढ़ना समुंद्र में पाँच बार नहाने की तरह है। तो जिस तरह वो परिंदा

समुंद्र के किनारे कीचड़ में गंदा होजाने की वजह से मैला कुचैला और बुरा लगने लगता था, फिर समुंद्र में डुबकी लगा कर पहले की तरह साफ़ सुथरा हो जाता था, बिलकुल इसी तरह ये उम्मत जब दुनिया की बुराईयों और उस की रंगीनियों में फंस जाती है तो उस की ज़ात गुनाहों से गंदा हो जाती है, लेकिन जब नमाज़ पढ़ती है तो उस के सारे गुनाह धुल जाते हैं और वो पहले की तरह बे गुनाह और पाक व साफ़ हो जाती है बशर्तिके वो कबीरा गुनाहों की मुर्तक़िब ना (बड़े गुनाह ना किया) हो क्यों कि कबीरा गुनाह तौबा के बग़ैर माफ़ नहीं होते।

नमाज़ें इन ही औक़ात में क्यों?

अल्लाह جل شانه ने इस उम्मत पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं जिनमें से हर एक की अदाएगी के लिए अलग अलग समय तय है लेकिन उन्हीं औक़ात में नमाज़ों को खास करने की वजह और हिक्मत क्या है? तो इस सिलसिले में उलमा-ए-किराम ने बहुत कुछ बयान फ़रमाया है। यहां उनमें से कुछ हिकमतें ही ज़िक्र की जाती हैं।

❋ हज़रत अल्लामा नीशा पूरी رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ किताबुन नुज़हा में लिखते हैं कि हज़रते आदम علیہ السلام रात के वक़्त ज़मीन पर उतारे गए। हर तरफ़ अंधेरा छाया हुआ था। जब सुबह हुई तो आपने बतौर शुकराना दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई, इस ख़ुशी में कि अल्लाह तआला ने आपको अंधेरे से नजात अता फ़र्मा दी।

अल्लाह عزوجل की रहमत से जन्नत में हर तरफ उजाला ही उजाला है। जब हज़रते आदम علیہ السلام इस ज़मीन पर आये तो अंधेरा देखकर आप को बड़ी हैरत हुई, लेकिन जब सुबह हुई तो आप बहुत ख़ुश हुए और शुकराना में दो रकअत नमाज़ अदा की।

❋ हज़रत इबराहीम علیہ السلام को एक साथ चार चिंताओं ने घेरा: (1) बेटे को ज़बह करने की चिंता (2) बे-आब व गयाह ज़मीन (ऐसी ज़मीन जहाँ ना पानी हो और ना पेड़ पौदे हों) की चिंता (3) हुक्म-ए-इलाही बजा लाने की चिंता (4) मुसाफ़िरत की फ़िक्र।

जब अल्लाह तआला ने आपकी इन चारों चिंताओं को दूर कर दिया तो आपने शुकराने में चार रकअत नमाज़ अदा की। (और वो वक़्त ज़वाले आफ़ताब के बाद का था)।

❋ हज़रत यूनुस عليه السلام को चार क़िस्म की तारीकियों (अधेरों) ने घेर लिया : (1) अपनी क़ौम पर नाराज़गी की तारीकी (2) रात की तारीकी (3) समुंद्र की तारीकी (4) मछली के पेट की तारीकी।

जब अल्लाह तआला ने आपको मछली के पेट से नजात अता फ़रमाई तो अस्र का वक़्त था, आपने बतौर शुकराना चार रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई।

❋ हज़रते ईसा عليه السلام ने जब अपनी ज़ाते मुबारका से उलूहियत की नफ़ी की और उसे ख़ुदा-ए-वहदहु ला-शरीक के लिए साबित फ़रमाया तो शुकराना में दो रकअत आपने और एक रकअत आपकी वालिदा माजिदा ने मग़रिब के वक़्त अदा की।

❋ हज़रते मूसा عليه السلام ने चार चिंताओं से नजात पाई तो चार रकअत नमाज़ रात में बतौर शुक्राना अदा फ़रमाई उनकी चार चिंतायें ये थीं : (1) रास्ता भूल जाने की चिंता (2) बकरियों के भाग जाने की चिंता (3) सफ़र की चिंता (4) अपनी बीवी की चिंता, कि वो दर्दे ज़ह (बच्चा पैदा होने के समय होने वाले दर्द) में मुबतला थीं। (नुज़हतुल मजालिस , स:127, ज:1)

अल्लाह तआला ने अंबिया-ए-किराम की इन अदाओं को इस क़दर पसंद फ़रमाया कि उसे अपने प्यारे हबीब عليه التحية والثنا के लिए मेराज का ख़ुसूसी तोहफ़ा बना दिया और इस उम्मत के लिए इन ही औक़ात में इस की अदाएगी को हमेशा के लिए फ़र्ज़ क़रार दे दिया।

मेराज में बुला के दिया अपना क़ुरबे ख़ास
रब ने नबी को तोहफ़ा दिया है नमाज़ का

❋ हकीमुल उम्मत हज़रत अल्लामा अल्हाज अहमद यार ख़ां नईमी عليه الرحمة इस सिलसिले में इस तरह लिखते हैं:

नमाज़ों से मक़सूद ये है कि इन्सान की हर हालत अल्लाह तआला

के ज़िक्र से शुरू हो । और दिन व रात में पाँच ही हालतें होती हैं इसलिए नमाज़ें भी पाँच ही रखी गई हैं । और उन ही औक़ात के साथ ख़ासकर दी गई हैं। मसलन इन्सान सुबह को उठा तो अब बेदारी की हालत शुरू हुई। सबसे पहले अल्लाह का ज़िक्र करो यानी नमाज़े फ़ज्र अदा करो दोपहर तक दुनियावी कारोबार से फ़ारिग़ हुआ, खाना वगैरा खा कर दोपहर में आराम किया, अब जो उठा तो दिन का दूसरा हिस्सा और हमारी दूसरी हालत शुरू हुई, लिहाज़ा पहले नमाज़े (ज़ुहर) पढ़ लो। अस्र के वक़्त तक़रीबन सारे लोग अपने कारोबार से फ़ारिग़ हो गए, सैर व तफ़रीह का वक़्त आया, बाज़ारों में तिजारतों के चमकने का वक़्त आया, गोया हमारी तीसरी हालत शुरू हुई। अब भी पहले नमाज़ (अस्र) पढ़ लो। मग़रिब के वक़्त दिन जा रहा है रात आ रही है, दुनिया की हालत ने करवट बदली, अब भी पहले नमाज़ (मग़रिब) पढ़ लो। जब सोने के लिए चलो तो बहुत मुम्किन है कि ये नींद तुम्हारी आख़िरी नींद हो, उस के बाद क़यामत ही को उठना नसीब हो, और नींद भी एक किस्म की मौत ही है, लिहाज़ा अल्लाह तआला का ज़िक्र करो और नमाज़ (इशा)पढ़ कर सोओ। (तफ़सीर नईमी, स:131, ज:1)

इबतिदा हर काम की लाज़िम है रब के नाम से
सुर्ख़रूई पाता है इन्सान अच्छे काम से
मसरूफ़ रहो हमेशा इबादत में रब की तुम
मोमिन वो सच्चा है जो है आदी नमाज़ का

✻ अल्लामा अब्दुर्रहमान सफ़ूरी शाफ़ई ﷺ अपनी मशहूरे ज़माना किताब नुज़हतुल मजालिस में इस से संबंधित यूं तहरीर फ़रमाते हैं: इन ही औक़ात के साथ नमाज़ों को ख़ास करने की वजह ये है कि ज़ुहर के वक़्त जहन्नम को भड़काया जाता है, तो जो शख़्स नमाज़े ज़ुहर सही वक़्त पर अदा करेगा वो अपने गुनाहों से इस तरह पाक हो जाएगा जैसे उसी वक़्त अपनी माँ के पेट से पैदा हुआ हो अस्र के वक़्त हज़रते आदम ﷺ ने शजरे ममनूआ (वो दरख़्त जिसके पास जाने से आपको मना किया गया था) से कुछ खा लिया था, तो जो शख़्स नमाज़े अस्र सही वक़्त पर अदा

करेगा उसे जहन्नम से रिहाई हासिल होगी । मग़रिब के वक़्त हज़रते आदम की तौबा क़बूल हुई, तो जो शख़्स नमाज़े मग़रिब सही वक़्त पर अदा करेगा वो अल्लाह तआला से जो भी मांगेगा पाएगा । इशा का वक़्त क़ब्र की तारीकी और क़यामत के अंधेरों से मुशाबहत रखता है, तो जो शख़्स नमाज़े इशा सही वक़्त पर अदा करेगा अल्लाह तआला उसे क़ब्र में रोशनी और क़यामत में नूर अता फ़रमाएगा । फ़ज्र का वक़्त भी क़ब्र व क़यामत की तारीकी से मुशाबहत रखता है, तो जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र वक़्त पर अदा करेगा अल्लाह तआला उसे दोज़ख़ और निफ़ाक़ से महफ़ूज़ रखेगा। (नुज़हतुल मजालिस , स:125- 126, ज:1)

ज़ाहिर है ये हदीसे रिसालत मआब है
बे-शक लहद में दाफ़-ए-ज़ुल्मत नमाज़ है
मर्क़द की तीरगी को मिटाने के वास्ते
मिस्बाहे क़ब्र, मूनिसे ख़लवत नमाज़ है

उलमा-ए-किराम के मज़कूरा इर्शादात से मालूम हुआ कि अल्लाह جل شانه ने इस उम्मत पर जो नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, ये उस का बेपनाह करम व एहसान है और उनकी अदाएगी के लिए जो वक़्त तय फ़र्माया, ये उस का मज़ीद फ़ज़ल व इनाम है ।

हम सब नमाज़ें पढ़ेंगे, तस्बीह व तहलील करेंगे और अल्लाह तआला उस के बदले हमें दुनिया में इज़्ज़त व वक़ार अता फ़रमाएगा और आख़िरत में अपने दीदार और जन्नतुल फ़िरदौस जैसी अनमोल नेमतों से नवाज़ेगा।

लिहाज़ा ए मुसलमानो! अगर तुम रब की रज़ा व ख़ुशनुदी हासिल करना चाहते हो और क़यामत में उस के दीदार की ख़्वाहिश और जन्नत में जाने की आरज़ू रखते हो तो नमाज़े पंजगाना की अदाएगी अपने ऊपर लाज़िम करलो । और किसी हाल में भी उसे ना छोड़ो इंशा-अल्लाह तआला तुम दुनिया व आख़िरत दोनों जहां में कामयाब रहोगे

दीदारे रब जो चाहो तो पढ़ते रहो नमाज़
दीदारे रब बनामे इबादत नमाज़ है

यौमे हिसाब दावरे महशर के रूबरू
सामाने खुल्द, मूसिले जन्नत नमाज़ है
साबित है ये कलामे इलाही से ला कलाम
रब की रज़ा है, बाइसे बरकत नमाज़ है

बुज़ुर्गों की नमाज़ और उनके इरशादात

सुफिया-ए-किराम

सूफिया-ए-किराम फ़रमाते हैं: ए अल्लाह के बंदो! नमाज़ के लिए या तो तारे बन जाओ कि पूरी रात रब की इबादत करो। और ये ना हो सके तो चांद बन जाओ, यानी रात के कुछ हिस्सों में इबादत करो और ये भी ना हो सके तो सूरज से तो कम ना हो कि दिन ग़फ़लत में गुज़ार दो। (तफ़सीरे नईमी, स:131, ज:1)

हज़रत अबु बकर सिद्दीक़ः

हुज़ूर सरवरे कायनात ﷺ के ख़लीफ़-ए-अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ का हाल ये था कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो आप इरशाद फ़रमाते:

قُوْمُوْا اِلٰی نَارِکُمُ الَّتِیْ اَوْقَدْتُمُوْھَا فَاَطْفِئُوْھَا.

चलो जो आग तुमने भड़काई है उसे बुझाओ, यानी नमाज़ को अपने गुनाहों का कफ्फ़ारा बनाओ। (एहयाओ उलूमिद्दीन, स:153,ज:1)

हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़मः

ख़लीफ़-ए-दोम अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करते तो आपका जिस्म काँपने लगता और दाँत बजने लगते। आपसे आपकी इस हालत के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: अमानत की अदाएगी और फ़र्ज़ पूरा करने का वक़्त क़रीब आ गया है और मैं नहीं जानता कि उसे कैसे अदा करूँगा।(मुकाशिफ़तुल-क़ुलूब, स:113)

हज़रत उस्मान ग़नीः

ख़लीफ़-ए-सालिस हज़रत उस्मान ग़नी ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) رضی اللہ تعالیٰ عنہ इरशाद फ़रमाते हैं: जिस शख़्स ने इशा की नमाज़ बा-जमाअत अदा की उसने गोया आधी रात तक नफ़ल नमाज़ पढ़ी और जिसने नमाज़े फ़ज्र जमाअत के साथ पढ़ी वो गोया पूरी रात नफ़ल नमाज़ पढ़ता रहा। (मिशकात शरीफ़, स:62)

हज़रत अली बिन अबी तालिबः

अमीरुल मोमिनीन शेरे खुदा हज़रत अली मुर्तज़ा کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم का हाल ये था कि जब नमाज़ का वक़्त आता तो आपके चेहरे का रंग बदल हो जाता और आप काँपने लगते लोग आपसे पूछते : अमीरुल मोमिनीन ! आपको क्या हो गया है ? उस वक़्त आप इरशाद फ़रमाते कि अल्लाह तआला की उस अमानत की अदाएगी का वक़्त आगया है जिसे अल्लाह तआला ने आसमान व ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया था मगर उन्होंने मजबूरी ज़ाहिर कर दी थी और मैंने उसे उठा लिया था। (एहयाओ उलूमिद्दीन, स:157, ज:1)

हज़रत अली बिन हुसैन

हुज्जतुल-इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ मुकाशफ़तुल-क़ुलूब में तहरीर फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अली बिन हुसैन رضی اللہ تعالیٰ عنہ वुज़ू करते तो उनके चेहरे का रंग बदलने लगता, घर वाले कहते: आपको वुज़ू के वक़्त क्या तकलीफ़ हो जाती है जो आपके चेहरे का रंग बदलता हुआ नज़र आता है। आप जवाब देते: जानते नहीं हो कि मैं किस की बारगाह में हाज़िर होने की तैय्यारी कर रहा हूँ। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, मुतर्जम, स:12)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास

हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि ख़ुज़ू व खुशु की दो रेकातें स्याह दिल वाले की सारी रात की इबादत से बेहतर हैं। और

हदीस शरीफ़ में है, सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अख़ीर ज़माना में मेरी उम्मत के कुछ लोग ऐसे होंगे जो मस्जिदों में गोल बना कर बैठेंगे, दुनिया और दुनिया की मुहब्बत का ज़िक्र करते रहेंगे, उनकी मजालिस में ना बैठना, अल्लाह तआला को उनकी कोई ज़रूरत नहीं।

हज़रत राबिया बसरिया

हज़रत राबिया बसरिया رضی اللہ تعالیٰ عنہا के बारे में बयान किया जाता है कि एक बार आप नमाज़ पढ़ रही थीं कि चटाई का कोई टुकड़ा आपकी आँख में लग गया जिससे आपकी आँख से ख़ून बहने लगा और आपका कपड़ा ख़ून से तर हो गया, लेकिन यादे ख़ुदा में डूबने का आलम ये था कि आपको ख़बर तक ना हुई। (रियाज़ुन नासिहीन फ़ारसी, स:97)

हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब

हज़रत ख़लफ़ बिन अय्यूब رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ एक बार नमाज़ पढ़ रहे थे, किसी जानवर ने आपको काट लिया और ख़ून बहने लगा मगर आप को महसूस ना हुआ यहाँ तक कि इबने सईद बाहर आए और इन्होंने आपको बताया और ख़ून से लतपत कपड़ा धोया। पूछा गया : आपको जानवर ने काट लिया और ख़ून भी बहा, मगर आपको महसूस नहीं हुआ?

आपने जवाब दिया: उसे कैसे महसूस होगा जो अल्लाह ज़ुल-जलाल के सामने खड़ा हो, उस के पीछे मौत का फरिश्ता हो, बाएं तरफ़ जहन्नम और क़दमों के नीचे पुल सिरात हो। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, मुतर्जम, स:113)

हज़रत अमर बिन ज़र

हज़रत अमर बिन ज़र رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ बड़े ही जलीलुल-क़दर आबिद व ज़ाहिद थे। उनके हाथ में एक ख़तरनाक ज़ख़्म हो गया, डाक्टरों ने कहा: ये हाथ काटना पड़ेगा आपने फ़रमाया: काट दो। डाक्टरों ने कहा : आपको रस्सियों से जकड़े बग़ैर ऐसा करना ना-मुम्किन है। आपने फ़रमाया: ऐसा ना करो बल्कि जब मैं नमाज़ शुरू करुँ तब काट देना।

चुनाँचे जब आपने नमाज़ शुरू की तो आपका हाथ काट दिया गया और आपको महसूस भी ना हुआ।

अल्लाहु-अकबर! ये थे अल्लाह جل شانه के वो नेक बंदे जो दुनिया और उस की तमाम लज़्ज़तों से मुँह मोड़ कर हमेशा ख़ुदा-ए-वहदहु लाशरीक और उस के हबीब ﷺ को राज़ी करने और आख़िरत को संवारने की फ़िक्र में लगे रहते थे, इसलिए वो दुनिया में भी कामयाब थे और आख़िरत में भी कामयाब व कामरां होंगे, फरमाने इलाही है:

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ۝ (پ:۲۵، الشوریٰ:۴۲، آیت:۲۰)

जो आख़िरत की खेती चाहे हम ने उस के लिए उस की खेती बढ़ाई और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे इस में से कुछ देंगे और आख़िरत में उस का कुछ हिस्सा नहीं। (कंज़ुल ईमान)

इलाही! हम नाकारों और ग़फ़लत शिआरों को भी अपने उन पाक-बाज़ बंदों के तुफ़ैल इबादत का सच्चा ज़ौक़ अता फ़रमा और हमारे दिलों में भी नमाज़ों की मुहब्बत और पेशानियों में सज्दों की तड़प पैदा फ़रमा।

آمین بجاہ حبیبہ سید المر سلین علیہ و آلہ الصلاۃ والتسلیم.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

बाबे दोम

नमाज़ छोड़ने वालों का दर्द-नाक अंजाम

ये एक नाक़ाबिले इनकार हक़ीक़त है कि ईमान के बाद नमाज़ तमाम इबादत व अरकान में सबसे अफ़ज़ल व अहम है। यही वजह है कि क़ुरआने करीम और अहादीसे मुस्तफ़ा علیہ التحیۃ والثنا में जगह जगह नमाज़ क़ायम करने और उसे निहायत खुशूअ व ख़ुज़ू के साथ सही वक़्त पर पाबंदी से अदा करने का ताकीदी हुक्म दिया गया है, और नमाज़ की पाबंदी करने वालों को ख़ूब ख़ूब सराहा गया, दुनिया में नमाज़ पढ़ने की वजह से रिज़्क़ में जियादती, उम्र में बरकत और दिल व जिगर के मुनव्वर व मुतमइन होने की ख़ुश-ख़बरी दी गई। क़ब्र की घटाटोप तारीकी और वहशत-नाक मंज़िल में नमाज़ी के लिए नमाज़ को मूनिस व ग़मगुसार बनाए जाने का वादा किया गया, और सबसे बड़ी बात ये है कि नमाज़ों की निगहबानी (पाबंदी) करने वालों को जन्नत-उल-फ़िरदौस का वारिस क़रार दिया गया, चुनाँचे इरशादे रब्बानी है:

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(پ:۱۸، المؤمنون:۲۳، آیت:۹، ۱۰، ۱۱)

और वह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं यही लोग वारिस हैं कि फ़िरदौस की मीरास पाएँगे वो उस में हमेशा रहेंगे। (कंज़ुल ईमान)

लेकिन इसी के साथ उन लोगों के हक़ में जो नमाज़ों से ग़फ़लत बरतते हैं ऐसी सख़्त व शदीद वईदें वारिद हुईं जिनको पढ़ कर कलेजा दहल जाता है और अक़ल हैरान हो जाती है।

आप भी इन वईदों पर मुश्तमिल आयात व अहादीस का मुताला करें और उस के मआनी व मफ़ाहीम पर संजीदगी से ग़ौर करें। मुझे यक़ीन है कि अगर आपने दुनिया की लालच को छोड़ कर ख़ालिक़ व मालिक के इरशादात और उस के हबीब ﷺ के फ़रामीन को पढ़ना

शुरु किया तो ज़रूर आपके रौंगटे खड़े हो जाऐंगे और ख़ौफ़े ख़ुदा व अज़ाबे जहन्नम से आपका दिल थर थराने लगेगा।

बे-नमाज़ीयों के लिए वईदे इलाही

क़ुरआन मजीद में है कि जब जन्नती जहन्नमियों से पूछेंगे कि तुम्हें कौन सा अमल जहन्नम में ले गया, तुम किस गुनाह की वजह से दोज़ख़ में गए? तो वो निहायत हसरत व अफ़सोस के साथ जवाब देंगे कि हम दुनिया में नमाज़ नहीं पढ़ते थे। इरशादे रब्बानी है:

فِیْ جَنّٰتٍ ۛؕ یَتَسَآءَلُوْنَ ۙ۝ عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ۙ۝ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّیْنَ ۙ۝

(پ:۲۹، المدثر:۷٤،آیت:٤۰ تا ٤۳)

बाग़ों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वो बोले हम नमाज़ ना पढ़ते थे । (कंज़ुल ईमान)

मालूम हुआ कि जो शख़्स दुनिया में नमाज़ नहीं पढ़ता है वो अज़ाबे दोज़ख़ में गिरफ़्तार और ऐसी हौलनाक आतिशे जहन्नम का सज़ावार होगा जिसके ज़िक्र से ही कलेजा मुँह को आने लगता है और अक़्ल जवाब देने लगती है।

आतिशे जहन्नम की होलनाकियां

हुज़ूर सरवरे कायनात ﷺ ने एक मौक़ा पर हज़रत जिबरईले अमीन से फ़रमाया: जिबरईल! मुझे जहन्नम के बारे में बताओ।

हज़रत जिबरईल ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह ! अल्लाह तआला ने जहन्नम को दहकाने का हुक्म दिया तो उस में एक हज़ार साल तक आग दहकाई गई यहां तक कि वो सफ़ेद हो गई, फिर उसे हज़ार साल तक मज़ीद भड़काने का हुक्म मिला यहां तक कि वो लाल हो गई, फिर उसे हुक्मे ख़ुदावंदी से हज़ार साल तक और भड़काया गया तो वो बिलकुल सियाह हो गई अब वो सियाह व तारीक है, ना उस में चिंगारी रोशन होती है और ना ही उस का भड़कना ख़त्म होता है और ना उस के शोले बुझते हैं। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको नबी-ए-बरहक़ बना कर

मबऊस फ़रमाया है, अगर सूई के नाके के बराबर भी जहन्नम खोल दिया जाये तो तमाम अहले ज़मीन फ़ना हो जाएं और क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ भेजा, अगर जहन्नम के फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता भी दुनिया वालों पर ज़ाहिर हो जाये तो ज़मीन की तमाम मख़लूक़ उस की डरावनी सूरत और बदबू की वजह से हलाक हो जाये और क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया, अगर जहन्नम की ज़ंजीरों की एक कड़ी (जिसे अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में ज़िक्र किया है) दुनिया के पहाड़ों पर रख दिया जाये तो वो चूरचूर हो जाएं और वो कड़ी तहतुस्सरा (पाताल) में जा पहुंचे।

हुज़ूर ﷺ ने ये सुनकर फ़रमाया: बस जिबरईल बस, इतना तज़किरा ही काफ़ी है। (मुकाशफ़तुल-क़ुलूब, मुतर्जम, स:397)

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! ऐसी अज़ीयत रसां और तकलीफ़-दह आग से बे नमाज़ियों का पाला पड़ेगा, बल्कि उस से भी ज़्यादा सख़्त अज़ाब उन्हें दिया जाएगा, चुनाँचे दूसरी जगह ख़ुदा-ए-वहदहु ला शरीक उन लोगों के बारे में जो अपनी काहिली और सुस्ती की वजह से नमाज़ें देर से, यानी वक़्त गुज़ार कर पढ़ते हैं। इस तरह इरशाद फ़रमाता है:

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝ (پ:۳۰، الماعون:۱۰۷، آیت:٤، ٥)

तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं। (कंज़ुल ईमान)

वैल (وَيْل) किसे कहते हैं?

जहन्नम में एक घाटी है जिसकी सख़्ती से जहन्नम भी पनाह मांगता है, उस का नाम वैल है। जानबूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उस के मुस्तहिक़ हैं। (बहारे शरीयत, स:3, ज:3)

तफ़सीरे रूहुल बयान शरीफ़ में है:

هُوَوَادٍفِىْ جَهَنَّمَ لَوْجُعِلَتْ فِيْهَا جِبَالُ الدُّنْيَالَمَاعَتْ اَىْ سَالَتْ.

यानी वैल जहन्नम की ऐसी भयानक वादी का नाम है कि अगर उस

में दुनिया के बड़े बड़े पहाड़ डाल दिए जाएं तो वो भी इस की गर्मी और तपिश से पिघल कर बहने लगें। (तफ़सीरे रूहुल बयान: स:34, ज:1)

मुकाशफ़तुल-क़ुलूब में है : वैल का अर्थ सख़्त अज़ाब है, एक क़ौल ये भी है कि वैल जहन्नम की एक घाटी का नाम है, अगर इस में दुनिया के पहाड़ डाले जाएं तो वो भी इस की शदीद गर्मी की वजह से पिघल जाएं। ये घाटी उन लोगों की जगह है जो नमाज़ों में सुस्ती करते हैं और उनको उनके मुक़र्ररा औक़ात से देरी कर के पढ़ते हैं। (मुकाशफ़तुल क़ुलूब, मुतर्जम, स:384)

जहन्नम की ये भयानक घाटी और हलाकत व खराबी उन लोगों के लिए है जो नमाज़ें उनके मुक़र्ररा औक़ात से देरी कर के पढ़ते हैं और वो लोग जो हमेशा अपनी इच्छाओं की तकमील के पीछे पड़े रहते हैं और नमाज़ें छोड़ते हैं उनके बारे में परवरदिगारे आलम इरशाद फ़रमाता है:

فَخَلَفَ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ خَلۡفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوۡفَ يَلۡقَوۡنَ غَيًّا ۙ (مریم: آیت :۵۹)

तो उनके बाद उनकी जगह वो नाफरमान आए जिन्होंने नमाज़ें गंवाईं और अपनी ख़्वाहिशों के पीछे हुए तो अनक़रीब वो दोज़ख़ में ग़य्य (غَیّ) का जंगल पाएँगे। (कंज़ुल ईमान)

ग़य्य(غَیّ) क्या चीज़ है?

गय्य के माना में अक़्वाल मुख़्तलिफ़ हैं। हज़रत वहब बिन मंबा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं: जहन्नम में एक नहर है जिसकी गर्मी बहुत तेज़ और मज़ा इंतिहाई ना पसंदीदा है। अगर इस नहर का एक क़तरा भी इस दुनिया में टपक जाये तो पूरी दुनिया हलाक हो जाये। इसी नहर का नाम "غَیّ" है।

❋ हज़रत इबने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं: जहन्नम में एक ऐसी घाटी है जिसकी शिद्दते हरारत से जहन्नम की दूसरी घाटियां रोज़ाना ख़ुदा-ए-तआला की बारगाह में हज़ार बार पनाह माँगती हैं। इसी घाटी का नाम गय्य है। अल्लाह جل شانہ ने उसे नमाज़ और जमाअत छोड़ने वालों के लिए तैयार किया है।

❋ हज़रत कअब رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं: जहन्नम में एक ऐसी घाटी है जिसकी गहराई और गर्मी बयान से बाहर है। इस में एक कुवाँ है

जिसका नाम हबहब है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है तो अल्लाह तआला वो कुँआं खोल देता है जिससे वो पहले की तरह भड़कने और जोश मारने लगती है। इसी वादी का नाम गय्य है। (दुर्रतुन नासिहीन ब-हवाला लोबाबुत-तफ्सीर, स:137)

❋ मुसन्निफ़े बहारे शरीयत हज़रत अल्लामा अमजद अली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं: गय्य जहन्नम की एक घाटी है जिसकी गर्मी और गहराई सबसे ज़्यादा है ।इस में एक कुँआं है जिसका नाम हबहब है, जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है तो अल्लाह तआला इस कुँवें को खोल देता है जिससे वो बदस्तूर भड़कने लगती है । ये कुँआं बे नमाज़ियों, ज़ानियों, शराबियों, सूदखोरों और माँ बाप को तकलीफ देने वालों के लिए है। (बहारे शरीयत, स:4, ज:3)

अल्लाहु-अकबर! वो कैसी तकलीफ देने वाली घड़ी होगी और वो कैसा भयानक समां होगा जब अल्लाह तआला नमाज़ से ग़फ़लत बरतने और उसे ज़ाए करने वालों को वैल जैसी ख़तरनाक घाटी और हबहब जैसे जान-लेवा कुँवें में जाने का हुक्म सादिर फ़रमाएगा जिसकी शिद्दते हरारत और हिद्दत व तपिश (तेज़ी, गर्मी) से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है।

इस वैल और हबहब में अज़ाब की शिद्दत का अंदाज़ा हुज़ूर सरवरे कायनात ﷺ के इस इरशाद पाक से लगाऐं कि आप फ़रमाते हैं: जहन्नम का मामूली अज़ाब ये होगा कि दोज़ख़ी को आग के जूते पहनाए जाऐंगे जिसकी गर्मी से उस का दिमाग़ खौलता होगा । (मुकाशफ़तुल-क़ुलूब, मुतर्जम स:303)

जब मामूली और सबसे हल्के अज़ाब का ये हाल है तो सरापा आग के कुँवें और उस घाटी में अज़ाब पाने वालों का हाल क्या होगा जिससे ख़ुद जहन्नम भी ख़ाइफ़ व तरसाँ है और ख़ुदा की पनाह मांगता है।

उख़रवी नुक़्सान से बचने की सूरत

एक जगह परवरदिगारे आलम अपने हबीब ﷺ के उम्मतियों पर फ़ज़्ल व करम की बारिश फ़रमाता है और उन्हें दुनयवी व उख़रवी

नुक़्सान व ख़सारे से बचने की तरग़ीब देता है तो उनसे इस तरह ख़िताब फ़रमाता है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝

(پ:۲۸، المنٰفقون:۶۳، آیت ۹)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल ना तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल ना करे और जो ऐसा करे तो वही लोग नुक़्सान में हैं। (कंज़ुल ईमान)

मतलब ये है कि अगर तुम फ़लाह व कामयाबी चाहते हो तो माल व दौलत और बीवी बच्चों की मुहब्बत में फंस कर नमाज़े पंजगाना से ग़ाफ़िल मत हो जाओ, क्यों कि जो लोग दुनिया में मशग़ूल हो कर दीन को भुला देते हैं और माल की मुहब्बत में अपने हाल की परवाह नहीं करते, नीज़ औलाद की ख़ुशी के लिए राहते आख़िरत से ग़ाफ़िल रहते हैं वही लोग नुक़्सान और घाटे में हैं।

हज़रत अली मुर्तज़ा رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं: लोगो! बा-ख़बर रहो, तुम मरने वाले हो, मौत के बाद उठाए जाओगे और अपने आमाल की जज़ा व सज़ा पाओगे, तुम्हें दुनिया की ज़िंदगी धोके में मुबतला ना कर दे ये मसाइब में लिपटी हुई, नापायदारी में मशहूर, धोके से मौसुफ और इस की हर चीज़ खतम होने वाली है। ये अपने चाहने वालों में डोल की तरह है, हमेशा एक हालत पर नहीं रहती, इस में उतरने वाला मुसिबतों से नहीं बच सकता, कभी तो ये अपने चाहने वालों पर ख़ुशी व मुसर्रत बिखेरती है और कभी तकलीफ देती है, इस की हालतें मुख़्तलिफ़ हैं, ये अदलती बदलती रहती है इस में आराम क़ाबिले मज़म्मत और विसाते माल नापायदार है ये अपने बसने वालों को तीरों की तरह कमान से निकल कर निशानों पे मारती और उन्हें मौत से हमकनार करती रहती है ।(मुकाशफ़तुल-क़ुलूब, मुतर्जम, स:247)

लिहाज़ा ऐ मुसलमानो! तुम दुनिया की रंगीनियों में फंस कर नमाज़ों और दूसरे अहकामे शरइया से ग़ाफ़िल ना हो जाओ, बल्कि आख़िरत

की सरमदी नेमतों के हुसूल के लिए अहकामे ख़ुदा व रसूल ﷻ व ﷺ बजा लाओ क्यों कि ये दुनिया फ़ानी है, उसे छोड़कर जाना है और आख़िरत की नेमतें बाक़ी रहने वाली हैं और वहां हमेशा रहना है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरेलवी رحمۃ اللہ علیہ इस फ़रेबकार, मक्कार दुनिया के बारे में फ़रमाते हैं

दुनिया को तु क्या जाने ये बिस की गाँठ है हर्राफ़ा
सूरत देखो ज़ालिम की तो कैसी भोली-भाली है
शहद दिखाए ज़हर पिलाए क़ातिल डायन शौहर कुश
इस मुरदार पे क्या ललचाया दुनिया देखी भाली है

मैदाने महशर की कैफ़ियत

मेरे प्यारे इस्लामी भाईओ! थोड़ी देर के लिए आप इस फ़ानी दुनिया की झूटी आराइश व ज़ेबाइश से अलग हो कर उस दिन की होलनाकी व पशेमानी पर ग़ौर फ़रमाएं जिस दिन कि मैदान महशर में ज़मीन व आसमान की तमाम मख़लूक़, फ़रिश्ते, जिन, इंसान, शैतान, जानवर, दरिंदे, परिंदे सब जमा होंगे, ज़मीन तांबे की बना दी जाएगी और आसमान फ़ौलाद का हो जाएगा, फिर सूरज निकलेगा, उस की गर्मी मौजूदा गर्मी से बहुत ज़्यादा होगी, ये लोगों के सरों पर एक कमान के फ़ासिला के बराबर आ जाएगा, उस वक़्त अर्शे इलाही के साया के इलावा कहीं साया ना होगा। सूरज की शदीद तमाज़त और सख़्त गर्मी की वजह से हर जान-दार बेपनाह मुसीबत में मुबतला होगा। उस वक़्त लोग अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िरी के ख़्याल से इंतिहाई शर्मिंदा होंगे और उन पर ज़बरदस्त ख़ौफ़ व हरास तारी होगा। उनके हर बाल से पसीना बहने लगेगा यहां तक कि वो मैदाने महशर में पानी की तरह भर जाएगा । और लोगों के जिस्म गुनाह के बराबर पसीने में डूबे होंगे, हर तरफ़ नफ़सी-नफ़सी का आलम होगा, किसी को किसी का होश नहीं रहेगा । ऐसी हैबतनाक घड़ी में जब पूरी ज़िंदगी का हिसाब लिया जाएगा तो सबसे पहले नमाज़ के बारे में पूछा जाएगा। इसी मज़मून को आरिफ़ बिल्लाह शेख़ शरफ़ुद्दीन अबू तव्वामा

رحمۃ اللہ علیہ ने इस तरह अदा किया है।

اوّلیں پرسش نماز بود　　روز محشر کہ جاں گداز بود

इस ख़ौफ़नाक दिन से अल्लाह جل شانه के वो फ़रमाँ बरदार बंदे भी कांपते रहते हैं जो ज़िक्र व ताअत इलाही में निहायत मुस्तइद और नमाज़ों की अदाएगी में बेपनाह सरगर्म होते हैं, जैसा कि अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है:

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْاَبْصَارُ ۙ (پ:۱۸، النور:۲٤، آیت: ۳۷)

वो मर्द जिन्हें ग़ाफ़िल नहीं करता कोई सौदा और ना ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह की याद और नमाज़ बरपा रखने और ज़कात देने से, डरते हैं उस दिन से जिसमें उलट जाऐंगे दिल और आँखें। (कंज़ुल ईमान)

मेरे इस्लामी भाईओ! उनके दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा इस क़दर पाया जाता है कि वो अपने अच्छे काम के बावजूद उस दिन की होलनाकी से डरे हुए हैं और ये समझते हैं कि हमसे अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा नहीं हो सका जब कि अल्लाह तआला ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ नमाज़ पढ़ने वालों के संबंधित इरशाद फ़रमाता है:

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خَاشِعُوْنَ ۙ (پ:۱۸، المؤمنون:۲۳، آیت: ۱،۲)

बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले जो अपनी नमाज़ में गिड़गिड़ाते हैं।(कंज़ुल ईमान)

मगर अफ़सोस सद-अफ़्सोस! आज हम नमाज़ जैसी अहम और मुअक्कद (ज़रुरी) इबादत से ग़फ़लत बरत रहे हैं और फ़ानी दुनिया की बेकार दौलतें हासिल करने में इस क़दर मशग़ूल हो गए हैं कि मरने के बाद क़ब्र, मैदाने महशर और जहन्नम के होलनाक अज़ाब को भी बिलकुल भुल चुके हैं जब कि हमारी बेबसी का आलम ये है कि हमें इतना भी नहीं मालूम कि जो दौलत हम यहां जमा कर रहे हैं उस से इस दुनिया में फ़ायदा उठा सकते हैं या नहीं ? चुनाँचे एक शायर ने इस हक़ीक़त की जानिब इस तरह इशारा किया है

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं

हमें चाहिए कि हम इस हक़ीकत को पढ़ कर दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करें और अपने सीनों को मुहब्बते रसूल का मदीना बनाएँ क्यों कि जब तक ज़िंदगी का चिराग़ टिमटिमा रहा है ख़ुदा की बारगाह में तौबा व इस्तिग़फ़ार का मौक़ा हासिल है। लिहाज़ा अगर हमने ख़ुदाए वहदहु ला-शरीक की ना-फ़रमानियों से अपना नाम-ए-आमाल काला कर लिया है तो अब भी वक़्त है कि हम नदामत व पशेमानी के साथ सत्तार व ग़फ़्फ़ार की बारगाह में अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें और बाक़ी ज़िंदगी उस की इताअत व फ़रमाँ बरदारी में गुज़ारें, इसी में हमारे लिए कामयाबी व नजात है।

अंधेरा घिरा अकेली जान दम घुटता दिल उकताता
ख़ुदा को याद कर प्यारे वो साअत आने वाली है

(इमाम अहमद रज़ा)

बे नमाज़ियों से संबंधित इरशादे रसूल

हुज़ूर सरवरे कायनात फ़ख़्रे मौजूदात ﷺ ने नमाज़ में सुस्ती करने और उसे छोड़ने वालों के लिए ऐसी ऐसी डरावनी वईदें बयान फ़रमाई हैं जिन्हें पढ़ने से दिल में कपकपी और जिस्म में थर-थराहट पैदा होजाती है वक़्त गुज़ार कर नमाज़ पढ़ने वालों के बारे में सरकारे दो-आलम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं:

مَنْ تَرَكَ الصَّلٰوةَ حَتّٰى مَضٰى وَقْتُهَا عُذِّبَ فِي النَّارِ حُقُبًا (تفسير روح البيان، ص:٣٤، ج:١)

जिसने नमाज़ में सुस्ती की यहां तक कि उस का वक़्त गुज़र गया उसे जहन्नम में एक हुक़ुब अज़ाब दिया जाएगा।

हुक़ुब की तशरीह करते हुए साहिबे तफ़सीरे रूहुल बयान عليه الرحمة والرضوان फ़रमाते हैं: एक हुक़ुब अस्सी साल का होगा और हर साल तीन सौ साठ दिन का होगा और हर दिन दुनिया के दिनों के एतबार से एक हज़ार साल का होगा।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! आप अपने माहौल और दुनिया के बरस से इस का हिसाब लगाऐं तो आपको मालूम होगा कि एक हुक़ुब इस दुनिया के दो करोड़ अठ्ठासी लाख साल के बराबर होगा।

अल्लाहु अकबर! ये ग़ौर करने का मुक़ाम है कि जब अपनी काहिली और सुस्ती की वजह से एक वक़्त की नमाज़ छोडने वाले इस वईदे शदीद और अज़ाबे मोहलिक के मुस्तहिक़ हैं तो उन नमाज़ छोडने वालों का अज़ाब कितना अज़ीयत-नाक होगा जो क़ज़ा भी नहीं पढ़ते।

(نَعُوْذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی مِنْ غَضَبِہٖ)

बे नमाज़ियों के बारे में एक जगह हुज़ूर ﷺ इस तरह इरशाद फ़रमाते हैं : مَنْ تَرَکَ الصَّلٰوۃَ مُتَعَمِّدًا کُتِبَ اسْمُہٗ عَلٰی بَابِ النَّارِ. (کنز العمال،ص:۷۱، ج:٤)

जिसने जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ दी उस का नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया गया जिससे वो दाख़िल होगा।

हुज्जतुल-इस्लाम इमामे ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ से मरवी है आप इरशाद फ़रमाते हैं: क़यामत के दिन सबसे पहले नमाज़ छोडने वामों के मुँह काले किए जाऐंगे और जहन्नम में एक वादी है जिसे लमलम कहा जाता है, उस में साँप रहते हैं, हर साँप ऊंट जितना मोटा और एक माह के सफ़र के बराबर लंबा है, वो बेनमाज़ी को डसेगा और उस का ज़हर सत्तर साल तक बेनमाज़ी के जिस्म में जोश मारता रहेगा, फिर उस का गोश्त गल जाएगा। (मुकाशफ़तुल-क़ुलूब, मुतर्जम, स:393)

एक दिन नबी-ए-पाक علیہ الصلوٰۃ والتسلیم ने सहाब-ए-किराम के झुरमुट में नमाज़ की अज़मत व अहमियत का ज़िक्र किया तो इस तरह इरशाद फ़रमाया:

مَنْ حَافَظَ عَلَیْھَا کَانَتْ لَہٗ نُوْرًا وَّبُرْھَانًا وَّنَجَاۃً یَّوْمَ الْقِیَامَۃِ، وَمَنْ لَّمْ یُحَافِظْ عَلَیْھَا لَمْ تَکُنْ لَہٗ نُوْرًا وَّلَا بُرْھَانًا وَّلَا نَجَاۃً، وَّکَانَ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ مَعَ قَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَھَامَانَ وَاُبَیِّ بْنِ خَلْفٍ• (مشکوٰۃ،ص:۵۸)

जो इस (नमाज़) की पाबंदी करेगा उस के लिए नमाज़ क़यामत के दिन नूर, दलील और ज़रीय-ए-नजात होगी । और जो उस की पाबंदी नहीं करेगा उस के लिए ना नूर होगी, ना दलील और ना ही ज़रीय-ए-नजात, और वो क़यामत के दिन क़ारून व फ़िरऔन और हामान और उबइ बिन ख़लफ़ के साथ होगा।

बे नमाज़ी का हश्र

बे नमाज़ियों का हश्र उन चारों के साथ क्यों होगा ?इस सिलसिले में हज़रत अल्लामा सफ़ोरी शाफ़ई رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि इन चारों का ज़िक्र खासतौर से इसलिए किया गया है कि ये काफिरों के सरदार हैं और अक्सर व बेशतर नमाज़ें इन ही वजूहात की बुनियाद पर छूटती हैं जो इन बदतरीन कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन में पाई जाती थीं ।तो जिसने दुनयावी तिजारत को फ़रोग़ देने या ज़्यादा पैसा कमाने की फ़िक्र में नमाज़ छोड़ दी उस का हश्र उबइ बिन ख़लफ़ के साथ होगा, और जिसने अपनी हुकूमत व सलतनत की वजह से नमाज़ में ग़फ़लत बरती उस का हश्र फ़िरऔन के साथ होगा, और जिसके लिए माल व दौलत की कसरत नमाज़ छोड़ने का सबब बनी उस का हश्र कारून के साथ होगा, और जो वज़ारत व मुलाज़मत की वजह से नमाज़ से ग़ाफ़िल रहा उस का हश्र हामान के साथ होगा। (नुज़हतुल मजालिस , स:126)

ये हदीस पाक दर्से इबरत है उन इक़तिदार वालों और अहले सदारत व वज़ारत के लिए जो चंद रोज़ा ज़िंदगी के फ़ानी ऐश व आराम के लिए नमाज़ों से बिलकुल ग़ाफ़िल हो जाते हैं और अपनी गंदी सियासत की धाक जमाने के लिए बिला ख़ौफ़ व ख़तर ये कहते फिरते हैं बा-मुसलमां अल्लाह अल्लाह, बा-बरहमन राम-राम। (نَعُوْذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی مِنْ ذٰلِكَ)

और ये मज़कूरा बाला हदीस पाक इन ताजिरों और मुलाज़िमों के लिए भी दरसे इबरत है जो क़ारून का ख़ज़ाना जमा करने की फ़िक्र में इस क़दर मुसतग़रक (डुबाहुवा) होते हैं कि उन्हें अज़ान की आवाज़ तक नहीं सुनाई देती और ना ही नमाज़ के लिए उठने की फ़ुर्सत मिलती है ।और अगर किसी साहिबे ख़ैर ने नमाज़ की तरफ़ रग़बत दिलाई तो बड़ी ढिटाई से कहते हैं: क्या बताएं साहेब! काम ही कुछ ऐसा है, अगर उठकर चले जाएं तो बहुत नुक़्सान हो जाएगा ।

ए मेरे प्यारे इस्लामी भाईयों! अगर आप भी इस किस्म की गंदी सियासत व तिजारत या मुलाज़मत और हुसूले दौलत में मुबतला हैं तो

आज ही उनसे तौबा कर लें और हलाल तरीक़े से रोज़ी कमाने के लिए तिजारत व मुलाज़मत करें और नमाज़ों से कभी ग़ाफ़िल ना हों, क्यों कि हमें एक दिन यहां से जाना है और क़ब्र व हश्र की मुश्किल तरीन मंज़िल से गुज़रना है। क्या ही बेहतर नसीहत की है जिसने ये कहा है

मुसलमानो ! नमाज़ों के लिए तैयार हो जाओ
क़यामत आने वाली है ज़रा होशयार हो जाओ

बे नमाज़ी, सहाबा की नज़र में

हज़रत अबदुल्लाह बिन शफ़ीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं:

كَانَ اَصْحَابُ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَرَوْنَ شَيْئًا مِنَ الْاَعْمَالِ تَرْكُهٗ كُفْرٌ غَيْرَ الصَّلٰوةِ. رواه الترمذی.

हुज़ूर सरवरे कायनात صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم के सहाबा किसी अमल के तर्क को कुफ़्र नहीं समझते थे सिवाये नमाज़ के। उसे इमाम तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

मुसन्निफ़ बहारे शरीयत फ़क़ीहे आज़म हज़रत अल्लामा अमजद अली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं : बहुत सी ऐसी हदीसें हैं जिनका ज़ाहिर ये है कि क़सदन नमाज़ का तर्क कुफ़्र है और कुछ सहाबा-ए-किराम मसलन अमीरुल मोमेनीन हज़रत फ़ारूक़ आज़म, अब्दुर रहमान बिन औफ़, अबदुल्लाह बिन मसऊद, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, मआज़ बिन जबल, अबू हुरैरा और अबु दर्दा رضی اللہ تعالیٰ عنہم का यही मज़हब था, और कुछ अइम्मा मसलन इमाम अहमद बिन हंबल, इसहाक़ बिन राहवै, अब्बदुल्लाह बिन मुबारक और इमाम नख़ई का भी यही मज़हब था (जान बूझ कर नमाज़ छोड़ने वाला काफ़िर है)। अगरचे हमारे इमामे आज़म व दीगर अइम्मा नीज़ बहुत से सहाब-ए- किराम उस की तकफ़ीर नहीं करते। (यानी तारिक नमाज़ को काफ़िर नहीं कहते) फिर भी ये क्या थोड़ी बात है कि इन जलीलुल-क़दर हज़रात के नज़दीक ऐसा शख़्स काफ़िर है। (बहारे शरीयत स:9, ज:3)

फ़ुक़हा-ए-किराम फ़रमाते हैं: जो क़सदन नमाज़ छोड़े अगर चे एक

ही वक़्त की, वो फ़ासिक़ है । और जो नमाज़ ना पढ़ता हो उसे क़ैद किया जाये यहां तक कि वो तौबा करे और नमाज़ पढ़ने लगे।बल्कि अइम्मा-ए-सलासा मालिक, शाफ़ई और अहमद رضی اللہ عنہم के नज़दीक सुल्ताने इस्लाम को उस के क़त्ल का हुक्म है।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयों! अब तक आपने तारेकीने नमाज़ के लिए वईदों पर मुश्तमिल आयाते कुरआनिया व अहादीस नबविय्या على صاحبها التحية والثنا और सहाब-ए-किराम व फ़ुक़हा-ए-इज़ाम के इरशादात व अक़्वाल की एक हल्की सी झलक मुलाहिज़ा फ़रमाई है। अब आईए ज़रा तारिकिने नमाज़ के कुछ वो दर्द-नाक अंजाम भी मुलाहिज़ा करते चलें जिन्हें अल्लाह तआला ने दूसरे लोगों की इबरत के लिए इसी दुनिया में ज़ाहिर फ़रमा दिया है।

अहदे नबवी का एक दिल-दोज़ वाक़िआ (1)

एक दिन रसूले गिरामी वक़ार ﷺ सहाब-ए-किराम के झुरमुट में तशरीफ़ फ़रमाँ थे कि एक देहाती नौजवान रोता हुआ मस्जिद के सामने आया । हुज़ूर अहमदे मुज्तबा मुहम्मदे अरबी मुस्तफ़ा ﷺ ने

(1) ये वाक़िया मौलाना उसमान बिन हसन बिन अहमद ख़ोबवी की किताब में दर्ज है। इस में बाअज़ बातें फ़हम से बाला-ए-तर हैं, मसलन: (1) सहाबिए रसूल का तारिके नमाज़ होना, जब कि इस ज़माना में मुनाफ़िक़ीन भी नमाज़ पढ़ा करते थे, बल्कि जमाअत में हाज़िर हुआ करते थे। (2) सरकार ﷺ की दुआ से अज़ाबे मसख़ उठा लिया जाना, फिर नमाज़े जनाज़ा के बाद इसी अज़ाब में मुबतला कर दिया जाना, जब कि अल्लाह جل شانه जिस बंदे से अज़ाब उठा ले उस को फिर उसी अज़ाब में मुबतला नहीं करता । इन वजूहात के पेशे नज़र ये रिवायत मौज़ू और नाक़ाबिले एतबार मालूम होती है सदरुश शरीया अल्लामा अमजद अली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ इस वाक़िया के तअल्लुक़ से फ़रमाते हैं: बिलजुमला अगर ये रिवायत सनद से मर्वी होती तो सनद देखकर हुक्म लगाया जाता कि कैसी है, मगर उसूले मज़हब के बज़ाहिर ख़िलाफ़ है लिहाज़ा काबिले एतबार नहीं । तफ़सील के लिए फतावा अमजदिया, ज:1, स: 44-ओ-45 का मुताला फ़रमाएं अब अगर आपको इस रिवायत की कोई बेहतर सनद मिल जाये तो बरा-ए-मेहरबानी मुझ नाचीज़ को भी इस की इत्तिला दें, वर्ना उस के बयान से बचें । ان اللہ لایضیع اجر المحسنین । 12। साजिद अली मिस्बाही)

उस नौजवान से रोने का सबब दरयाफ़्त किया।

नौजवान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे बाप का इंतिक़ाल हो गया है और हाल ये है कि मेरे पास ना तो उस के कफ़न का इंतिज़ाम है और ना ही कोई उसे नहलाने वाला है। या रसूलल्लाह ! मैं अपनी इसी बेकसी व बेबसी पर आँसू बहा रहा हूँ।

ये दर्द भरा वाक़िया सुनकर हुज़ूर सरवरे दो-आलम ﷺ ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर फ़ारूक़े आज़म (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) को इस काम की अंजाम दहि का हुक्म फ़रमाया।

ये दोनों हज़रात मय्यत के पास तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वो मरने वाला काले ख़िंज़ीर की तरह हो गया है।

ये इबरत नाक व हैरत-अंगेज़ सूरते हाल देखकर वो दोनों हज़रात नबी-ए-पाक علیہ الصلوٰۃ والسلام की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! वो तो काले ख़िंज़ीर की तरह हो गया है, अब हम क्या करें?

जब सरकार दो-आलम ﷺ ने ये सुना तो ख़ुद मय्यत के पास तशरीफ़ ले गए और दुआ फ़रमाई जिसकी बरकत से मरने वाला अपनी पहली सूरत पर लौट आया। और रसूलुल्लाह ﷺ ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

फिर जब सहाब-ए-किराम رضوان اللہ تعالی علیہم أجمعین उस को दफ़न करने चले तो देखा कि वो काले ख़िंज़ीर की तरह हो गया है। तो हुज़ूर ﷺ ने उस नौजवान से पूछा: ऐ नौजवान! तुम्हारा बाप अपनी ज़िंदगी में क्या करता था?

उस नौजवान ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! ये तारिके नमाज़ था यानी नमाज़ नहीं पढ़ता था। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया: ऐ मेरे सहाबा! बे नमाज़ियों का अंजाम देख लो। अल्लाह तआला क़यामत के दिन बे नमाज़ियों को काले ख़िंज़ीर की शक्ल में उठाएगा। (نَعُوْذُ بِاللّٰہِ تَعَالٰی مِنْ ذَالِكَ)। (दुर्रतुन नासिहीन ब हवाला बहजतुल अनवार, स:140)

अहदे सिद्दीक़ी का एक इबरतनाक मंज़र

हुज़ूर ﷺ के यारे ग़ार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ के दौरे ख़िलाफ़त में एक आदमी का इंतिक़ाल हो गया। जब हाज़िरीन उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के लिए खड़े हुए तो देखा कि कफ़न हरकत कर रहा है। उन्होंने कफ़न हटाया तो देखा कि उस की गर्दन में एक साँप लिपटा हुआ है जो उस का गोश्त खा रहा है और ख़ून चूस रहा है इन्होंने उसे मारना चाहा तो साँप ने कहा : لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰه कोई माबूद नहीं सिवा अल्लाह के मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं। आप लोग मुझे क्यों मारना चाहते हैं जब कि मैंने ना तो कोई गुनाह किया है और ना ही मेरा कोई क़सूर है सुनो! अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं उसे क़यामत तक अज़ाब दूं।

उन्होंने साँप से पूछा : उस की ग़लती क्या है कि तुम्हें उस को अज़ाब देने पर मुक़र्रर किया गया है?

साँप ने कहा: उस की तीन गलतियां हैं पहली ग़लती तो ये है कि ये शख़्स अज़ान सुनकर जमाअत में हाज़िर नहीं होता था दूसरी ग़लती ये है कि अपने माल की ज़कात नहीं निकालता था और तीसरी ग़लती ये है कि उलमा-ए-दीन की बातें नहीं सुनता था। इसलिए उस को ये अज़ाब दिया जा रहा है। (दुर्रतुन नासिहीन स:140)

मदीना की एक औरत का दर्द-नाक अज़ाब

इबने अबिद्दुनिया ने उमर बिन दीनार से रिवायत किया कि मदीना शरीफ़ में एक शख़्स की बहन मर गई जब वो अपनी मुर्दा बहन को दफ़न करने गया तो बे-ख़बरी में उस की एक थैली क़ब्र में गिर गई। जब सब लोग उसे दफ़न कर के वापस हुए तो उस शख़्स को अपनी थैली का ख़्याल आया वो दौड़ा हुआ बहन की क़ब्र पर पहुंचा और मिट्टी हटाना शुरु कर दिया ताकि अपनी थैली निकाले। जब थोड़ी सी क़ब्र खुली तो उस की आँखें फटी की फटी रह गईं। उसने देखा कि क़ब्र में

आग के शोले भड़क रहे हैं। इस दिल ख़राश मंज़र से वो काँप उठा, जैसे-तैसे क़ब्र पर मिट्टी डाली और इंतिहाई ग़मगीन, रोता हुआ माँ के पास आया और पूछा : माँ! बताओ मेरी बहन क्या करती थी कि उसे क़ब्र में इस तरह दर्द-नाक अज़ाब हो रहा है। जब माँ ने सुना कि बेटी की क़ब्र में आग के शोले भड़क रहे हैं तो उस की भी आँखें अश्क-बार हो गईं और उसने रोते हुए कहा: बेटा! तेरी बहन नमाज़ में सुस्ती करती रहती थी और नमाज़ें उनके औक़ात से देरी कर के पढ़ा करती थी। (शरहुस सुदूर स:161 व मुकाशफ़तुल-क़ुलूब स:394)

अल्लाहु-अकबर! जब ये हाल उस औरत का हुआ जो नमाज़ तो पढ़ती थी लेकिन वक़्त की पाबंदी नहीं करती थी तो उन औरतों का क्या हाल होगा जो सिरे से नमाज़ ही नहीं पढ़ती हैं।

या अल्लाह! हम तेरी बारगाह में तेरे हबीबे पाक ﷺ का वास्ता देते हैं कि तू हम सबको सही औक़ात में नमाज़ें अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उन्हें अपने फ़ज़ल व करम से क़बूल फ़रमा। आमीन।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! आप नमाज़ की अज़मत व अहमियत समझें, खुद भी नमाज़ बा-जमाअत की पाबंदी करें और अपने बीवी बच्चों, दोस्तों, रिश्तेदारों और तमाम मिलने-जुलने वालों को भी इस का शौक़ दिलाएँ ताकि अज़ाबे इलाही और बे-नमाज़ियों की नहूसत से महफ़ूज़ रहें। क्योंकि नमाज़ छोडने वालों पर जब क़हरे इलाही नाज़िल होता है तो उनके पास पड़ोस में रहने वाले भी इस की ज़द में आ जाते हैं। कभी भूखमरी का शिकार होते हैं तो कभी गांव की हरयाली ख़त्म हो जाती है। कभी मख़लूक़े ख़ुदा इताअत से मुँह मोड़ती है तो कभी पूरी बस्ती ही तबाह व बर्बाद हो जाती है। अरे हद तो ये है कि बे नमाज़ी की नहूसत से शैताने लईन भी भागता हुआ नज़र आता है कि कहीं इस गुनहगार के साथ रहने की वजह से वो भी अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार ना हो जाये जैसा कि दर्ज ज़ेल वाक़ियात से ज़ाहिर है। आप उन्हें संजीदगी से पढ़े हैं और सबक़ हासिल करें।

समुंद्र में बे-नमाज़ी की नहूसत का असर

हज़रत अल्लामा सफ़ोरी शाफ़ई رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लामा नीशापूरी की किताब अन्नुज़हा में लिखा हुआ देखा कि एक बुज़ुर्ग सफ़र करते हुए किसी समुंद्र के किनारे पहुंचे तो ये देखकर इंतिहाई हैरान व अचंभित हुए कि इस समुंद्र की मछलियाँ एक दूसरे को खाए जा रही हैं। उन्हें गुमान हुआ कि समुंद्र में अकाल पड़ गया है। अभी वो बुज़ुर्ग इसी वहम व गुमान में थे कि ग़ैब से आवाज़ आई : ऐ मेरे प्यारे ! ये अकाल नहीं है, बल्कि उस की वजह ये है कि एक बे-नमाज़ी यहां से गुज़र रहा था जो प्यासा था, उसने पानी पीना शुरू किया, पानी चूँकि खारा (नमकीन) था इसलिए वो पी न सका और अपने मुँह से वापस समुंद्र में डाल दिया। ये उस बे-नमाज़ी के जूठे की नहूसत है कि समुंद्री मछलियाँ एक दूसरे को खाने लगीं । (नुज़हतुल मजालिस स:137, ज:1)

हरे भरे गांव की तबाही का सबब

हज़रते ईसा रूहुल्लाह علیہ الصلوٰۃ والسلام एक मर्तबा सफ़र करते हुए एक ऐसे हरे भरे गांव में पहुंचे जहां हर तरफ़ हरे-भरे पेड़ लहलहा रहे थे, साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ नहरें बह रही थीं और वहां के रहने वाले एक बुलंद व बाला मक़ाम पर जमा हो कर निहायत ख़ुज़ू व खुशूअ के साथ अल्लाह तआला की इबादत कर रहे थे । आप उनके पास तशरीफ़ ले गए, इन्होंने आपकी ख़ूब ताज़ीम व तौक़ीर की । आपने देखा कि उनके पास क़िस्म क़िस्म के खाने के सामान, तरह तरह की पीने की चीज़ें, रंग बिरंगे मेवे, इताअत शिआर व फ़रमाँ बरदार बाल बच्चे और घर वाले हैं और उन की बस्ती हर तरह से निहायत ख़ूबसूरत और काबिले रशक है। थोड़ी देर बाद आप वहां से अपने सफ़र पर रवाना हो गए ।

तीन साल के बाद फिर उस गांव से आपका गुज़र हुआ तो देखा कि वो सब के सब हलाक हो चुके हैं, उनकी बिना कफ़न व दफन की लाशें

बे सेबाति-ए-दुनिया की तस्वीर बन चुकी हैं और उनके आलीशान महल्लात तबाह व बर्बाद खंडरात में तबदील हो चुके हैं।

हज़रते ईसा रूहुल्लाह ﷺ को इस इबरतनाक मंज़र से बहुत अचंभा हुआ, आपने ख़ुदा-ए-तआला की बारगाह में दुआ की और अर्ज़ किया: ए मेरे परवरदिगार! में जानना चाहता हूँ कि ये किस बद अमली की वजह से बरबाद हुए हैं ? क्या इन्होंने नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया था ? क्या इन्होंने तेरी इताअत व फ़रमाँ बरदारी से मुँह मोड़ लिया था?

ग़ैब से आवाज़ आई ऐ ईसा ! ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था । बल्कि वाक़िया ये है कि एक बे नमाज़ी का इस बस्ती से गुज़र हुआ, उसने यहां के पानी से अपना चेहरा धुला, जब उस का गोसाला (धोवन) ज़मीन पर गिरा तो उस की नहूसत की वजह से लहलहाते पेड़ सूख गए, बहती नहरें सूख गईं, बुलंद व बाला मकानात ध्वस्त हो गए और यहां के रहने वाले हलाक हो गए ऐ ईसा! जब नमाज़ छोड़ना दीन को बर्बाद कर देता है तो दुनिया को क्यों नहीं बर्बाद करेगा । (दुर्रतुन नासिहीन स:१३९नुज़हतुल मजालिस स:127, ज:1)

एक बे-नमाज़ी और फ़र्याद़ी ऊंट

हज़रत अक़ील बिन अबी तालिब رضی اللہ عنہ से मर्वी है आप फ़रमाते हैं: एक मर्तबा मैं नबी पाक ﷺ के साथ सफ़र में था तो आपकी ज़ात मुबारका से तीन ईमान अफ़रोज़ व इबरतनाक वाक़ियात का मुशाहिदा हुआ जिनकी वजह से मेरे दिल में इस्लाम की अज़मत बैठ गई ।

उनमें पहला ईमान अफ़रोज़ वाक़िया ये था कि हुज़ूर सरवरे दो-जहाँ ﷺ ने क़ज़ाए हाजत (पेशाब पाखाना) का इरादा फ़रमाया, सामने दूर दूर कुछ पेड़ लगे हुए थे । आपने मुझसे फ़रमाया: अक़ील! उन पेड़ों के पास जाओ और उनसे कहो कि अल्लाह के रसूल फ़रमा रहे हैं : तुम सब मेरे पास आ जाओ और मेरे लिए आड़ बन जाओ क्यों कि मैं पाकी हासिल करना चाहता हूँ ।

मैं इन पेड़ों के पास गया और जैसे ही सरकारे दो-आलम ﷺ का पैग़ाम पहुंचाया वो सब अपनी जड़ों से उखड़ गए और आपके पास आकर खड़े हो गए यहां तक कि आपने ज़रूरत से फ़राग़त हासिल करली। फिर वो सब अपनी जगह वापस लौट गए।

दूसरा वाक़िया ये था कि मुझे रास्ते में प्यास लग गई, मैंने काफ़ी हद तक पानी तलाश किया लेकिन नहीं पा सका तो हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अक़ील! उस पहाड़ पर चढ़ जाओ, उसे मेरा सलाम पेश करो और कहो कि अगर तेरे अन्दर पानी हो तो मुझे सैराब कर दे।

रावी कहते हैं: मैं पहाड़ पर चढ़ गया और उसे सरकारे दो-आलम ﷺ का पैग़ाम पहुंचा दिया। अभी मैं ख़ामोश ही हुआ था कि वो पहाड़ बोल उठा और कहा : आप अल्लाह के रसूल ﷺ की बारगाह में अर्ज़ करें कि जिस दिन अल्लाह جل شانه ने ये आयते करीमा :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ. (پ:۲۸، التحریم:٦٦، آیت: ٦)

ऐ ईमान वालो! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसके ईंधन आदमी और पत्थर हैं। (कंज़ुल ईमान)

नाज़िल फ़रमाई है उसी दिन से मैं इस ख़ौफ़ से रो रहा हूँ कि कहीं वो पत्थर जो जहन्नम का ईंधन है में ही ना हो जाऊं। इसलिए मेरे अंदर का पानी बिलकुल ख़त्म हो चुका है।

और तीसरा इबरतनाक वाक़िया ये था कि हम लोग सफ़र करते हुए चले जा रहे थे कि अचानक एक ऊंट दौड़ता हुआ आया और नबी पाक ﷺ के पास पहुंच कर अर्ज़ करने लगा: يَارَسُوْلَ اللهِ! اَلْاَمَان، اَلْاَمَان

यानी ए अल्लाह के रसूल! मुझे बचा लिजिए, मुझे बचा लिजीए। इतने में एक देहाती दौड़ता हुआ पहुंचा जिसके हाथ में नंगी तलवार थी।

नबी पाक ﷺ ने उस से पूछा : ए नौजवान ! तुम इस बेचारे के साथ किया सुलूक करना चाहते हो?

आराबी ने अर्ज़ किया : या रसूलल्लाह! मैंने उसे भारी रक़म देकर ख़रीदा है लेकिन ये मेरी बात नहीं मानता है इसलिए मैं चाहता हूँ कि

उसे ज़बह करदूं और उस के गोश्त से ही फ़ायदा उठाऊं।

ऊंट ने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह! मैं काम करने के ख़ौफ़ से उस की ना-फ़रमानी नहीं करता हूँ, बल्कि इस के बुरे काम की वजह से इस की बात नहीं मानता और इस के पास से भाग जाना चाहता हूँ ।क्यों कि ये जिस क़बीला में रहता है वो क़बीला इशा की नमाज़ से ग़ाफ़िल हो कर सो जाता है। मैं डरता हूँ कि कहीं ऐसा ना हो कि उन पर अल्लाह तआला का अज़ाब नाज़िल हो तो उनके साथ रहने की वजह से में भी इस अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाऊं।

या रसूलल्लाह ! अगर ये आपसे इशा की नमाज़ पढ़ने का वादा करे तो मैं आपसे वादा करता हूँ कि कभी इसकी ना-फ़रमानी नहीं करूँगा।

हुज़ूर ﷺ ने उस देहाती से नमाज़ ना छोड़ने का वादा लिया और ऊंट उस के हवाला कर दिया फिर अपने घर वापस तशरीफ़ लाए। (दुर्रतुन नासिहीन, स:139)

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! इस वाक़िया से जहां रसूले गिरामी वक़ार ﷺ की रिफ़अते शान व इख़तियार का पता चलता है कि अगर आप पेड़ों को हुक्म दें तो चलने लगें, पहाड़ों को हुक्म दें तो वो बोलने लगें और बेज़ुबान जानवरों को हुक्म करें तो वो इंसानों की तरह बातचीत और ख़ौफ़े ख़ुदा का इज़हार करें । वहीं बे नमाज़ियों की शक़ावत व नहूसत का भी अंदाज़ा होता है कि जानवर भी उनके पास रहना पसंद नहीं करते हैं।

मुसलमानो! कितनी हैरत की बात है कि एक बे ज़बान पहाड़ ने आयते करीमा सुनी तो ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने लगा और इतना रोया कि इस के अंदर का सारा पानी ही ख़त्म हो गया और वही आयते करीमा हमने सुनी तो हमारे दिलों पर उस का कुछ भी असर नहीं हुआ जब कि इस आयते करीमा में "الناس" यानी आदमी का ज़िक्र "الحجارة", यानी पत्थर से पहले है।

मुसलमानो! अल्लाह तआला ने हमें अशरफ़ुल मख़लूक़ात बनाया

और मज़ीद फ़ज़्ल फ़रमाया कि अपने महबूब की उम्मत में शामिल कर के ख़ैरुल उम्मा का ख़िताब दिया इसलिए हमें चाहिए कि हम तमाम मख़लूक़ात से ज़्यादा अपने दिलों में ख़ौफ़े ख़ुदा पैदा करें और जिम चिजों का उसने हुक्म दिया और जिन चीजों उसने रोका उन पर अमल करें, खासतौर से नमाज़े पंजगाना सही वक़्त पर अदा करने की पाबंदी करें क्यों कि नमाज़ दीन का सुतून और ईमान की पहचान है।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! यहां तक पढ़ लेने से तो आपको अंदाज़ा हो ही चुका होगा कि बे नमाज़ी की नहुसतें हर जगह अपना रंग दिखाती हैं। कहीं बे नमाज़ी तन्हा अज़ाबे इलाही में गिरफ़्तार होता है तो कहीं उस के क़रीब रहने वाले भी ग़ज़बे इलाही का शिकार हो जाते हैं लेकिन आपको ये जान कर मज़ीद हैरत होगी कि शैतान लईन भी बे नमाज़ी पर अज़ाबे इलाही नाज़िल होने के ख़ौफ़ से थरथराता और भागता हुआ नज़र आता है, और ऐसा क्यों ना हो जब कि वो देख चुका है कि उस ने एक मर्तबा सजदा करने से इनकार किया तो वह ख़ुदा के दरबार से निकाल दिया गया। ए

गया शैतान मारा एक सजदा के ना करने से

इसलिए जब वो किसी को अपनी तरह मनहूस बनाना चाहता है तो उसे नमाज़ पढ़ने से बहकाता है और ग़ाफ़िल इन्सान जब उस के फंदे में फंस कर नमाज़ छोड़ देता है तो शैतान उस के पास से भागने लगता है जैसा कि निम्न लिखित वाक़िया से मालूम होता है, आप भी उसे ग़ौर से पढ़ें और सबक़ हासिल करें।

बे नमाज़ी मुसाफ़िर और भागता हुआ शैतान

दुर्रतुन नासिहीन में है कि एक आदमी जंगल का सफ़र कर रहा था, एक दिन शैतान भी उस के साथ हो गया और सफ़र करने लगा। वो आदमी सफ़र करता रहा और नमाज़ें छोड़ता रहा यहां तक कि उसने फ़ज्र, ज़ुहर, अस्र, मग़रिब और इशा में से एक भी नमाज़ अदा नहीं की। जब सोने का वक़्त हुआ तो वो सोने की तैयारी करने लगा और शैतान

उस के पास से भागने लगा।

इस मुसाफ़िर ने शैतान से पूछा: तुम मेरे पास से भाग क्यों रहे हो?

शैतान ने कहा: जनाब ! मैंने ज़िंदगी में एक मर्तबा अल्लाह तआला की ना-फ़रमानी की तो खुदा की बारगाह से भगा दिया गया और मलऊन हो गया । और तुमने तो एक दिन में पाँच मर्तबा ख़ुदा-ए-तआला की ना-फ़रमानी की है। मुझे डर लग रहा है कि कहीं ऐसा ना हो कि तेरी ना-फ़रमानियों की वजह से तुम पर अल्लाह तआला का ग़ज़ब व अज़ाब नाज़िल हो और तेरे साथ रहने की वजह से मैं भी इस अज़ाब में मुबतला होजाऊं। इसी लिए तुम्हारे पास से भाग रहा हूँ। (दुर्रतुन नासिहीन स:137)

इबलीस से ज़्यादा बहाने बाज़ शख़्स

तफ़सीरों में है कि पहले ज़माना में लोग इबलीस को देखा करते थे। एक दिन एक शख़्स ने इबलीस से पूछा : ऐ अबू मर्राह (अबू मर्राह इबलीस की कुनिय्यत है) मुझे कोई ऐसा अमल बताओ जिसे करने की वजह से मैं तुम्हारी तरह हो जाऊं।

इबलीस ने हैरत से कहा : अब तक किसी ने मुझसे ऐसा सवाल नहीं किया, आज तू क्यूँ-कर इस किस्म का सवाल कर रहा है?

साइल(सवाल करने वाले) ने कहा : बात ये है कि मैं तुम्हारी तरह बनना चाहता हूँ इसलिए उस का तरीक़ा पूछ रहा हूँ।

इबलीस ने कहा : अगर वाक़ई तू मेरी तरह बनना चाहता है तो नमाज़ को हक़ीर व मामूली समझ (यानी सही वक़्त पर अदा करने की फ़िक्र ना कर) और झूटी सच्ची क़समें खाने में कोई ख़ौफ़ महसूस ना कर।

साइल ने कहा : ऐ इबलीस सुन ! में ख़ुदा-ए-तआला से वादा करता हूँ कि कभी नमाज़ तर्क नहीं करूँगा और ना ही कभी कोई क़सम खाऊंगा।

इबलीस ने कहा : हाए अफ़सोस! मैं तो किसी को अपने से ज़्यादा बहाने बाज़ नहीं समझता था लेकिन आज मालूम हुआ कि तू मुझसे भी बड़ा बहाने बाज़ है ।(रियाज़ुस सालिहीन, स:103)

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! इस वाक़िया से मालूम हुआ कि जो शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ता वो इबलीस की तरह गुमराह व मनहूस है। फ़रिश्ते उस के लिए बद्दुआ करते हैं चुनांचे हदीस शरीफ़ में है:

تَقُوْلُ الْمَلَائِكَةُ لِتَارِكِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ يَا فَاجِرُ، وَلِتَارِكِ صَلٰوةِ الظُّهْرِ يَا خَاسِرُ، وَلِتَارِكِ صَلٰوةِ الْعَصْرِ يَا عَاصِيْ، وَلِتَارِكِ صَلٰوةِ الْمَغْرِبِ يَا كَافِرُ، وَلِتَارِكِ صَلٰوةِ الْعِشَاءِ يَا مُضِيْعُ ضَيَّعَكَ اللّٰهُ • (نزهة المجالس ص:۱۲٦، ج ۱)

फ़रिश्ते फ़ज्र की नमाज़ तर्क करने वाले से कहते हैं : ए बदकार! और ज़ुहर की नमाज़ छोड़ने वाले से कहते हैं : ए ना-मुराद! और अस्र की नमाज़ तर्क करने वाले से कहते हैं : ए नाफ़रमान! और मग़रिब की नमाज़ तर्क करने वाले से कहते हैं ए काफ़िर (नाशुकरे) और इशा की नमाज़ छोड़ने वाले से कहते हैं : ऐ नमाज़ें बरबाद करने वाले !अल्लाह तआला तुझे तबाह व बर्बाद कर दे।

बे नमाज़ियों को फ़रिश्ते इस तरह क्यों ना कहें जब कि नमाज़ छोड़ना ज़िना से भी ज़्यादा बुरा है। चुनांचे हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ की किताब में निम्न लिखित हदीस मौजूद है।

तर्के नमाज़ ज़िना से बद्तर गुनाह

हुज़ूर ﷺ से मर्वी है कि बनी इसराईल की एक औरत हज़रत मूसा की ख़िदमत में आई और अर्ज़ किया : ऐ अल्लाह के नबी! मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया है और मैंने तौबा भी कर ली है। आप अल्लाह तआला से दुआ फ़रमा दें कि वो मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा ले।

हज़रते मूसा ने पूछा : तुने कौन सा गुनाह किया है?

उसने कहा : मैं ज़िना की मुर्तक़िब हुई और जो बच्चा पैदा हुवा में ने उसे क़त्ल कर दिया है।

ये सुनकर हज़रत मूसा कलीमुल्लाह बोले: ऐ बदबख़्त! निकल जा यहाँ से, कहीं तेरी नहूसत की वजह से आसमान से आग आकर हमें भी ना जला दे।

वो औरत शिकस्ता-दिल हो कर वहां से चल पड़ी। तब जिबरईल अमीन علیہ السلام तशरीफ़ लाए और कहा : ऐ मूसा ! अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तूने गुनाह से तौबा करने वाली को क्यों वापस कर

दिया ?क्या तूने इस से भी ज़्यादा बुरा आदमी नहीं देखा?

हज़रते मूसा ने पूछा: ए जिबरईल! उस औरत से ज़्यादा बुरा कौन है?

जिबरईल ने फ़रमाया : उस से बुरा वो शख़्स है जो जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ दे।(मुकाशफ़तुल-क़ुलूब स:394)

ये रिवायत इबरत है उन ग़ाफ़िल मुसलमानों के लिए जो ज़िना जैसे बुरे काम की हक़ीक़त समझ कर उस से तो बचते हैं और ज़िना कारों का समाजी बाईकॉट करके समाज को साफ़ सुथरा और पुर अमन बनाने की कोशिश करते हैं, लेकिन इस से भी ज़्यादा बुरे काम करने में ज़रा भी शर्म महसूस नहीं करते और जान-बूझ कर नमाज़ें छोड़ते रहते हैं।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! अगर यहां इस्लामी हुकूमत होती तो जान-बूझ कर काहिली और सुस्ती की वजह से नमाज़ छोड़ने वालों को इतना मारा जाता कि उनके जिस्मों से ख़ून बहने लगता और उन्हें क़ैद कर दिया जाता यहां तक कि वो नमाज़ पढ़ने लगते। चुनांचे अल्लामा शरुमबुलाली رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं:

تَارِكُ الصَّلٰوةِ عَمَدًا كَسْلَانًا يُضْرَبُ ضَرْبًا شَدِيْدًا حَتّٰى يَسِيْلَ مِنْهُ الدَّمُ وَيُحْبَسُ حَتّٰى يُصَلِّيَهَا •

(نور الایضاح ص:۹۵، ج ۱)

जान-बूझ कर काहिली की वजह से नमाज़ छोड़ने वाले को इतना ज़्यादा मारा जाये कि उस के जिस्म से ख़ून बहने लगे और क़ैद कर दिया जाये यहां तक कि वो नमाज़ पढ़ने लगे।

मुसलमानो! अगर चे हम अपनी बेराह रवी और अहकामे शरिअत की ख़िलाफ़वर्ज़ी की वजह से हुकूमत से महरूम हो गए और हमें नमाज़ छोड़ने पर सज़ा देने वाला कोई दुनयवी हाकिम नहीं रहा और इस तरह हम दुनिया में सज़ा से बच गए, लेकिन आख़िरत में हमें इस दर्द-नाक अज़ाब से कौन बचा सकेगा जिसका ज़िक्र क़ुरआन व हदीस में जगह जगह मौजूद है और जिसकी हौलनाकी व गर्मी से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है।

मेरे दोस्तो! अभी वक़्त है अगर आप भी इस गुनाहे अज़ीम में मुबतला हैं तो आज ही इस से तौबा कर लीजिए और नमाज़ों की पाबंदी शुरु कर दीजिए। क्या ख़ूब कहा है शायर नेः

बे नमाज़ी क़ब्र तुझको पीस देगी एक दिन
आज तौबा कर नमाज़ों को गँवाना छोड़ दे

प्यारे इस्लामी भाईयो! अब तक आपने आयात व अहादीस और वाक़ियात व अक़्वाल की रोशनी में जानबुझ कर नमाज़ छोड़ने वालों के दुनयवी व उख़रवी अज़ाब की एक झलक मुलाहिज़ा फ़रमाई। अब आईए ज़रा उन लोगों से संबंधित भी चंद हदीसों का मुताला करें जो नमाज़ तो पढ़ते हैं लेकिन जमाअत की पाबंदी नहीं करते और अपनी काहिली की वजह से मस्जिद में हाज़िर नहीं होते हैं।

तारिकीने जमाअत के लिए वईदें

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मर्वी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया :

لَقَدْ هَمَمْتُ اَنْ اٰمُرَ بِالصَّلٰوةِ فَتُقَامَ ثُمَّ اٰمُرَ رَجُلًا فَيُصَلِّيَ بِالنَّاسِ ثُمَّ اَنْطَلِقَ بِرِجَالٍ مَعَهُمْ حُزَمٌ مِنْ حَطَبٍ اِلٰى قَوْمٍ لَا يَشْهَدُوْنَ الصَّلٰوةَ فَاُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوْتَهُمْ بِالنَّارِ•(سنن ابن ماجه ص: ٥٧)

मैंने इरादा किया कि इक़ामत कहने का हुक्म दूं फिर किसी से कहूं कि वो नमाज़ पढ़ाए और में कुछ लोगों को जिनके पास लकिड़यों के गठ्ठर हों लेकर उनके यहां जाऊं जो जमाअत में हाज़िर नहीं होते और उनके घरों को आग लगा दूं।

एक दूसरी हदीस पाक में है कि हुज़ूर صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया :

تَارِكُ الْجَمَاعَةِ لَيْسَ مِنِّيْ وَلَا اَنَا مِنْهُ وَلَا يَقْبَلُ اللّٰهُ مِنْهُ صَرْفًا وَّعَدْلًا اَیْ نَافِلَةً وَّفَرِيْضَةً فَاِنْ مَاتُوْا عَلٰى حَالِهِمْ فَالنَّارُ اَوْلٰى بِهِمْ(تفسیر روح البیان ص: ٣٥، ج:١)

जमाअत छोड़ने वाला मेरे तरीक़े पर नहीं है और ना ही मुझे उस से कोई वास्ता है और ना ही अल्लाह तआला उस की फ़र्ज़ व नफ़ल नमाज़ें क़बूल फ़रमाता है अगर ये (जमाअत छोड़ने वाले) इसी हाल में मर जाएं तो जहन्नम के सज़ावार होंगे।

इन हदीसों से मालूम हुआ कि जो शख़्स बिना किसी कारण जमाअत के साथ नमाज़ नहीं पढ़ता है उस से हुज़ूर ﷺ का कोई वास्ता नहीं, और ना ही अल्लाह तआला उस की कोई नमाज़ क़बूल फ़रमाता है, बल्कि जमाअत छोड़ने वाले से हुज़ूर ﷺ इस क़दर नाराज़ होते हैं कि आप सारे जहां के लिए रहमत होने के बावजूद उनके घरों को आग लगा देने का इरादा फ़रमाते हैं।

फ़ुक़हाए किराम फ़रमाते हैं : आक़िल व बालिग़ और आज़ाद व क़ादिर पर जमाअत वाजिब है, बिला वजह एक-बार भी छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तहिक़्के सज़ा है और कई बार छोड़े तो फ़ासिक़ व मर्दूदुश शहादा[1] है। उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी। अगर पड़ोसी खामोश रहे तो वो भी गुनहगार होंगे।(बहारे शरीयत स:106, ज: 3)

या अल्लाह! हम सबको नमाज़े बा-जमाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमसे वो काम ले जिससे तू और तेरे हबीब ﷺ राज़ी हों।

तारिके जमाअत मलऊन है

अल्लामा उसमान बिन हसन ख़ोबवी رحمۃ اللہ علیہ अपनी किताब दुर्रतुन नासिहीन में तहरीर फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सरकारे दो-आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

اِنَّ تَارِكَ الصَّلٰوةِ مَعَ الْجَمَاعَةِ مَلْعُوْنٌ فِي التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالزَّبُوْرِ وَالْفُرْقَانِ وَتَارِكُ الْجَمَاعَةِ يَمْشِيْ عَلَى الْاَرْضِ وَالْاَرْضُ تَلْعَنُهٗ وَتَارِكُ الْجَمَاعَةِ يَبْغُضُهُ اللّٰهُ وَتَبْغُضُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَكُلُّ شَيْءٍ جَعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ الرُّوْحَ وَيَلْعَنُهٗ كُلُّ مَلَكٍ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْاَرْضِ وَالْحِيْتَانُ فِي الْبَحْرِ• (درة الناصحين ص: ١٣٨)

बिलाशुब्हा जमाअत के साथ नमाज़ ना पढ़ने वाला मलऊन है तौरैत व इंजील और ज़बूर व क़ुरआन में, और जमाअत छोड़ने वाला ज़मीन पर चलता है और हाल ये होता है कि ज़मीन उस पर लानत करती है, तारिके जमाअत से अल्लाह جل شانہ, फ़रिश्ते और हर वो चीज़ नफ़रत करती है जिसमें जान पाई जाती है और ज़मीन व

(1) जिस की गवाही क़बूल न की जाए

आसमान के तमाम फ़रिश्ते और समुंद्र की मछलियाँ उस पर लानत करती हैं। अल्लामा शेख़ इस्माईल हक़्क़ी बरोसवी رحمۃ اللہ علیہ तारिके जमाअत के संबंधित इरशाद फ़रमाते हैं:

تَارِكُ الْجَمَاعَةِ شَرٌّ مِنْ شَارِبِ الْخَمْرِ وَقَاتِلِ النَّفْسِ بِغَيْرِ حَقٍّ وَمِنَ الْقَتَّاتِ وَمِنَ الْعَاقِّ لِوَالِدَيْهِ وَمِنَ الْكَاهِنِ وَالسَّاحِرِ وَمِنَ الْمُغْتَابِ وَهُوَ مَلْعُوْنٌ فِيْ التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالزَّبُوْرِ وَالْفُرْقَانِ وَهُوَ مَلْعُوْنٌ عَلٰى لِسَانِ الْمَلٰئِكَةِ لَا يُعَادُ إِذَا مَرِضَ وَلَا تُشْهَدُ جَنَازَتُه إِذَا مَاتَ. (تفسیر روح البیان، ج: ۱، ص: ۳۵)

जमाअत छोड़ने वाला, शराबी, ना-हक़ क़तल करने वाले, चुग़लखोर, माँ बाप के नाफ़रमान, काहिन व जादूगर और ग़ीबत करने वाले से ज़्यादा बुरा है। तौरैत व इंजील और ज़बूर व क़ुरआन में वो मलऊन है और फ़रिश्ते भी उस पर लानत करते हैं। जमाअत छोड़ने वाला जब बीमार पड़े तो उस की मिज़ाजपुर्सी ना की जाऐ और जब वो मरजाए तो उस की नमाज़े जनाज़ा में शिरकत ना की जाए ।

जमाअत छोड़ने वाला जन्नत की ख़ुशबू नहीं पाएगा

हुज़ूर ताजदारे मदीना صلی اللہ علیہ وسلم इरशाद फ़रमाते हैं:

اَتَانِيْ جِبْرَئِيْلُ وَمِيْكَائِيْلُ عَلَيْهِمَا السَّلَامُ فَقَالَا: يَا مُحَمَّدُ! اِنَّ اللّٰهَ يُقْرِئُكَ السَّلَامَ وَيَقُوْلُ لَكَ: تَارِكُ الْجَمَاعَةِ مِنْ اُمَّتِكَ لَا يَجِدُ رِيْحَ الْجَنَّةِ وَاِنْ كَانَ عَمَلُهٗ اَكْثَرَ مِنْ عَمَلِ اَهْلِ الْاَرْضِ، وَتَارِكُ الْجَمَاعَةِ مَلْعُوْنٌ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ• (درة الناصحين ص: ۱۳۸)

मेरे पास जिबरईल व मीकाईल आए और कहा: ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआला आपको सलाम कहता है, और फ़रमाता है : आपकी उम्मत में से जमाअत छोड़ने वाला जन्नत की ख़ुशबू नहीं पाएगा अगर चे उस का अमल ज़मीन वालों के अमल से ज़्यादा हो। और जमाअत छोड़ने वाला दुनिया व आख़िरत में मलऊन है।

जमाअत छोड़ने वाले का अंजाम

हज़रत मुजाहिद رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मर्वी है कि एक आदमी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہ के पास आया और पूछा :

مَاتَقُوْلُ فِیْ رَجُلٍ یَقُوْمُ اللَّیْلَ وَیَصُوْمُ النَّھَارَ وَلَا یَشْھَدُ الْجُمُعَۃَ وَلَا یُصَلِّیْ بِالْجَمَاعَۃِ فَمَاتَ عَلٰی ھٰذَا الْحَالِ فَلِاَیِّ شَیْءٍ ھُوَ؟ قَالَ ھُوَ لِلنَّارِ. (درۃ الناصحین ص: ۱۳۸)

आप उस शख़्स के बारे में क्या फ़रमाते हैं जो रात में नफ़ल नमाज़ें पढ़ता है और दिन में रोज़ा रखता है लेकिन जुमा में हाज़िर नहीं होता और ना ही जमाअत के साथ नमाज़ अदा करता है । उसी हालत में उस का इंतिक़ाल हो गया तो उस का अंजाम क्या होगा,आपने फ़रमाया: वो जहन्नमी होगा ।

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! इन अहादीस की रोशनी में आप अंदाज़ा लगाऐं कि बग़ैर किसी शरई वजह के अपनी काहिली और सुस्ती की वजह से जमाअत छोड़ना कितना बुरा है कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: वो जन्नत की ख़ुशबू भी नहीं पाएगा, चेजाये कि वो शुरू में जन्नत में दाख़िल हो। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने तो साफ़ साफ़ फ़रमा दिया कि वो जहन्नमी होगा अगरचे रात में नफ़ल नमाज़ें पढ़ता हो और दिन में रोज़ा भी रखता हो।

नमाज़े बाजमाअत में सुस्ती पर मसाइब

सरवरे कायनात हुज़ूर अहमदे मुज्तबा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ईरशाद फ़रमाते हैं: जो शख़्स जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने में सुस्ती करता है अल्लाह तआला उसे बारह मुसीबतों में मुबतला करता है। तीन दुनिया में, तीन मरने के वक़्त, तीन क़ब्र में, और तीन क़यामत के दिन।

दुनिया की तीन मुसीबतें ये हैं: (1) अल्लाह तआला उस की कमाई और रिज़्क़ से बरकत ख़त्म कर देता है। (2) उस के चेहरे से सालेहीन का नूर और उनकी पहचान छीन लेता है। (3) वो मोमिनों के दिलों में मबग़ूज़ व नापसंद हो जाता है।

मौत के वक़्त की तीन मुसीबतें ये हैं: (1) वो प्यासा मरेगा अगरचे उसे दुनिया की तमाम नहरों का पानी पिला दिया जाये। (2) उस की रूह निहायत सख़्ती से निकाली जाएगी। (3) आख़िर वक़्त में उस के ईमान जाने का ख़तरा है, यानी ईमान पर ख़ातिमा ना होने का अंदेशा

है। (نَعُوْذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی مِنْ ذَالِك)

क़ब्र की तीन मुसीबतें ये हैं: (1) मुनकर नकीर का सवाल उस पर बहुत मुश्किल होगा । (2) क़ब्र का अंधेरा उस के लिए इंतिहाई ख़ौफ़नाक होगा। (3) उस की क़ब्र तंग हो जाएगी यहां तक कि उस की पसलियाँ एक दूसरे में घुस जाएँगी उस अज़ाबे क़ब्र को एक शायर ने इस तरह बयान किया है

बे नमाज़ी तेरी शामत आएगी क़ब्र की दीवार बस मिल जाएगी
तोड़ देगी क़ब्र तेरी पिसलियाँ दोनों हाथों की मिलें जूं उंगलियां

क़यामत की तीन मुसीबतें ये हैं: (1) उस का हिसाब बहुत सख़्ती से लिया जाएगा। (2) परवरदिगारे आलम उस से नाराज़ होगा। (3) अल्लाह तआला उसे जहन्नम में डाल देगा। (نَعُوْذُبِاللّٰہِ تَعَالٰی مِنْ ذَالِك) । (दुर्रतुन नासिहीन स:१३७)

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयो! इस किताब को यहाँ तक संजीदगी से पढ़ लेने के बाद ज़रूर आपके दिल में नमाज़ की अहमियत व अज़मत बैठ गई होगी और जान-बूझ कर नमाज़ छोड़ने और इस से ग़फ़लत बरतने वालों का दर्द-नाक अज़ाब पढ़ कर आपके मिज़ाज व फ़िक्र में तबदीली आई होगी । इसलिए मैं चाहता हूँ कि लगे हाथों आपके सामने वुज़ू व नमाज़ का तरीक़ा और क़ज़ा नमाज़ों के कुछ अहकाम व मसाइल और उनके अदा करने की कुछ आसान सूरतें भी ज़िक्र करदूं ताकि आप उनहें अपना कर अपनी ज़िंदगी बेहतर बना सकें और माज़ी की कोताहियों की भरपाई कर सकें और ये आपके लिए अज़ाबे क़ब्र व आख़िरत से नजात का सामान हो जाएगी। अल्लाह جل شانه अपने हबीबे पाक علیه التحیة والسلام के तुफ़ैल हम सबको अहकाम शरइय्या को समझने और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

☆☆☆☆☆

बाबे सोम

वुज़ू व नमाज़ के तरीक़े और मसाइल

वुज़ू का तरीक़ाः

जब वुज़ू करना हो तो दिल में वुज़ू करने का इरादा करे और بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर दोनों हाथ गट्टों तक धोए, फिर दाहिने हाथ से मिस्वाक करे, अगर मिस्वाक ना हो तो उंगली से ही दाँत मांझ ले,फिर तीन बार ख़ूब अच्छी तरह कुल्ली करे कि हलक़ तक दाँतों की जड़ और ज़बान के नीचे पानी पहुंच जाये और अगर दाँत या तालू में कोई चीज़ चिप्की, अटकी हो तो उसे छुड़ाए, फिर दाहने हाथ से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए कि अंदर नाक की नरम हड्डी तक पानी पहुंच जाये और बाएं हाथ की छोटी उंगली नाक के अंदर डाल कर नाक साफ़ करे, फिर दोनों हाथों में पानी लेकर तीन बार मुँह धोए, इस तरह कि बाल जमने की जगह से लेकर ठोढ़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक कोई जगह छूटने ना पाए और दाढ़ी हो तो उसे भी धोए और उस में ख़िलाल भी करे इस तरह कि उंगलियों को हलक़ की तरफ़ से दाढ़ी में डाले और सामने निकाले, फिर दोनों हाथ कोहनियों समेत कुछ ऊपर तक तीन तीन बार धोए, फिर एक बार पूरे सर का मसह करे, इस तरह कि दोनों हाथ तर कर के अंगूठे और शहादत की उंगली छोड़कर दोनों हाथों की तीन तीन उंगलियों की नोक एक दूसरे से मिलाए और उन छः ओं उंगलियों के पेट की जड़ पेशानी के ऊपर रखकर पीछे की तरफ़ गुद्दी तक ले जाये, इस तरह कि शहादत की दोनों उंगलियां और दोनों अंगूठे और दोनों हथेलियाँ सर से ना लगने पायें और अब गुद्दी से हाथ वापस पेशानी की तरफ़ लाए इस तरह कि दोनों गदेलियां सर के दाएं बाएं हिस्सा पर होती हुई पेशानी तक वापस आजाऐं। अब शहादत की उंगली के पेट से कान के अंदर के

हिस्सों का और अंगूठे के पेट से कान के बाहर का मसह करे और उंगलियों की पीठ से गर्दन का मसह करे लेकिन हाथ गले पर ना जाने पाए कि गले का मसह मकरूह है, फिर दाहिना पैर उंगलियों की तरफ़ से टख़ने से कुछ ऊपर तक धोए, फिर इसी तरह बायां पैर धोए, और हाथ पांव की उंगलियों में ख़िलाल भी करे। अब वुज़ू ख़त्म हुआ। उस के बाद ये दुआ पढ़े: اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ.

और बचा हुआ पानी खड़े हो कर थोड़ा सा पी ले कि उस में बीमारियों से शिफ़ा है और आसमान की तरफ़ मुँह कर के سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ. और कलम-ए-शहादत और सूरा-ए- اِنَّا اَنْزَلْنَا पढ़े, और बेहतर ये है कि हर हिस्सा धोते वक़्त बिसमिल्लाह और दुरूद शरीफ़ और कलम-ए-शहादत पढ़े। (बहारे शरीयत, हिस्सा दोम)

नियते नमाज़ का बयान

नीयत दिल के पक्के इरादा को कहते हैं और ज़बान से कह लेना मुस्तहब है। नियत का अदना दर्जा ये है कि अगर कोई शख़्स उस से पूछे कि कौन सी नमाज़ पढ़ता है तो फ़ौरन बिना सोचे बता दे, अगर हालत ऐसी है कि सोच कर बताएगा तो नमाज़ ना होगी।

नियत में ज़बान का एतबार नहीं है, यानी अगर दिल में मसलन ज़ुहर का क़सद व इरादा है और ज़बान से लफ़्ज़े अस्र निकला तो नमाज़े ज़ुहर ही होगी।

नियत में रकात की गिन्ती ज़रूरी नहीं बल्कि अफ़ज़ल है। लिहाज़ा अगर रकात की गिन्ती में ग़लती हो गई मसलन तीन रकातें ज़ुहर, या चार रकातें मग़रिब की नियत की तो नमाज़ हो जाएगी। (बहारे शरीयत, हः 3)

ज़बान से इस तरह कहना बेहतर है: निय्यत की मैंने आज की दो रकात नमाज़े फ़ज्र फ़र्ज़ की अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, पीछे इस इमाम के अल्लाहु अकबर।

और ज़ुहर के लिए दो रकात नमाज़े फ़ज्र फ़र्ज़ की जगह चार रकात

नमाज़े ज़ुहर फ़र्ज़ । अस्र के लिए चार रकात नमाज़े अस्र फ़र्ज़। मग़रिब के लिए तीन रकात नमाज़े मग़रिब फ़र्ज़ । इशा के लिए चार रकात नमाज़े इशा फ़र्ज़ कहे।

नमाज़े वित्र के लिए इस तरह कहे: नियत की मैंने आज की तीन रकात नमाज़े वित्र वाजिब अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर.

और अगर इमाम के पीछे पढ़े जैसे कि रमज़ान शरीफ़ में पढ़ते हैं तो पीछे इस इमाम के भी कहे।

नमाज़े तरावीह के लिए इस तरह कहे: नियत की मैंने आज की दो रकात नमाज़े तरावीह सुंन्नत की अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, पीछे इस इमाम के, अल्लाहु अकबर ।

सुनन व नवाफ़िल के लिए इस तरह कहे: नियत की मैंने दो रकात / चार रकात नमाज़े सुन्नत / नमाज़े नफ़ल अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर.

नमाज़े ईदैन के लिए इस तरह कहे: निय्यत की मैंने दो रकअत नमाज़ ईदुल्फ़ितर वाजिब / नमाज़े ईदुल अज़हॉ वाजिब की छः ज़ाइद तकबीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, पीछे इस इमाम के, अल्लाहु अकबर.

नमाज़े जनाज़ा के लिए इस तरह कहे: नीय्यत की मैंने नमाज़े जनाज़ा की चार तक्बीरों के साथ अल्लाह तआला के लिए, दुआ इस मय्यत के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, पीछे इस इमाम के, अल्लाहु अकबर । (कुतुबे फ़िक़्ह)

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा ये है कि बा-वुज़ू क़िबला की तरफ़ मुँह कर के इस तरह खड़ा हो कि दोनों पंजों में चार उंगल की दूरी रहे और दोनों हाथ कान तक ले जाए कि अंगूठे कान की लौ से छू जाएं बाक़ी

उंगलियां अपने हाल पर रहें, ना बिलकुल मिली ना बहुत फैली और हथेलियाँ क़िबला की तरफ़ हों और निगाह सजदा की जगह पर हो और जिस वक़्त की जो नमाज़ पढ़ता हो दिल में उस का पक्का इरादा कर के अल्लाहु अक्बर कहता हुआ हाथ नीचे ला कर नाफ़ के नीचे बांध ले, इस तरह कि दाहिनी हथेली की गद्दी बाएं कलाई के सिरे पर हो और बीच की तीनों उंगलियां बाएं कलाई की पीठ पर और अँगूठा और छोटी उंगली कलाई के अगल बग़ल हो और सना पढ़े यानी:

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ.

फिर तव्वुज़ पढ़े यानी : اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ.

फिर तसमीया पढ़े यानी: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

फिर अल-ह़मदु पूरी पढ़े और ख़त्म पर आहिस्ता से आमीन कहे, उस के बाद कोई सूरत या तीन आयतें पढ़े या ऐसी एक आयत पढ़े जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो। अब "अल्लहु अकबर" कहता हुआ रुकू में जाये और घुटनों को हाथ से पकड़े, इस तरह कि हथेलियाँ घुटनों पर हों और उंगलियां ख़ूब फैली हों और पीठ बिछी हो और सर पीठ के बराबर हो, ऊंचा नीचा ना हो और नज़र पैर की तरफ़ हो और कम से कम तीन बार "सुबहान रब्बियल अज़ीम" कहे, फिर "समिअल्लाहु लिमन हमिदह" कहता हुआ सीधा खड़ा हो जाये और जो मुनफ़रिद यानी अकेला हो तो उस के बाद "अल्लाहुम्मा रब्बना व लकल हम्द" कहे, फिर "अल्लाहु अकबर" कहता हुआ सज्दे में जाये इस तरह कि पहले घुटने ज़मीन पर रखे, फिर हाथ, फिर दोनों हाथों के बीच में सर रखे इस तौर पर कि पहले नाक, फिर पेशानी और नाक की हड्डी ज़मीन पर जम जाये और नज़र नाक की तरफ़ रहे और बाज़ुओं को करवटों से और पेट को रानों से और रानों को पिंडलियों से अलग रखे और दोनों पांव की सब उंगलियां क़िबला की तरफ़ रखे, इस तरह कि उंगलियों का सारा पेट ज़मीन पर जमा रहे और हथेलियाँ बिछी हों और उंगलियां क़िबला की तरफ़ हों और कम से कम तीन बार "सुबहान

रब्बियल आला" कहे, फिर सर उठाए इस तरह कि पहले पेशानी फिर नाक फिर मुँह फिर हाथ और दाहिना क़दम खड़ा करके उस की उंगलियां क़िबला रुख करे और बायां क़दम बिछा कर उस पर ख़ूब सीधा बैठ जाये और हथेलियाँ बिछा कर रानों पर घुटनों के पास रखे कि दोनों हाथ की उंगलियां क़िबला रुख हों और उंगलियों का सिरा घुटनों के पास हो, फिर ज़रा ठहर कर "अल्लाहु अकबर" कहता हुआ दूसरा सजदा करे। ये सजदा भी पहले की तरह करे। फिर सर उठाए और हाथ घुटने पर रखकर पंजों के बल खड़ा हो जाये, उठते वक़्त बिला वजह हाथ ज़मीन पर ना टेके। ये एक रकात पूरी हो गई। अब सिर्फ .بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ पढ़ कर "अल-हम्दु" और सूरत पढ़े और पहले की तरह रुकू और सजदे करे और जब दूसरे सजदे से सर उठाए तो दाहिना क़दम खड़ा कर के बायां क़दम बिछा कर बैठ जाये और तशह्हुद पढ़े, यानी :

اَلتَّحِیَّاتُ لِلّٰہِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّیِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰہِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَیْنَا وَعَلٰی عِبَادِ اللّٰہِ الصّٰلِحِیْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰہُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.

जब कलमा "ला" पर पहुंचे तो दाहिने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हलक़ा बनाए और छोटी उंगली और उस के पास वाली उंगली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़े "ला" पर कलिमा की उंगली उठाए, मगर इधर उधर ना हिलाए और "इल्ला" पर गिरा दे और सब उंगलियां फ़ौरन सीधी कर ले।

अब अगर दो से ज़्यादा रकातें पढ़नी हैं तो उठ खड़ा हो और इसी तरह पढ़े मगर फ़र्ज़ की इन रकातों में "अल-हम्दु" के साथ सूरत मिलाना ज़रूरी नहीं । अब पिछला क़ादा जिसके बाद नमाज़ ख़त्म करेगा उस में तशह्हूद के बाद दुरूदे इबराहीमी पढ़े, यानी:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ. اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰی سَیِّدِنَا اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا اِبْرَاهِیْمَ اِنَّكَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ.

उस के बाद ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ تَوَالَدَ وَلِجَمِیْعِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْیَآءِمِنْهُمْ وَالْاَمْوَاتِ اِنَّكَ مُجِیْبُ الدَّعْوَاتِ بِرَحْمَتِكَ یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

या और कोई दुआ-ए-मासूरा पढ़े या ये पढ़े :

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَااٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

और इस को बग़ैर اَللّٰهُمَّ के ना पढ़े, फिर दाहिने कन्धे की तरफ़ मुँह कर के اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ وَرَحْمَةُ اللهِ कहे और इसी तरह बाएं तरफ़ । अब नमाज़ ख़त्म हो गई । उस के बाद दोनों हाथ उठा कर कोई दुआ पढ़े मसलन: اَللّٰهُمَّ رَبَّنَااٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. और मुँह पर हाथ फेर ले।

ये तरीक़ा इमाम या तन्हा मर्द के पढ़ने का है, लेकिन अगर नमाज़ी मुक़तदी हो यानी जमाअत के साथ इमाम के पीछे पढ़ता हो तो क़िरात ना करे, यानी "अल-हम्दु" और सूरत ना पढ़े चाहे इमाम ज़ोर से क़िरात करता हो या आहिस्ता। इमाम के पीछे किसी नमाज़ में क़िरात जाएज़ नहीं । (बहारे शरीयत, हः 3)

औरत की नमाज़ का तरीक़ा

औरत के नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा मर्दों से कुछ अलग है मसलन औरत तकबीरे तहरीमा के वक़्त सिर्फ़ मूँढे तक हाथ उठाए और बाएं हथेली सीना पर पिस्तान के नीचे रख कर उस के ऊपर दाहिनी हथेली रखे और रुकू में थोड़ा झुके यानी सिर्फ इतना कि घुटनों पर हाथ रख दे, ज़ोर ना दे और हाथ की उंगलियां मिली रहें और पीठ और पांव झुके रहें, मर्दों की तरह ख़ूब सीधी ना कर दे और सजदों में सिमट कर सजदा करे, यानी बाज़ू करवटों से मिला दे और पेट रान से और रान पिंडलियों से और पिंडलियां ज़मीन से मिला दे और दोनों पांव पीछे निकाल दे और क़ादा में दोनों पांव दाहिनी जानिब निकाल दे और बाएं सुरीन पर बैठे और हाथ बीच रान पर रखे।(बहारे शरीयत, हः3)

बीमार की नमाज़ का तरीक़ा

जो शख़्स बीमारी की वजह से खड़ा नहीं हो सकता वो बैठ कर नमाज़ पढ़े। बैठे-बैठे रुकूअ करे यानी आगे को ख़ूब झुक कर سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहे और फिर सीधा हो जाये और फिर जैसे सजदा किया जाता है वैसे सजदा करे। और अगर बैठ कर भी नमाज़ नहीं पढ़ सकता तो चित्त लेट कर पढ़े, इस तरह लेटे कि पांव क़िबला की तरफ़ हों और घुटने खड़े रहें और सर के नीचे तकिया वग़ैरा कुछ रख ले ताकि सर ऊंचा हो कर मुँह क़िबला के सामने हो जाये और रुकूअ और सजदा इशारे से करे यानी सर को जितना झुका सकता है उतना तो सजदा के लिए झुकाए और उस से कुछ कम रुकूअ के लिए झुकाए, इसी तरह दाहिनी या बाएं करवट पर भी क़िबला की तरफ़ मुँह कर के पढ़ सकता है।

बीमार जब सर से भी इशारा ना कर सके तो नमाज़ माफ है, इस की ज़रूरत नहीं कि आँख या भौं या दिल के इशारे से पढ़े, फिर अगर छः वक़्त उसी हालत में गुज़र गए तो उनकी क़ज़ा भी माफ है, फ़िदया की भी ज़रूरत नहीं और अगर ऐसी हालत में छः वक़्त से कम गुज़रे तो सेहत के बाद क़ज़ा फ़र्ज़ है, चाहे उतनी ही सेहत हुई कि सर के इशारे से पढ़ सके। (बहारे शरीयत, हः 3, वग़ैरा)

रकातों की तादाद और तर्तीब

नमाज़े फ़ज्र में कुल चार रकातें हैं। पहले दो रकअत सुन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत फ़र्ज़।

नमाज़े ज़ोहर में कुल बारह रकातें हैं। पहले चार रकअत सुन्नते मअक्कदा, फिर चार रकअत फ़र्ज़, फिर दो रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत नफ़ल।

नमाज़े अस्र में कुल आठ रकातें हैं। पहले चार रकअत सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा, फिर चार रकअत फ़र्ज़।

नमाज़े मग़रिब में कुल सात रकातें हैं। पहले तीन रकअत फ़र्ज़, फिर दो रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत नफ़ल।

नमाज़े इशा में कुल सत्तरह रकातें हैं। पहले चार रकअत सुन्नत ग़ैर मुअक्कदा, फिर चार रकअत फ़र्ज़, फिर दो रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत नफ़ल, फिर तीन रकअत वित्र वाजिब,फिर दो रकअत नफ़ल।

नमाज़े जुमा में कुल चौदह रकातें हैं। पहले चार रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत फ़र्ज़, फिर चार रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत सुंन्नते मुअक्कदा, फिर दो रकअत नफ़ल।

रिकअतों का तफ़सीली नक़्शा

नमाज़	सुन्नते मुअक्कदा	सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा	फ़र्ज़	सुन्नते मुअक्कदा	नफ़्ल	वाजिब	नफ़्ल	मजमूआ
फ़ज्र	2	-	2	-	-	-	-	4
ज़ुहर	4	-	4	2	2	-	-	12
अस्र	-	4	4	-	-	-	-	8
मग़रिब	-	-	3	2	2	-	-	7
इशा	-	4	4	2	2	3	2	17
जुमा	4	-	2	4+2	2	-	-	14

शरीयत की इस्तिलाहात (तारीफात)

फ़र्ज़: वो काम है जिसे जान-बूझ कर छोड़ना सख़्त गुनाह हो और जिस इबादत के अंदर वो हो बग़ैर उस के वो इबादत दुरुस्त ना हो।

वाजिब: वो काम है जिसे जान-बूझ कर छोड़ना गुनाह, और नमाज़ में जान बूझ कर छोड़ने से नमाज़ का दुबारा पढ़ना ज़रुरी, और भूल से छूट जाये तो सजदा-ए-सहव लाज़िम हो।

सुंन्नते मुअक्कदा: वो काम है जिसे छोड़ना बुरा और करना सवाब और इत्तिफ़ाक़न छोड़ने पर आदमी मुस्तहिक़्क़े सजा और छोड़ने की आदत बना लेने पर मुस्तहिक़्क़े अज़ाब हो।

सुंन्नत ग़ैर मुअक्कदाः वो काम है जिसे करना सवाब हो

और ना करना अगरचे आदतन हो बाइसे इताब नहीं मगर शरअन ना-पसंद हो।

मुस्तहब / नफ़्ल: वो काम है जिसे करना सवाब हो और ना करने पर कुछ गुनाह ना हो।

नमाज़े वित्र

नमाज़े वित्र वाजिब है। अगर किसी वजह से वक़्त में नहीं पढ़ सका तो क़ज़ा लाज़िम है। इस में नमाज़े मग़रिब की तरह तीन रकातें एक सलाम से अदा की जाती हैं। इस का पहला क़ादा वाजिब है यानी दो रकअत पर बैठे और सिर्फ "अत्तहिय्यात" पढ़ कर तीसरी रकअत के लिए खड़ा हो जाये और तीसरी रकअत में भी "अल-हम्दु" और सूरत पढ़े। उस के बाद दोनों हाथ उठा कर कानों की लौ तक ले जाए और "अल्लाहु अक्बर" कहे, जैसे तकबीरे तहरीमा में कहते हैं। फिर हाथ बांध ले और दुआए क़नूत पढ़े। जब दुआ-ए-क़नूत पढ़ले तो "अल्लाहु अक्बर" कह कर रुकूअ करे और बाक़ी नमाज़ पूरी करे।

दुआ-ए-क़नूत पढ़ना वाजिब है और इस में किसी ख़ास दुआ का पढ़ना ज़रुरी नहीं । अलबत्ता बेहतर वो दुआएं हैं जो अहादीस में आई हैं। सबसे ज़्यादा मशहूर दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَ، اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِق.

जो दुआ-ए-क़नूत ना पढ़ सके वो ये दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ.

और जिस से ये भी ना हो सके वो तीन बार "اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ" कहे ।

(आलमगीरी व बहारे शरीयत हिस्सा चहारुम)

नमाज़े तरावीह

नमाज़े तरावीह मर्द व औरत सब के लिए "बिल इज्मा" सुंन्नते मुअक्कदा है। इस का छोड़ना नाजायज़ है, जम्हूर का मज़हब ये है कि तरावीह की बीस रकातें हैं। इस का वक़्त फ़र्ज़ इशा के बाद से तुलूअ फ़ज्र तक है। नमाज़े तरावीह वित्र से पहले भी हो सकती है और वित्र के बाद भी। लिहाज़ा अगर उस की कुछ रकातें बाक़ी रह गईं कि इमाम नमाज़े वित्र के लिए खड़ा हो गया तो इमाम के साथ वित्र पढ़ले, फिर बाक़ी रकातें पूरी करे जब कि फ़र्ज़ जमाअत से अदा किया हो। ये अफ़ज़ल है। और अगर तरावीह पूरी करके वित्र तन्हा पढ़े तो ये भी जायज़ है।

तरावीह की बीस रकातें दो दो कर के दस सलाम से पढ़े और हर चार रकअत पर इतनी देर तक बैठना मुस्तहब है जितनी देर में चार रकातें पढ़ी हैं। इस बैठने को तरवीहा कहते हैं।इस में उसे इख़्तियार है कि चुप बैठा रहे, या कलिमा पढ़े, या तिलावत करे, या दुरूद शरीफ़ पढ़े, या ये तस्बीह पढ़े:

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَيْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْكِبْرِيَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ ط
سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا يَنَامُ وَلَا يَمُوْتُ ط سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ ط لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ نَسْتَغْفِرُ
اللّٰهَ نَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَنَعُوْذُبِكَ مِنَ النَّارِ ●

या وَالرُّوْحِ के बाद ये पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَا مِنَ النَّارِ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ يَا مُجِيْرُ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

(बहारे शरीयत, हिः 4)

मुसाफ़िर और उस के अहकाम

शरीयत में मुसाफ़िर वो है जो तीन दिन की राह तक जाने के इरादा से बस्ती से बाहर हो। तीन दिन की राह से मुराद सत्तावन(57) मील तीन फ़र्लांग है। किलो मीटर के हिसाब से उस की मिक़दार 92/ किलो मीटर है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स रेल गाड़ी या मोटर बस

वग़ैरा से बानवे (92) किलो मीटर की मसाफ़त (दूरी) दो-चार घंटे ही में पूरी कर लेता है तो वो शरई मुसाफ़िर होजाएगा और क़सर वग़ैरा सफ़र के अहकाम उस पर जारी होंगे और अगर बानवे किलो मीटर से कम की मसाफ़त तीन या उस से ज़्यादा दिनों में पूरी करता है तो वो शरई मुसाफ़िर नहीं होगा।

मुसाफ़िर का हुक्म उस वक़्त से है कि आबादी से बाहर हो जाये यानी शहर में हो तो शहर से बाहर हो जाये, गांव में हो तो गांव से बाहर हो जाये। और शहर वाले के लिए ये भी ज़रूरी है कि शहर के आस-पास की जो आबादी शहर से मिली है उस से भी बाहर हो जाये।

मसअला: स्टेशन अगर आबादी से बाहर हो तो स्टेशन पर पहुंचने से मुसाफ़िर हो जाएगा, जब कि मसाफ़ते सफ़र तक जाने का इरादा हो।

मसअला: सफ़र के लिए ये भी ज़रूरी है कि जहां से चला वहां से तीन दिन की राह का इरादा हो, और अगर दो दिन की राह के इरादे से निकला और वहां पहुंच कर दूसरी जगह का इरादा कर लिया और ये भी तीन दिन से कम का रास्ता है तो मुसाफ़िर नहीं होगा चाहे इस तरह से पूरी दुनिया घूम आए।

मसअला: मुसाफ़िर पर वाजिब है कि नमाज़ में क़सर (रकातों में कमी) करे यानी चार रकअत वाले फ़र्ज़ को दो पढ़े, उस के हक़ में दो ही रकातें पूरी नमाज़ है।

मसअला: मग़रिब और फ़ज्र में क़सर नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएं, सिर्फ़ ज़ुहर, अस्र और इशा के फ़र्ज़ में क़सर है।

मसअला: अगर मुसाफ़िर क़सर ना करे तो गुनहगार है।

मसअला: सुन्नतों में क़सर नहीं बल्कि पूरी पढ़ी जाएँगी अलबत्ता ख़ौफ़ वगैरा की हालत में सुन्नतें छोड़ सकता है, माफ़ हैं, लेकिन सुन्नत में क़सर नहीं कर सकता ।

मसअला: मुसाफ़िर उस वक़्त तक मुसाफ़िर है जब तक कि अपनी बस्ती में पहुंच ना जाये, या किसी आबादी में पूरे पंद्रह दिन ठहरने की

नीयत ना कर ले।

मसअला: मुसाफ़िर जब अपने वतने असली में पहुंच गया तो सफ़र ख़त्म हो गया, अगरचे इक़ामत (ठहरने) की नीयत ना की हो।

मसअला: वतने असली वो जगह है जहां उस की पैदाइश है, या उस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत कर ली है और ये इरादा है कि यहां से ना जाएगा। वतने इक़ामत वो जगह है जहां मुसाफ़िर ने पंद्रह दिन या उस से ज़्यादा ठहरने का इरादा किया।

मसअला: वतने इक़ामत दूसरे वतने इक़ामत को बातिल कर देता है यानी एक जगह पंद्रह दिन के इरादा से ठहरा, फिर दूसरी जगह इतने ही दिन के इरादा से ठहरा तो पहली जगह अब वतन ना रही, दोनों के बीच मसाफ़ते सफ़र हो या ना हो।

मसअला: अगर वतने इक़ामत से वतने असली में पहुंच गया, या वतने इक़ामत से सफ़र कर गया तो अब ये वतने इक़ामत वतने इक़ामत ना रहा, यानी अगर इस में फिर आया और पंद्रह दिन से कम ठहरने की नीयत है तो मुसाफ़िर ही है। (आलमगीरी व बहारे शरीयत वग़ैरा)

क़ज़ा नमाज़ों के अहकाम व मसाइल

फ़क़ीहे आज़म सदरुश शरीया अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी رحمۃ اللہ علیہ अपनी मशहूरे ज़माना किताब बहारे शरीयत, हिस्सा चार में क़ज़ा नमाज़ों के तअल्लुक़ से तहरीर फ़रमाते हैं: बिला वजहे शरई नमाज़ क़ज़ा कर देना बहुत सख़्त गुनाह है। उस पर फ़र्ज़ है कि उस की क़ज़ा पढ़े और सच्चे दिल से तौबा करे (तौबा, या हज मक़बूल से गुनाहे ताख़ीर माफ़ हो जाएगा) और तौबा उसी वक़्त सच्ची और सही होगी जबकि छूटीं हुई नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ ले। अगर क़ज़ा ना पढ़े और तौबा किए जाये तो ये तौबा नहीं है क्यों कि वो नमाज़ जो उस के ज़िम्मा थी उस का ना पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ ना आया तो तौबा कहाँ हुई हदीस शरीफ़ में है कि गुनाह पर क़ायम रह कर इस्तिग़फ़ार (तौबा) करने वाला उस के मिस्ल है जो

अपने रब से मज़ाक़ करता है।

❋ छूटी हुई नमाज़ें जो ज़िम्मा में बाक़ी हैं उनका जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है, मगर बाल बच्चों के खाने पीने और अपनी ज़रूरीयात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जायज़ है। तो कारोबार भी करे और जो वक़्त फ़ुर्सत का मिले उस में क़ज़ा नमाज़ें पढ़ता रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं।

❋ इस बात का ख़्याल भी ज़रूरी है कि क़ज़ा नमाज़ों का अदा करना नफ़ल और सुंन्नते ग़ैर मुअक्कदा पढ़ने से अहम है इसलिए जिन औक़ात में नवाफ़िल या सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा पढ़ता है उन्हें छोड़कर उनके बदले क़ज़ा नमाज़ें पढ़े ताकि जल्द से जल्द ज़िम्मा से फारिग़ हो जाए।

❋ क़ज़ा के लिए कोई वक़्त खास नहीं, उम्र में जब भी पढ़ेगा ज़िम्मा से फारिग़ हो जाएगा मगर तुलूअ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त ना पढ़े क्यों कि इन तीनों वक़्तों में कोई नमाज़ पढ़ना जायज़ नहीं ।

तुलूअ: इस से मुराद आफ़ताब का किनारा ज़ाहिर होने से उस वक़्त तक है कि उस पर निगाहें ख़ीरा होने लगे जिसकी मिक़दार आफ़ताब का किनारा चमकने से बीस मिनट तक है।

ग़ुरूब: जब आफ़ताब पर निगाह ठहरने लगे उस वक़्त से सूरज डूबने तक है। ये भी बीस मिनट है।

ज़वाल: इस से मुराद निस्फ़ुन्नहार शरई से आफ़ताब ढलने तक है जिसको ज़हव-ए-कुबरा कहते हैं। यानी तुलूअ फ़ज्र से ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक आज जो वक़्त है उस के बराबर दो हिस्से करें पहले हिस्से के ख़त्म पर इब्तिदा-ए-निस्फ़ुन्नहार शरई है और उस वक़्त से आफ़ताब ढलने तक वक़्ते इस्तिवा है जिसमें हर नमाज़ मना है। ये वक़्त मौसम की तबदीली से घटता बढ़ता रहता है।

❋ अवाम में जो ये मशहूर है कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लेने के बाद आफ़ताब बुलंद होने तक और अस्र की नमाज़ पढ़ लेने के बाद ग़ुरूब-ए-आफ़ताब तक कोई नमाज़ नहीं, यहाँ तक कि क़ज़ा भी इन औक़ात में नहीं पढ़ी जा सकती ये बिलकुल बे-बुनियाद है इन औक़ात में सिर्फ

नफ़ल नमाज़ें पढ़ने की मुमानअत है। क़ज़ा नमाज़ें तुलूअ व ग़ुरूब और ज़वाल के इलावा जब भी पढ़ना चाहें पढ़ सकते हैं।

❋ जो नमाज़ जैसी छूटी है उस की क़ज़ा वैसी ही पढ़ी जाएगी। मसलन सफ़र में नमाज़ क़ज़ा हुई तो चार रकअत वाली दो ही पढ़ी जाएगी अगरचे इक़ामत की हालत में पढ़े। और हालते इक़ामत में फ़ौत हुई तो चार रकअत वाली नमाज़ की क़ज़ा चार रकअत पढ़ी जाएगी अगरचे सफ़र में पढ़े। हाँ! अगर क़ज़ा पढ़ते वक़्त कोई उज़्र है तो उस का एतबार किया जाएगा- मसलन जिस वक़्त फ़ौत हुई थी उस वक़्त खड़ा हो कर पढ़ सकता था और अब क़ियाम नहीं कर सकता तो बैठ कर पढ़े, या उस वक़्त इशारा ही से पढ़ सकता है तो इशारा से पढ़े और सेहत के बाद उस को दोहराना नहीं है।

❋ साहिबे तर्तीब यानी वो शख़्स जिसके ज़िम्मा पाँच वक़्त से ज़्यादा क़ज़ा नमाज़ें ना हों उस के लिए पांचों फ़र्ज़ों में बाहम और फ़र्ज़ व वित्र में तर्तीब ज़रूरी है कि पहले फ़ज्र फिर ज़ुहर फिर अस्र फिर मग़रिब फिर इशा फिर वित्र पढ़े, चाहे ये सब क़ज़ा हों या कुछ अदा कुछ क़ज़ा। मसलन ज़ुहर की क़ज़ा हो गई तो फ़र्ज़ है कि उसे पढ़ कर अस्र पढ़े, या वित्र क़ज़ा हो गई तो उसे पढ़ कर फ़ज्र पढ़े। अगर याद होते हुए पहले अस्र या फ़ज्र पढ़ ली तो ना-जायज़ है।

❋ जिस शख़्स के ज़िम्मा क़ज़ा नमाज़ें पाँच से ज़्यादा हो गईं उस पर तर्तीब लाज़िम नहीं। यानी उसे इख़्तियार है कि उनमें से जिसे चाहे पहले पढ़े और जिसे चाहे बाद में पढ़े, इसी तरह उनमें और वक़्ती नमाज़ में भी रिआयते तर्तीब की हाजत नहीं। फिर उन नमाज़ों के हक़ में तर्तीब ना बाहमी ना बलिहाज़ वक़्ती कोई भी ना लौटेगी अगरचे अदा करते करते छः से कम रह जाएं। (बहारे शरीयत हिस्सा: 4,3, व हिदाया जिल्द 1)

क़ज़ा-ए-उमरी का तरीक़ा

क़ज़ाए उमरी का तरीक़ा ये है कि आदमी पहले अपनी क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब लगाए इस तरह कि बालिग़ होने से लेकर नमाज़ शुरू करने

तक जितने महीने या साल होते हैं उनको एक जगह लिख ले, फिर ये देखे कि उस अवधि में कितने दिन सफ़र के हैं उन्हें अलग जगह नोट कर ले। अब जितने दिन सफ़र के हैं इतने दिनों की क़ज़ा में चार रकअत वाली नमाज़ दो रकअत ही पढ़े और बाक़ी दिनों की क़ज़ा पूरी पढ़े।

अब अगर अच्छी तरह याद ना हो कि सफ़र के कितने दिन हैं, या ये यक़ीन से मालूम ना हो कि कितनी नमाज़ें क़ज़ा हुई हैं तो अंदाज़ा से उनको निर्धारित करे लेकिन इस में ये ख़्याल रहे कि अंदाज़ा कम ना हो बल्कि कुछ ज़्यादा ही रहे। फिर उस को जिस तरह हो सके अदा करे एक वक़्त में अलग अलग समय में, तर्तीब के साथ या बग़ैर तर्तीब के। हां इतना लिहाज़ ज़रूर रहे कि जिस नमाज़ की क़ज़ा करना चाहता है वो नमाज़ नियत में खास हो जाये। मसलन पचास नमाज़ें फ़ज्र की क़ज़ा हैं तो इस तरह गोल नीयत ना करे कि नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़े फ़ज्र की क्यों कि उस पर एक फ़ज्र तो है नहीं कि इतना कहना काफ़ी हो, बल्कि उस को ख़ास करे कि फ़ुलां तारीख़ की फ़ज्र, मगर ये किसे याद रहता है और हो भी तो इस का लिहाज़ हर्ज से ख़ाली नहीं। लिहाज़ा उस की आसान सूरत ये है कि इस तरह नीयत करे:

नीयत का तरीक़ा

नीयत की मैंने उस पहली नमाज़े फ़ज्र की जिसकी क़ज़ा मुझ पर है, अल्लाह तआला के लिए, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अक्बर .जब एक पढ़ले तो फिर इसी तरह पहली फ़ज्र की नीयत करे क्यों कि एक तो उसने पढ़ली अब उस की क़ज़ा उस पर ना रही। उनचास की है, अब उनमें की पहली नीयत में आएगी, यूँही अख़ीर तक नीयत करे। इसी तरह बाक़ी सब नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ने में नीयत करे। या अगर चाहे तो पहली की जगह पिछली भी कह सकता है कि इस सूरत में नीचे से ऊपर को अदा होती चली जाएगी।

❋ औरत भी मर्द की तरह अपनी क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब लगाए

लेकिन वो हर महीना से उतने दिन कम कर दे जितने दिनों में उसे माहवारी आती रही है। औरत को अगर हमल (गर्भ) रहा हो तो उन महीनों में कुछ कम ना करे, बल्कि बच्चा की पैदाइश के बाद जितने दिनों नेफ़ास (बच्चा पैदा होने के बाद जो ख़ून आता है) रहा हो उतने दिन कम कर दे। क्यों कि हैज़ व नेफ़ास के समय की नमाज़ें उस के लिए माफ़ हैं। ना उनकी अदा है ना क़ज़ा।

❋ क़ज़ाए उमरी में इस बात का ख़्याल रहे कि हर-रोज़ की नमाज़ की क़ज़ा सिर्फ़ बीस रकातों की होती है। दो फ़ज्र फ़र्ज़, चार ज़ुहर फ़र्ज़, चार अस्र फ़र्ज़, तीन मग़रिब फ़र्ज़, चार इशा फ़र्ज़ और तीन वित्र वाजिब हाँ! अगर कोई हालते सफ़र की नमाज़ की क़ज़ा करे तो वो ज़ुहर व अस्र व इशा में चार चार की जगह दो दो ही पढ़े।

❋ वो क़ज़ा-ए-उमरी जो शबे क़द्र या अख़ीर रमज़ान के जुमा में जमाअत से पढ़ते हैं और ये समझते हैं कि उम्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं ये बिल्कुल ग़लत है।

क़ज़ा-ए-उमरी की कुछ आसान सूरतें (तरिक़े)

जिस शख़्स के ज़िम्मा क़ज़ा नमाज़ें बहुत ज़्यादा हों उस की आसानी के लिए कुछ ऐसी सूरतें भी हैं जिन पर अमल कर के वो बहुत जल्द उन फ़राइज़ से फरिग़ हो सकता है। आम लोगों की आसानी के लिए यहां की चार सूरतें ज़िक्र की जाती हैं।

(1) हर रुकूअ में तीन बार ''سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم''

और हर सजदा में तीन बार ''سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی''

की जगह सिर्फ एक एक बार कहे, मगर ये हमेशा हर तरह की नमाज़ में ख़्याल रहे कि जब रुकूअ में पूरा पहुंच जाये उस वक़्त سُبْحٰنَ का सीन शुरु करे और जब عَظِیْم का मीम ख़त्म हो जाये उस वक़्त रुकूअ से सर उठाए, इसी तरह जब सजदा में पूरा पहुंच जाये उस वक़्त तस्बीह (سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی) शुरु करे और जब पूरी तस्बीह ख़त्म कर ले उस वक़्त सजदा से सर उठाए। बहुत से लोग जो रुकूअ व सजदा में

आते-जाते ये तस्बीह पढ़ते हैं वो बहुत ग़लती करते हैं।

(2) फ़र्जों की तीसरी और चौथी रकअत में اَلْحَمْدُ शरीफ़ की जगह سُبْحٰنَ اللّٰهِ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ، سُبْحٰنَ اللّٰهِ, तीन बार कह कर रुकूअ में चला जाये मगर वही ख़्याल यहां भी ज़रुरी है कि सीधे खड़े हो कर पहली तस्बीह (سُبْحٰنَ اللّٰهِ) शुरुअ करे और तीसरी तस्बीह पूरी खड़े खड़े कह कर रुकू के लिए सर झुकाए। ये तख़फ़ीफ़ सिर्फ फ़र्जों की तीसरी और चौथी रकअत में है। वित्रों की तीनों रिकअतों में अल-हमदु शरीफ़ और सूरत का पढ़ना ज़रुरी है।

(3) क़ादए अख़ीरा में اَلتَّحِيَّات के बाद दोनों दरूदों और दुआ की जगह सिर्फ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ कह कर सलाम फेर दे।

(4) वित्र की तीसरी रकअत में दुआए क़नूत की जगह اَللّٰهُ اَكْبَر कह कर सिरफ एक-बार या तीन बार رَبِّ اغْفِرْلِيْ कहे और रुकूअ में चला जाये ।(फतावा रज़वीया स:621, 622, ज:3)

फ़िद्य-ए-नमाज़ के मसाइल

❋ जो शख़्स अपने बाप, माँ या किसी दूसरे अज़ीज़ रिश्ते दार (जो इंतिक़ाल कर गए हैं) की तरफ़ से क़ज़ा नमाज़ों का फ़िदया देना चाहता है तो हर फ़र्ज़ व वित्र के बदले निस्फ़ साअ गेहूँ (जो आज के नए वज़न से तक़रीबन दो किलो 47/ ग्राम होता है) या एक साअ जौ या उनमें से किसी एक की क़ीमत मिस्कीन पर सदक़ा करे। अगर उस के पास माल ना हो तो किसी से क़र्ज़ लेकर मिस्कीन पर सदक़ा कर के उस के क़ब्ज़ा में दे दे और मिस्कीन अपनी तरफ़ से उसे हिबा कर दे और ये क़ब्ज़ा भी कर ले फिर मिस्कीन को दे, यूँही लौट फेर करता रहे यहां तक कि सब का फ़िदया अदा हो जाएगा, और अगर उस के पास माल कम हो जब भी यही सूरत विकल्प अपनाये।

❋ मय्यत ने अगर अपने बदले नमाज़ पढ़ने की वसीय्यत की और वली ने पढ़ भी ली तो ये ना काफ़ी है, यूँही अगर मर्ज़ की हालत में नमाज़ का फ़िदया दिया तो अदा ना हुआ।

❋ कुछ अंजान लोग यूं फ़िदया देते हैं कि नमाज़ों के फ़िदया की क़ीमत लगा कर सब के बदले में क़ुरआन मजीद देते हैं, इस तरह कुल फ़िदया अदा नहीं होता। ये महज़ बे असल है। बल्कि सिर्फ उतना ही अदा होगा जिस क़ीमत का मुसहफ़ शरीफ़ है।

(बहारे शरीयत हिस्सा चहारुम स:43, 44)

नमाज़े ईदैन का तरीक़ा

नमाज़े ईदैन (ईद व बक़रा ईद) का तरीक़ा ये है कि दो रकअत वाजिब ईदुल फ़ितर या ईदुल अज़हा की नीयत कर के कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर हाथ बांध ले, फिर सना पढ़े, फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुआ हाथ छोड़ दे, फिर कानों तक हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुआ हाथ छोड़ दे, फिर हाथ उठाए और اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर हाथ बांध ले। यानी पहली तकबीर में हाथ बाँधे उस के बाद दो तकबीरों में हाथ लटकाए, फिर चौथी तकबीर में हाथ बांध ले, उस को यूं याद रखे कि जहां तकबीर के बाद कुछ पढ़ना है वहां हाथ बांध लिए जाएंगे और जहां पढ़ना नहीं है वहां हाथ छोड़ दिए जाऐंगे। जब चौथी तकबीर पर हाथ बांध ले तो इमाम اَعُوْذُ بِاللّٰہ و بِسْمِ اللّٰہ आहिस्ता पढ़ कर ज़ोर से अल-हम्दु और सूरत पढ़े, फिर रुकू व सजदा कर के एक रकअत पूरी करे। जब दूसरी रकअत के लिए खड़ा हो तो पहले अल-हम्दु और सूरत पढ़े, फिर तीन बार कानों तक हाथ ले जा कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहे और हाथ ना बाँधे और चौथी बार बग़ैर हाथ उठाए اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुआ रुकूअ में जाये।

इस से मालूम हो गया कि ईदैन में छः तक्बीरें ज़्यादा हुईं, तीन तक्बीरें पहली रकअत में क़िरात से पहले और तकबीर तहरीमा के बाद और तीन तक्बीरें दूसरी रकअत में क़िरात के बाद और रुकूअ की तकबीर से पहले और उन छःओं तकबीरों में हाथ उठाए जाऐंगे और हर दो तकबीर के बीच में तीन तस्बीह पढ़ने के बराबर ठहरा रहे। (बहारे शरीयत, हः 4)

नमाज़े तहिय्यतुल वुज़ु

वुज़ू के बाद बदन के हिस्से सुखने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है। इस नमाज़ को تَحِيَّةُالْوُضُوْء कहते हैं।

हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिर व बातिन के साथ ध्यान लगा कर दो रकात पढ़े उस के लिए जन्नत वाजिब हो जाती है।

वुज़ू के बाद फ़र्ज़ वग़ैरा पढ़े तो वो तहिय्यतुल वुज़ु की जगह हो जाऐंगे। (बहारे शरीयत, ह:4)

नमाज़े तहिय्यतुल मस्जिद

जो शख़्स मस्जिद में आए उसे दो रकअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है। इस नमाज़ को تَحِيَّةُالْمَسْجِدْ कहते हैं। हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो वो बैठने से पहले दो रकअत पढ़ ले।

फ़र्ज़ या सुंन्नत या कोई और नमाज़ मस्जिद में पढ़ली तो तहीय्यतुल मस्जिद अदा हो गई अगरचे तहीय्यतुल मस्जिद की नियत ना की हो। इस नमाज़ का हुक्म उस के लिए है जो मस्जिद में नमाज़ की नियत से ना गया हो, बल्कि दर्स व ज़िक्र वग़ैरा के लिए गया हो। अगर अकेला फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने या जमात के साथ अदा करने की नियत से मस्जिद में गया तो यही नमाज़ तहीय्यतुल मस्जिद के क़ायम मक़ाम (की जगह) हो जाएगी, बशर्ते कि दाख़िल होने के फ़ौरन बाद ही नमाज़ पढ़े। अगर कुछ देर बाद पढ़ेगा तो तहीय्यतुल मस्जिद अलग पढ़े।

बेहतर ये है कि बैठने से पहले तहीय्यतुल मस्जिद पढ़ले और अगर बग़ैर पढ़े बैठ गया तो तहिय्यतुल मस्जिद साक़ित (माफ) ना हुई, अब पढ़े।

नमाज़े ईशराक

सय्यदे आलम ﷺ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स फ़ज्र की नमाज़ जमात से पढ़ कर ज़िक्रे इलाही करता रहा, यहां तक कि सूरज बुलंद हो गया

(यानी तुलूअ हुए बीस मिनट गुज़र गए) फिर उसने दो रकअतें पढ़ लीं तो उसे पूरे हज व उमरा का सवाब मिलेगा। इस नमाज़ को नमाज़े इशराक़ कहते हैं।

नमाज़े चाश्त

चाश्त की कम से कम दो और ज़्यादा से ज़्यादा बारह रकातें हैं और अफ़ज़ल बारह हैं कि हदीस में है: जिसने चाश्त की बारह रकातें पढ़ीं अल्लाह तआला उस के लिए जन्नत में सोने का महल बनाएगा।

और महबूबे ख़ुदा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:आदमी पर उस के हर जोड़ के बदले सदक़ा है (और बदन में कुल तीन सौ साठ जोड़ हैं) हर तस्बीह सदक़ा है, हर हम्द सदक़ा है और لَآاِلٰہَ اِلَّا اللہ कहना सदक़ा है और अल्लाहु अकबर कहना सदक़ा है और अच्छी बात का हुक्म करना सदक़ा है और बुरी बात से मना करना सदक़ा है और उन सबकी तरफ़ से दो रिक़ातें चाश्त की काफी होती हैं।

इस का वक़्त सूरज बुलंद होने से ज़वाल यानी निस्फ़ुन्नहार शरई तक है और बेहतर ये है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े।

नमाज़े अव्वाबीन

ये कुल छः रकातें हैं जो मग़रिब की नमाज़ के बाद पढ़ी जाती हैं। हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि ताजदारे दो-आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स मग़रिब के बाद छः रकातें पढ़े और उनके बीच कोई बुरी बात ना कहे तो वो छः रकातें बारह बरस की इबादत के बराबर शुमार की जाएँगी ।

इन छः रकअतों में इख़्तियार है कि सब एक सलाम से पढ़े या दो से या तीन से, और तीन सलाम से पढ़ना यानी हर दो रकअत पर सलाम फेरना अफ़ज़ल है।

नमाज़े तहज्जुद

नमाज़े इशा पढ़ कर सो जाने के बाद फ़ज्र का वक़्त शुरू होने से

पहले जब भी आँख खुले वो तहज्जुद का वक़्त है। इस वक़्त जो नवाफ़िल अदा करें उन्हें नमाज़े तहज्जुद कहते हैं। इस में कम से कम दो रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा आठ रकातें हैं। ये नमाज़ हुज़ूर पुरनूर ﷺ पर फ़र्ज़ थी और इस उम्मत के लिए सुन्नत है। उसे चार चार कर के पढ़ना अफ़ज़ल है।

हदीसे पाक में है कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन जब तमाम अव्वलीन व आख़िरीन को जमा फ़रमाएगा तो आवाज़ देने वाला आवाज देगा जिसे तमाम मख़लूक़ सुनेगी। वो कहेगा कि अभी सबको मालूम हो जाएगा कि आज अल्लाह جل شانه के करम का ज़्यादा हक़दार कौन है। फिर मुनादी वापस आकर कहेगा: वो हज़रात खड़े हो जाएं जिनके पहलू रात में बिस्तर से अलग हो जाते थे (यानी रात में उठकर नमाज़ पढ़ते थे) ऐसे बंदे कम तादाद में होंगे। फिर मुनादी आएगा और कहेगा: वो हज़रात भी खड़े हो जाएं जो तंग दस्ती और बीमारी में अल्लाह तआला की बारगाह में आला दर्जा का शुक्रिया पेश करते थे, ये भी थोड़े होंगे। फिर उन सब को जन्नत में ले जाएंगे, उस के बाद बाक़ी लोगों का हिसाब होगा ।(निज़ामे शरीयत मुलख़सन)

सलातुल लैल

रात में नमाज़े इशा के बाद जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उनको صَلٰوۃُاللَّیۡل कहते हैं। और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़ज़ल हैं। हदीस शरीफ़ में है कि फ़र्ज़ों के बाद अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।(बहारे शरीयत, हः 4 मुलख़सन)

नमाज़े इस्तिख़ारा

हदीस में आया है कि जब कोई शख़्स किसी काम का इरादा करे तो दो रकअत नफ़ल पढ़े जिसकी पहली रकअत में अल-हम्दु के बाद قُلۡ یٰۤاَیُّهَاالۡکٰفِرُوۡن दुसरी रकअत में अल-हमदु के बाद قُلۡ هُوَاللّٰهُ اَحَد पढ़े। फिर ये दुआ पढ़ कर बा-वुज़ू क़िबला-रू सो जाये, दुआ के अव्वल व आख़िर

सूरा-ए-फ़ातिहा और दुरूद शरीफ़ भी पढ़े। दुआ ये है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَخِیْرُكَ بِعِلْمِكَ وَاَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا اَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ. اَللّٰهُمَّ اِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ فَاقْدُرْهُ لِیْ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّ لِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ وَعَاجِلِ اَمْرِیْ وَاٰجِلِهٖ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدُرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِیْ بِهٖ•

दोनों اَلْاَمْرَ की जगह अपनी ज़रूरत का नाम ले, जैसे पहले में कहे هٰذَاالسَّفَرَشَرٌّ لِّیْ• और दूसरे में कहे هٰذَاالسَّفَرَخَیْرٌ لِّیْ (गुनिया)

मसअला: बेहतर ये है कि कम से कम सात बार इस्तिख़ारा करे और फिर देखे जिस बात पर दिल जमे उसी में ख़ैर है। कुछ बुज़ुरगों से मनक़ूल है कि अगर सपने में सफ़ेदी या हरा रंग देखे तो अच्छा है और अगर काला व लाल रंग देखे तो बुरा है। इस से बचे। (रद्दुल मुह्तार)

नमाज़े हाजत

जब किसी को कोई हाजत अल्लाह तआला से हो, या कोई काम किसी बंदे से हो, या मुश्किल पेश आए तो ख़ूब एहतियात से अच्छी तरह वुज़ू कर के दो या चार रकअत नफ़ल पढ़े, उस की पहली रकअत में अल-हम्दु के बाद तीन बार आयतलकुर्सी पढ़े, दूसरी में अल-हम्दु के बाद एक-बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد तीसरी में अल-हमदु के बाद एक-बार قُلْ اَعُوْذُبِرَبِّ النَّاس और चौथी में اَلْحَمْدُ के बाद एक-बार قُلْ اَعُوْذُبِرَبِّ الْفَلَق पढ़े। और सलाम के बाद तीन बार هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَیْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْم• तीन बार سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ• फिर तीन बार कोई दुरूद शरीफ़ पढ़े, फिर ये दुआ पढ़े:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَكِیْمُ الْكَرِیْمُ • سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ• اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ• اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِیْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ •لَا تَدَعْ لِیْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِیَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَیْتَهَا یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ•

जलीलुल क़दर सहाबी हज़रत उसमान बिन हनीफ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं कि एक नाबीना सहाबी ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया,

या रसूलल्लाह! अल्लाह से दुआ कीजिए कि मुझे आफ़ियत दे। इरशाद फ़रमाया: अगर तुम चाहो तो दुआ करूँ और चाहो तो सब्र करो और सब्र करना तुम्हारे लिए बेहतर है। इन्होंने अर्ज़ किया: हुज़ूर ! दुआ करें । तो आपने उन्हें हुक्म फ़रमाया कि वुज़ु करो और अच्छा वुज़ू करो फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ कर ये दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ وَاَتَوَسَّلُ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ •يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنِّیْ تَوَجَّهْتُ بِكَ اِلٰى رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ هٰذِهٖ لِتُقْضٰى لِیْ•اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ•

वाक़िया बयान करने वाले हज़रत उसमान बिन हनीफ़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ फ़रमाते हैं : ख़ुदा की क़सम हम उठने भी ना पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वो सहाबी जिन का ऊपर ज़िकर हुआ, अमल करने के बाद हमारे पास आए, मानो कभी अंधे थे ही नहीं । अल्लाह तआला ने इस अमल की बरकत से उन्हें फ़ौरन आँख वाला कर दिया ।(बहारे शरीयत, ह:4)

नमाज़े गौसिया

ये नमाज़ चूँ कि सय्यदना ग़ौसे आज़म शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मनक़ूल है, इसी वास्ते उस का नाम नमाज़े गौसिया हुआ ।और उसे صَلٰوۃُ الْاَسْرَار भी कहते हैं।

इस की तरकीब ये है कि बाद नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो रकअत नमाज़े नफ़ल पढ़े और बेहतर ये है कि अल-हम्दु के बाद हर रकअत में ग्यारह ग्यारह बार "क़ुल हुवल्लाहु अहद" पढ़े। सलाम के बाद अल्लाह عزوجل की हम्द व सना करे, फिर नबी करीम صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم पर ग्यारह बार दुरूद व सलाम अर्ज़ करे और ग्यारह बार कहे:

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ يَانَبِیَّ اللّٰهِ اَغِثْنِیْ وَامْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ يَاقَاضِیَ الْحَاجَاتِ.

फिर इराक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले, हर क़दम पर ये कहे:

يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ وَيَاكَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِیْ وَامْدُدْنِیْ فِیْ قَضَاءِ حَاجَتِیْ يَاقَاضِیَ الْحَاجَاتِ.

फिर हुज़ूर के वसीले से अल्लाह عزوجل से दुआ करे।

नमाज़े सफ़र

सफ़र में जाते वक़्त दो रक़ातें अपने घर पढ़ कर जाये, इस नमाज़

को नमाज़े सफ़र कहते हैं। हदीस शरीफ़ में है कि किसी ने अपने अहल के पास इन दो रकअतों से बेहतर ना छोड़ा जो सफर के इरादे से उन के पास पढ़ी हैं।

नमाज़े वापसी-ए-सफ़र

जब सफ़र से वापस हो तो घर में बैठने से पहले दो रकअत नफ़ल मस्जिद में अदा करे। इस नमाज़ को वापसी-ए-सफ़र की नमाज़ कहते हैं। हज़रत कअब बिन मालिक ﷺ से मर्वी है कि रसुलुल्लाह ﷺ सफ़र के दिन चाशत के वक़्त तशरीफ़ लाते और सब से पहले मस्जिद में जाते, दो रकअत नमाज़ पढ़ते, फिर वहीं मस्जिद में तशरीफ़ रखते।

सलातुत तसबीह

इस नमाज़ में बे-इंतिहा सवाब है। कुछ स्कालर ने फ़रमाया है कि इस की फ़ज़ीलत सुनकर वही शख़्स इसे छोडगा दीन में सुस्ती करने वाला होगा।

हुज़ूर नबी-ए-करीम ﷺ ने जब हज़रत अब्बास ﷺ को इस नमाज़ की तालीम दी तो इरशाद फ़रमाया: अगर तुमसे हो सके तो हर रोज़ एक बार सलातुत-तस्बीह पढ़ो और अगर हर-रोज़ ना पढ़ सको तो हर जुमा को एक-बार पढ़ो और अगर ये भी ना हो सके तो हर महीने में एक-बार और अगर ये भी ना हो सके तो उम्र में एक-बार।

इस नमाज़ में चार रकातें होती हैं और उनके पढ़ने का तरीक़ा ये है कि चार रकअत सलातुत-तस्बीह की नीयत बांध कर सना पढ़े, यानी: سُبْحَانَ اللهِ • سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ फिर पंद्रह बार وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاللهُ اَكْبَرُ. पढ़े। फिर اَعُوْذُ بِاللهِ وبِسْمِ اللهِ और अल-हमदु और सूरत पढ़ कर दस बार यही तस्बीह पढ़े। फिर रुकू करे और रुकूअ में दस बार पढ़े, फिर रुकू से सर उठाए और سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَه और رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْد कहने के बाद दस बार कहे, फिर सजदा करे और उस में दस मर्तबा पढ़े, फिर सर उठाए और जलसा में दस बार पढ़े, फिर दूसरे सजदा में दस

बार पढ़े। इसी तरह चारों रकातें पढ़े। हर रकअत में 75 / बार तस्बीह हुई और चारों रिकातों में तीन सौ तसबीहात हुईं । रुकू व सुजूद में سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی और سُبْحَانَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहने के बाद तस्बीहात पढ़े।

नमाज़े तौबा

ख़लीफ़-ए-अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ تعالیٰ عنہ बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर पुरनूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जब कोई बंदा गुनाह करे, फिर वुज़ु कर के नमाज़ पढ़े, फिर इस्तिग़फ़ार करे तो अल्लाह جل شانه उस के गुनाह बख़्श देगा, उस नमाज़ को नमाज़े तौबा कहते हैं।

आंधी वग़ैरह की नमाज़

जब आंधी आए, या दिन में सख़्त अंधेरा छा जाये, या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो, या लगातार ज़्यादा बारिश हो, या ज़्यादा ओले पड़ें, या आसमान लाल हो जाये, या बिजलियां गिरें, या ब ज़्यादा तारे टूटें, या ताऊन, या वबा फैले, या ज़लज़ले आएं, या दुश्मन का ख़ौफ़ हो, या और कोई दहशतनाक वाक़िया पाया जाये तो इन सब के लिए दो रकअत नमाज़ मुस्तहब है। (निज़ामे शरीयत)

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा

नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा ये है कि नमाज़े जनाज़ा की नीयत कर के कान तक हाथ उठा कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुआ हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे दसतूर के मुताबिक़ बांध ले और सना पढ़े, यानी: سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ फिर बग़ैर हाथ उठाए اَللّٰہُ اَکْبَر कहे और दुरूद शरीफ़ पढ़े, बेहतर वही दुरूद है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है, अगर कोई दूसरा दुरूद पढ़े जब भी हर्ज नहीं। फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर अपने और मय्यत के लिए और तमाम मोमिनीन व मोमिनात के लिए ये दुआ पढ़े: اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ط اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कह कर सलाम फेर दे।

जिसको ये दुआ याद ना हो वो और कोई दुआए मासूरा पढ़ले जैसे:
اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ وَلِمَنْ تَوَالَدَ وَلِجَمِیْعِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْاَحْیَآءِ مِنْھُمْ وَالْاَمْوَاتِ اِنَّکَ مُجِیْبُ الدَّعْوَاتِ بِرَحْمَتِکَ یَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

नमाज़े जनाज़ा की चारों तकबीरों में से सिर्फ पहली तकबीर में हाथ उठाएं और बाक़ी में नहीं और चौथी तकबीर कहते ही बिला कुछ पढ़े हाथ खोल कर सलाम फेरें।

जनाज़ा अगर पागल या नाबालिग़ का हो तो तीसरी तकबीर के बाद ये दुआ पढ़ें: اَللّٰھُمَّ اجْعَلْہُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْہُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْہُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا और लड़की हो तो اِجْعَلْھَا और شَافِعَۃً وَّمُشَفَّعَۃً कहें। (बहारे शरीय, ह: 4)

ढिले मुज़्तर की आख़िरी चंद बातें

मेरे प्यारे इस्लामी भाईयों! इन आयात व अहादीस और वाक़ियात व अक़्वाल के नक़ल कर देने के बाद हम आपसे ये कहने की ज़रूरत महसूस नहीं करते कि आप नमाज़ पढ़ें और अपनी जिन्दगी के खुशहाल पलों में यादे इलाही से ग़ाफ़िल ना रहें। हाँ! इस्लामी भाईचारा व मुहब्बत और मज़हबी हमदर्दी की बुनियाद पर आपसे इतना ज़रूर कहना चाहेंगे कि आप अपनी व्यस्त ज़िंदगी का थोड़ा सा समय निकाल कर ये किताब इंतिहाई संजीदगी से पढ़ें और फिर सुकून के साथ अपनी ज़िंदगी के इस पहलू पर ग़ौर करें कि क्या अल्लाह جل شانہ ने आपको इसी लिए पैदा किया है जिसमें आप व्यस्त हैं या उस के इलावा कोई और मक़सद है।

تازہ خواہی داشتن گر داغ ہاے سینہ را
گاہے گاہے باز خواں ایں قصۂ پارینہ را

मेरे अज़ीज़ साथियो! आपने दुनयवी मसाइल की गुत्थियाँ सुलझाने और अपने ज़माने के लोगों से आगे निकल जाने के लिए ना जाने कितनी रातें जाग कर काटी होंगी। काश! एक रात आप अपनी ज़िंदगी का हिसाब लगाने में भी जागते और इस पहलू पर ग़ौर करते कि जहां

हमें नामालूम चंद दिन रहना है वहां के लिए हमने कितने बेहतर मकानात तामीर किए, इलेक्ट्रिक लाइटें लगाईं और तरह तरह के आराम पहुँचाने के साधन का इंतिज़ाम किया। लेकिन जहां हमेशा रहना है वहां के लिए हमने कौन सा मकान बनाया है, क़ब्र की अंधेरी कोठरी में उजाले के लिए किस तरह की रोशनी का इंतिज़ाम किया है और मैदाने महशर की हौलनाकी व शर्मिन्दगी से बचने के लिए कौन सी तैयारी की है।

इस्लाम के शैदाईयो! आप इस बात से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं कि हमारी ये फ़ानी ज़िंदगानी जिस क़दर भी लंबी हो जाये लेकिन अंजाम यही होगा कि हमें क़ब्र में अकेला सोना पड़ेगा और दुनिया में जिस चीज़ से भी दिल लगाएँगे उस से हाथ धोना पड़ेगा । तो क्यों ना हम ऐसी बेवफ़ा चीज़ों से मुँह मोड़ कर उन नेक कार्यों से दिल जोड़ लें जो क़ब्र के खौफनाक अंधेरों में भी उन्स व रोशनी पैदा करें और हर मुश्किल घड़ी में ग़मगुसार हों और तन्हाई में साथ दे, और बिलाशुब्हा इस किस्म के आमाले सालेहा में सबसे बेहतर नमाज़ है।

मज़हब व मिल्लत का दर्द रखने वालो! अगर हमने ख़ुदा की तरफ़ अपनी लौ लगा ली, उस के बात मानने वाले बंदे बन गए और अपने दिलों में इशक़े मुस्तफ़ा علیه التحیة والثنا का चराग़ रौशन कर लिया तो यक़ीन जानें हमारी दुनिया भी सँवर जाएगी और आख़िरत में भी हम कामयाब होंगे। मुफ़क्किरे मिल्लत हज़रत अल्लामा बदरुल क़ादरी साहिबे बद्र ने अपने तजुर्बात की रोशनी में फ़रमाया है:

ज़िंदगी सँभल गई ग़म के दौर टल गए
जब दिलों में इशक़ मुस्तफ़ा के दीप जल गए
कामयाबियों ने उनके बढ़के चूमे हैं क़दम
जो ग़ुलाम बन के उनकी राह में निकल गए

ऐ परवरदिगारे आलम! अपने हबीब ﷺ के तुफ़ैल इस किताब में वो प्रभाव दे कि जो भी उसे पढ़े वो नमाज़े पंजगाना बा-जमाअत अदा करने का शैदाई और दूसरे अहकामे शरीयत पर अमल करने का फ़िदाई

हो जाये।

ऐ ख़ालिक़े दो-जहाँ ! हम हर आन तेरे फ़ज़्ल व करम के चाहने वाले हैं और तुझसे ऐसे कामों की तौफ़ीक़ तलब करते हैं जो तुझे और तेरे हबीब عليه التحية والثنا को पसंद व महबूब हैं।

ऐ मालिके मौत व हयात! मुस्तफ़ा जाने रहमत ﷺ के सदक़े में मुझ गुनहगार, मेरे वालिदैने करिमैन, मुशफ़िक़ व मेहरबान असातिज़-ए-किराम और तमाम मुसलमानों को हमेशा नमाज़े पंजगाना बा-जमाअत अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा, और हमें ऐसे आमाल व अफ़आल से बचा ले जो बरोज़े क़यामत नदामत व पशेमानी का बाइस हों।

तौफ़ीक़ दे कि आगे ना पैदा हो ख़ु-ए-बद
तब्दील कर जो ख़सलते बद पेशतर की है

(आला हज़रत)

क़ुराने पाक की ग्यारह सूरतें

سورۂ فاتحه: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ • اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۵ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ۧ﴿۷﴾

سورۂ فیل: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ • اَلَمْ تَرَ كَیْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِیْلِ ؕ﴿۱﴾ اَلَمْ یَجْعَلْ كَیْدَهُمْ فِیْ تَضْلِیْلٍ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَرْسَلَ عَلَیْهِمْ طَیْرًا اَبَابِیْلَ ۙ﴿۳﴾ تَرْمِیْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّیْلٍ ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۧ﴿۵﴾

سورۂ قریش: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ • لِاِیْلٰفِ قُرَیْشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیْفِ ۚ﴿۲﴾ فَلْیَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَیْتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیْۤ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۵ وَّ اٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۧ﴿۴﴾

سورۂ ماعون: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ • اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یُكَذِّبُ بِالدِّیْنِ ؕ﴿۱﴾ فَذٰلِكَ الَّذِیْ یَدُعُّ الْیَتِیْمَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَا یَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِیْنِ ؕ﴿۳﴾ فَوَیْلٌ لِّلْمُصَلِّیْنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ الَّذِیْنَ هُمْ یُرَآءُوْنَ ۙ﴿۶﴾ وَ یَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۧ﴿۷﴾

سورۂ کوثر: بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ • اِنَّاۤ اَعْطَیْنٰكَ الْكَوْثَرَ ؕ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَ انْحَرْ ؕ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۧ﴿۳﴾

سورۂ کافرون: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • قُلۡ یٰۤاَیُّهَا الۡکٰفِرُوۡنَ ۙ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ۚ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ لَکُمۡ دِیۡنُکُمۡ وَلِیَ دِیۡنِ ۟

سورۂ نصر: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۙ وَرَاَیۡتَ النَّاسَ یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّکَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ کَانَ تَوَّابًا ۟

سورۂ لهب: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا کَسَبَ ؕ سَیَصۡلٰی نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚۖ وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ ۚ فِیۡ جِیۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ۟

سورۂ اخلاص: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمۡ یَلِدۡ ۙ وَلَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ وَلَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ۟

سورۂ فلق: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۟

سورۂ ناس: بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ • قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِکِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۟

जुमा का पहला ख़ुतबा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ الَّذِیۡ فَضَّلَ سَیِّدَنَا وَ مَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَلَی الۡعٰلَمِیۡنَ جَمِیۡعًا • وَاَقَامَهٗ یَوۡمَ الۡقِیَامَةِ لِلۡمُذۡنِبِیۡنَ الۡمُتَلَوِّثِیۡنَ الۡخَطَّآئِیۡنَ الۡهَالِکِیۡنَ شَفِیۡعًا • فَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی وَسَلَّمَ وَبَارَکَ عَلَیۡهِ • وَعَلٰی کُلِّ مَنۡ هُوَ مَحۡبُوۡبٌ وَّ مَرۡضِیٌّ لَّدَیۡهِ • صَلَاةً تَبۡقٰی وَتَدُوۡمُ بِدَوَامِ الۡمَلِکِ الۡحَیِّ الۡقَیُّوۡمِ • وَاَشۡهَدُ اَنۡ لَّاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِیۡکَ لَهٗ • وَاَشۡهَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ • اَمَّا بَعۡدُ! فَیَاۤ اَیُّهَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ —— رَحِمَنَا وَرَحِمَکُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی —— اُوۡصِیۡکُمۡ وَنَفۡسِیۡ بِتَقۡوَی اللّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ فِی السِّرِّ وَالۡاِعۡلَانِ • فَاِنَّ التَّقۡوٰی سَنَامُ ذُرَی الۡاِیۡمَانِ • وَاذۡکُرُوا اللّٰهَ عِنۡدَ کُلِّ شَجَرٍ وَّ حَجَرٍ • وَاعۡلَمُوۡا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِیۡرٌ • وَاَنَّ اللّٰهَ لَیۡسَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعۡمَلُوۡنَ • وَاقۡتَفُوۡا اٰثَارَ سُنَنِ سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ • صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰی وَسَلَامُهٗ عَلَیۡهِ وَعَلَیۡهِمۡ اَجۡمَعِیۡنَ • فَاِنَّ السُّنَنَ هِیَ الۡاَنۡوَارُ • وَزَیِّنُوۡا قُلُوۡبَکُمۡ بِحُبِّ هٰذَا النَّبِیِّ الۡکَرِیۡمِ • عَلَیۡهِ وَعَلٰۤی اٰلِهٖ اَفۡضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسۡلِیۡمِ • فَاِنَّ الۡحُبَّ هُوَ الۡاِیۡمَانُ کُلُّهٗ • اَلَا ! لَاۤ اِیۡمَانَ لِمَنۡ لَا مَحَبَّةَ لَهٗ • اَلَا ! لَاۤ

اِیْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّۃَ لَہٗ• اَلَا ! لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَا مَحَبَّۃَ لَہٗ• رَزَقَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی وَاِیَّاکُمْ حُبَّ حَبِیْبِہٖ ھٰذَا النَّبِیِّ الْکَرِیْمِ• عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ اَکْرَمُ الصَّلَاۃِ وَالتَّسْلِیْمِ• کَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا وَیَرْضٰی •وَاسْتَعْمَلَنَا وَاِیَّاکُمْ بِسُنَّتِہٖ• وَحَیَّانَا وَاِیَّاکُمْ عَلٰی مَحَبَّتِہٖ• وَتَوَفَّانَا وَاِیَّاکُمْ عَلٰی مِلَّتِہٖ• وَاَدْخَلَنَا وَاِیَّاکُمْ فِیْ جَنَّتِہٖ بِمَنِّہٖ وَکَرَمِہٖ وَرَأفَتِہٖ• اِنَّہٗ ھُوَ الرَّءُوْفُ الرَّحِیْمُ• عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ : اَلْبِرُّ لَا یَبْلٰی وَالذَّنْبُ لَا یُنْسٰی وَالدَّیَّانُ لَا یَمُوْتُ• اِعْمَلْ مَا شِئْتَ کَمَا تَدِیْنُ تُدَانُ• اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ •فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ خَیْرًا یَّرَہٗ• وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ شَرًّا یَّرَہٗ• بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ فِی الْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ• وَنَفَعَنَا وَاِیَّاکُمْ بِالْاٰیَاتِ وَالذِّکْرِ الْحَکِیْمِ• اِنَّہٗ تَعَالٰی مَلِکٌ کَرِیْمٌ جَوَادٌ بَرٌّ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ.

जुमा का दूसरा ख़ुतबा

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ• وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ• وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ• وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ• وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ• صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ• وَبَارَکَ وَسَلَّمَ اَبَدًا •لَا سِیَّمَا عَلَی اَوَّلِھِمْ بِالتَّصْدِیْقِ• اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِیْ بَکْرِ ِ الصِّدِّیْقِ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ• وَعَلٰی اَعْدَلِ الْاَصْحَابِ • اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِیْ حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ• وَعَلٰی جَامِعِ الْقُرْاٰنِ• اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِیْ عَمْرٍو عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ• وَعَلٰی اَسَدِ اللّٰہِ الْغَالِبِ• اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِی الْحَسَنِ عَلِیِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ• وَعَلٰی ابْنَیْہِ الْکَرِیْمَیْنِ الشَّھِیْدَیْنِ• سَیِّدَیْنَا اَبِیْ مُحَمَّدِ ِ الْحَسَنِ وَاَبِیْ عَبْدِ اللّٰہِ الْحُسَیْنِ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا• وَعَلٰی اُمِّھِمَا سَیِّدَۃِ النِّسَآءِ• اَلْبَتُوْلِ الزَّھْرَآءِ• رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا• وَعَلٰی سَائِرِ فِرَقِ الْاَنْصَارِ وَالْمُھَاجِرَۃِ• وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ یَآ اَھْلَ التَّقْوٰی وَاَھْلَ الْمَغْفِرَۃِ• اَللّٰھُمَّ انْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِیْنَ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ• رَبَّنَا یَا مَوْلَانَا وَاجْعَلْنَا مِنْھُمْ• وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِیْنَ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ• رَبَّنَا یَا مَوْلَانَا وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْھُمْ• عِبَادَ اللّٰہِ — رَحِمَکُمُ اللّٰہُ — اِنَّ اللّٰہَ یَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ• وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ• یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ• وَلَذِکْرُ اللّٰہِ تَعَالٰی اَعْلٰی وَاَوْلٰی وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَتَمُّ وَاَھَمُّ وَاَعْظَمُ وَاَکْبَرُ•

ईदुल-फ़ित्र का पहला ख़ुतबा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ حَمۡدَ الشَّاکِرِیۡنَ • اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ قَبۡلَ کُلِّ شَیۡءٍ • اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ بَعۡدَ کُلِّ شَیۡءٍ • وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ کَمَا حَمِدَہُ الۡاَنۡبِیَآءُ وَالۡمُرۡسَلُوۡنَ • وَالۡمَلٰٓئِکَۃُ الۡمُقَرَّبُوۡنَ وَعِبَادُہُ الصَّالِحُوۡنَ • وَخَیۡرًا مِّنۡ کُلِّ ذٰلِکَ کَمَا حَمِدَ نَفۡسَہٗ فِیۡ کِتَابِہِ الۡمَکۡنُوۡنِ • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • وَاَفۡضَلُ صَلَوَاتِ اللّٰہِ عَلٰی خَیۡرِ خَلۡقِ اللّٰہِ • وَقَاسِمِ رِزۡقِ اللّٰہِ وَزِیۡنَۃِ عَرۡشِ اللّٰہِ • نَبِیِّ الۡاَنۡبِیَآءِ حَبِیۡبِ رَبِّ الۡاَرۡضِ وَالسَّمَآءِ • الَّذِیۡ کَانَ نَبِیًّا وَّاٰدَمُ بَیۡنَ الطِّیۡنِ وَالۡمَآءِ • نَبِیِّ الۡحَرَمَیۡنِ اِمَامِ الۡقِبۡلَتَیۡنِ • وَسِیۡلَتِنَا فِی الدَّارَیۡنِ صَاحِبِ قَابَ قَوۡسَیۡنِ • جَدِّ الۡحَسَنِ وَالۡحُسَیۡنِ • دُرِّ اللّٰہِ الۡمَکۡنُوۡنِ • سِرِّ اللّٰہِ الۡمَخۡزُوۡنِ • عَالِمِ مَا کَانَ وَمَا یَکُوۡنُ • سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ خَاتَمِ النَّبِیِّیۡنَ • مَعۡدِنِ اَنۡوَارِ اللّٰہِ وَمَخۡزَنِ اَسۡرَارِ اللّٰہِ • نَبِیِّنَا وَحَبِیۡبِنَا وَمَوۡلَانَا وَمَلۡجَاَنَا وَمَاوٰنَا • مُحَمَّدٍ رَّسُوۡلِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ • وَ عَلٰٓی اٰلِہِ الطَّیِّبِیۡنَ وَاَصۡحَابِہِ الطَّاہِرِیۡنَ • وَعَلَیۡنَا مَعَھُمۡ یَا اَرۡحَمَ الرَّاحِمِیۡنَ • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • وَاَشۡھَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ • اِلٰھًا وَّاحِدًا اَحَدًا • لِلذُّنُوۡبِ غَفَّارًا وَّلِلۡعُیُوۡبِ سَتَّارًا • وَاَشۡھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَمَوۡلَانَا مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَرَسُوۡلُہٗ • اَرۡسَلَہٗ بِالۡھُدٰی وَدِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡھِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ • وَکَفٰی بِاللّٰہِ شَھِیۡدًا • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • اَمَّا بَعۡدُ فَیَآ اَیُّھَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ — رَحِمَنَا وَرَحِمَکُمُ اللّٰہُ — اِعۡلَمُوۡا اَنَّ یَوۡمَکُمۡ ھٰذَا یَوۡمٌ عَظِیۡمٌ یَوۡمٌ یَّتَجَلّٰی فِیۡہِ رَبُّکُمۡ بِاسۡمِہِ الۡکَرِیۡمِ • وَیَغۡفِرُ لِلصَّآئِمِیۡنَ • اَلَا ! وَلِلصَّآئِمِ فَرۡحَتَانِ • فَرۡحَۃٌ عِنۡدَ الۡاِفۡطَارِ وَفَرۡحَۃٌ عِنۡدَ لِقَاءِ الرَّحۡمٰنِ • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • اَلَا ! وَاِنَّ نَبِیَّکُمۡ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ قَدۡ اَوۡجَبَ عَلَیۡکُمۡ فِیۡ ھٰذَا الۡیَوۡمِ عَلٰی کُلِّ مَنۡ یَّمۡلِکُ النِّصَابَ فَاضِلًا عَنِ الۡحَاجَۃِ الۡاَصۡلِیَّۃِ • عَنۡ نَّفۡسِہٖ وَعَنۡ صِغَارِ ذُرِّیَّتِہٖ • صَاعًا مِنۡ تَمۡرٍ اَوۡ شَعِیۡرٍ • اَوۡ نِصۡفَ صَاعٍ مِّنۡ بُرٍّ اَوۡ زَبِیۡبٍ • فَاَدُّوۡھَا طَیِّبَۃً بِھَا اَنۡفُسُکُمۡ • تَقَبَّلَھَا اللّٰہُ وَالصِّیَامَ مِنَّا وَمِنۡکُمۡ وَمِنۡ اَھۡلِ الۡاِسۡلَامِ • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • اَلَا ! وَاِنَّ رَبَّکُمۡ فَرَضَ فَرَآئِضَ فَلَا تَتۡرُکُوۡھَا • وَحَرَّمَ حُرُمَاتٍ فَلَا تَنۡتَھِکُوۡھَا • اَلَا ! وَاِنَّ نَبِیَّکُمۡ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ سَنَّ لَکُمۡ سُنَنَ الۡھُدٰی فَاسۡلُکُوۡھَا • اَللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکۡبَرُ اَللّٰہُ اَکۡبَرُ وَلِلّٰہِ الۡحَمۡدُ • اَمَّا بَعۡدُ فَیَآ اَیُّھَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ — رَحِمَنَا وَرَحِمَکُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی — اُوۡصِیۡکُمۡ وَنَفۡسِیۡ بِتَقۡوَی اللّٰہِ عَزَّ وَجَلَّ فِی السِّرِّ

وَالْاِعْلَانِ • فَاِنَّ التَّقْوٰی سَنَامُ ذُرَی الْاِیْمَانِ • وَاذْکُرُوا اللّٰہَ عِنْدَ کُلِّ شَجَرٍ وَّ حَجَرٍ • وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰہَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ • وَاَنَّ اللّٰہَ لَیْسَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ • وَاقْتَفُوْا اٰثَارَ سُنَنِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ • صَلَوَاتُ اللّٰہِ تَعَالٰی وَسَلَامُہٗ عَلَیْہِ وَعَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْنَ • فَاِنَّ السُّنَنَ ھِیَ الْاَنْوَارُ • وَزَیِّنُوْا قُلُوْبَکُمْ بِحُبِّ ھٰذَا النَّبِیِّ الْکَرِیْمِ • عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ اَفْضَلُ الصَّلَاۃِ وَالتَّسْلِیْمِ • فَاِنَّ الْحُبَّ ھُوَ الْاِیْمَانُ کُلُّہٗ • اَلَا ! لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّۃَ لَہٗ • اَلَا ! لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّۃَ لَہٗ • اَلَا ! لَا اِیْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّۃَ لَہٗ • رَزَقَنَا اللّٰہُ تَعَالٰی وَاِیَّاکُمْ حُبَّ حَبِیْبِہِ النَّبِیِّ الْکَرِیْمِ • عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ اَکْرَمُ الصَّلَاۃِ وَالتَّسْلِیْمِ • کَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا وَیَرْضٰی • وَاسْتَعْمَلَنَا وَاِیَّاکُمْ بِسُنَّتِہٖ • وَحَیَّانَا وَاِیَّاکُمْ عَلٰی مَحَبَّتِہٖ • وَتَوَفَّانَا وَاِیَّاکُمْ عَلٰی مِلَّتِہٖ • وَحَشَرَنَا وَاِیَّاکُمْ فِیْ زُمْرَتِہٖ • وَ سَقَانَا وَاِیَّاکُمْ مِنْ شَرْبَتِہٖ • شَرَابًا ھَنِیْئًا مَّرِیْئًا سَآئِغًا لَّا نَظْمَأُ بَعْدَہٗ اَبَدًا • وَاَدْخَلَنَا وَاِیَّاکُمْ فِیْ جَنَّتِہٖ • بِمَنِّہٖ وَرَحْمَتِہٖ وَکَرَمِہٖ وَرَأْفَتِہٖ • اِنَّہٗ ھُوَ الرَّءُوْفُ الرَّحِیْمُ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: اَلْبِرُّ لَا یَبْلٰی وَالذَّنْبُ لَا یُنْسٰی وَالدَّیَّانُ لَا یَمُوْتُ • اِعْمَلْ مَا شِئْتَ کَمَا تَدِیْنُ تُدَانُ • اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ • فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ خَیْرًا یَّرَہٗ • وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّۃٍ شَرًّا یَّرَہٗ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • بَارَکَ اللّٰہُ لَنَا وَلَکُمْ فِی الْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ • وَنَفَعَنَا وَاِیَّاکُمْ بِالْاٰیَاتِ وَالذِّکْرِ الْحَکِیْمِ • اِنَّہٗ تَعَالٰی مَلِکٌ کَرِیْمٌ جَوَادٌ بَرٌّ رَّءُوْفٌ رَّحِیْمٌ • اَقُوْلُ قَوْلِیْ ھٰذَا • وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ لِیْ وَلَکُمْ وَلِسَآئِرِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ • وَالْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ • اِنَّہٗ ھُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ اَللّٰہُ اَکْبَرُ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ •

ईदुलफ़ित्र व ईदुल अज़हा का दूसरा ख़ुतबा

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ • وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ • وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ • وَنَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ • وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ • بِالْھُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ اَرْسَلَہٗ • صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ • وَبَارَکَ وَسَلَّمَ اَبَدًا • لَا سِیَّمَا عَلٰی اَوَّلِھِمْ بِالتَّصْدِیْقِ • اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِیْ بَکْرِ نِ الصِّدِّیْقِ • رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ • وَعَلٰی اَعْدَلِ الْاَصْحَابِ • اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِیْ حَفْصٍ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ • رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ • وَعَلٰی جَامِعِ الْقُرْاٰنِ • اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ

اَبِیْ عَمْرٍو عُثْمَانَ بْنِ عَفَّانَ • رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ • وَعَلٰی اَسَدِ اللّٰہِ الْغَالِبِ • اَمِیْرِ الْمُؤْمِنِیْنَ اَبِی الْحَسَنِ عَلِیِّ بْنِ اَبِیْ طَالِبٍ • کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْھَہُ الْکَرِیْمَ • وَعَلَی ابْنَیْہِ الْکَرِیْمَیْنِ السَّعِیْدَیْنِ الشَّھِیْدَیْنِ • سَیِّدَیْنَا اَبِیْ مُحَمَّدِنِ الْحَسَنِ وَاَبِیْ عَبْدِ اللّٰہِ الْحُسَیْنِ • رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا • وَعَلٰی اُمِّھِمَا سَیِّدَۃِ النِّسَآءِ • الْبَتُوْلِ الزَّھْرَآءِ • صَلَوَاتُ اللّٰہِ تَعَالٰی وَسَلَامُہ عَلٰی اَبِیْھَا الْکَرِیْمِ • وَعَلَیْھَا وَعَلٰی بَعْلِھَا وَابْنَیْھَا • وَعَلٰی عَمَّیْہِ الشَّرِیْفَیْنِ الْمُطَھَّرَیْنِ مِنَ الْاَدْنَاسِ • سَیِّدَیْنَا اَبِیْ عُمَارَۃَ حَمْزَۃَ وَاَبِی الْفَضْلِ الْعَبَّاسِ • رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا • وَعَلٰی سَآئِرِ فِرَقِ الْاَنْصَارِ وَالْمُھَاجِرَۃِ • وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ یَآ اَھْلَ التَّقْوٰی وَاَھْلَ الْمَغْفِرَۃِ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • اَللّٰھُمَّ انْصُرْ مَنْ نَصَرَ دِیْنَ سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ • رَبَّنَا یَا مَوْلَانَا وَاجْعَلْنَا مِنْھُمْ • وَاخْذُلْ مَنْ خَذَلَ دِیْنَ سَیِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ اَجْمَعِیْنَ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ • رَبَّنَا یَا مَوْلَانَا وَلَا تَجْعَلْنَا مِنْھُمْ • ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • عِبَادَ اللّٰہِ — رَحِمَکُمُ اللّٰہُ — اِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ • وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ • یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ • وَلَذِکْرُ اللّٰہِ تَعَالٰی اَعْلٰی وَاَوْلٰی وَاَجَلُّ وَاَعَزُّ وَاَتَمُّ وَاَھَمُّ وَاَعْظَمُ وَاَکْبَرُ •

ईदुल अज़हा का पहला ख़ुतबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ حَمْدَ الشَّاکِرِیْنَ • اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ قَبْلَ کُلِّ شَیْءٍ • وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ بَعْدَ کُلِّ شَیْءٍ • وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ کَمَا حَمِدَہُ الْاَنْبِیَآءُ وَالْمُرْسَلُوْنَ • وَالْمَلٰٓئِکَۃُ الْمُقَرَّبُوْنَ وَعِبَادُہُ الصَّالِحُوْنَ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • وَاَفْضَلُ صَلَوَاتِ اللّٰہِ عَلٰی خَیْرِ خَلْقِ اللّٰہِ • وَقَاسِمِ رِزْقِ اللّٰہِ وَزِیْنَۃِ عَرْشِ اللّٰہِ • نَبِیِّ الْاَنْبِیَآءِ حَبِیْبِ رَبِّ الْاَرْضِ وَالسَّمَآءِ • اَلَّذِیْ کَانَ نَبِیًّا وَّاٰدَمُ بَیْنَ الطِّیْنِ وَالْمَآءِ • نَبِیِّ الْحَرَمَیْنِ اِمَامِ الْقِبْلَتَیْنِ • صَاحِبِ قَابَ قَوْسَیْنِ جَدِّ الْحَسَنِ وَالْحُسَیْنِ • دُرِّ اللّٰہِ الْمَکْنُوْنِ سِرِّ اللّٰہِ الْمَخْزُوْنِ • عَالِمِ مَا کَانَ وَمَا یَکُوْنُ • سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ • مَعْدِنِ اَنْوَارِ اللّٰہِ وَمَخْزَنِ اَسْرَارِ اللّٰہِ • نَبِیِّنَا وَحَبِیْبِنَا وَمَوْلَانَا وَمَلْجَانَا وَمَاوٰنَا • مُحَمَّدٍ رَّسُوْلِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ • وَعَلٰی اٰلِہِ الطَّیِّبِیْنَ وَاَصْحَابِہِ الطَّاھِرِیْنَ • وَعَلَیْنَا مَعَھُمْ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ • اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ • وَاللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ اَللّٰہُ اَکْبَرُ ؕ وَلِلّٰہِ الْحَمْدُ • وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ • اِلٰھًا وَّاحِدًا اَحَدًا لِلذُّنُوْبِ غَفَّارًا وَّلِلْعُیُوْبِ سَتَّارًا • وَاَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ • اَرْسَلَہٗ بِالْھُدٰی وَدِیْنِ الْحَقِّ

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ • وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا • اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ
وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ • اَمَّا بَعْدُ فَيَآ اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ — رَحِمَنَا وَرَحِمَكُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى — اِعْلَمُوْا اَنَّ يَوْمَكُمْ هٰذَا يَوْمٌ
عَظِيْمٌ • قَالَ شَفِيْعُ الْمُذْنِبِيْنَ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ • مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَا عَمِلَ ابْنُ
اٰدَمَ مِنْ عَمَلٍ يَوْمَ النَّحْرِ اَحَبَّ اِلَى اللّٰهِ مِنْ اِهْرَاقِ الدَّمِ • وَاِنَّهٗ لَيَاْتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِقُرُوْنِهَا وَاَشْعَارِهَا
وَاَظْلَافِهَا • وَاِنَّ الدَّمَ لَيَقَعُ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى بِمَكَانٍ قَبْلَ اَنْ يَّقَعَ بِالْاَرْضِ • فَطِيْبُوْا بِهَا نَفْسًا • اَللّٰهُ اَكْبَرُ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ • اَلَا! وَاِنَّ نَبِيَّكُمْ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
قَدْ اَوْجَبَ عَلٰى كُلِّ مَنْ يَّمْلِكُ النِّصَابَ فَاضِلًا عَنْ حَوَائِجِهِ الْاَصْلِيَّةِ فِيْ هٰذَا الْيَوْمِ اَنْ يَّنْحَرَ الْاُضْحِيَّةَ •
وَوَقْتُهَا بَعْدَ صَلَاةِ الْعِيْدِ الْاَضْحٰى لِلْبَلَدِيِّ • وَلِلْاَعْرَابِيِّ بَعْدَ طُلُوْعِ فَجْرِ هٰذَا الْيَوْمِ • فَحَسِّنُوا الْاُضْحِيَّةَ •
وَلَا تَذْبَحُوْا عَرْجَآءَ وَلَا عَوْرَآءَ • وَلَا عَجْفَآءَ وَلَا مَقْطُوْعَةَ الْاُذُنِ وَلَوْ بِوَاحِدَةٍ • فَاِنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: قَالَ حَسِّنُوْا: ضَحَايَاكُمْ • فَاِنَّهَا عَلَى الصِّرَاطِ مَطَايَاكُمْ • فَعَنْ كُلِّ وَاحِدٍ مِّنْكُمْ شَاةٌ سَوَآءٌ
كَانَتْ ذَكَرًا اَوْ اُنْثٰى • اَوْ سُبُعُ الْبَقَرَاتِ اَوِ الْاِبِلِ • وَكَبِّرُوْا عَقِيْبَ الصَّلَاةِ الْمَفْرُوْضَةِ مِنْ فَجْرِ الْعَرْفَةِ اِلٰى
عَصْرِ اَيَّامِ التَّشْرِيْقِ • اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ • وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ
وَاِسْمٰعِيْلُ • رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ • اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ
اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ • اَمَّا بَعْدُ فَيَآ اَيُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ — رَحِمَنَا وَرَحِمَكُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى — اُوْصِيْكُمْ وَنَفْسِيْ
بِتَقْوَى اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ فِي السِّرِّ وَالْاِعْلَانِ • فَاِنَّ التَّقْوٰى سَنَامُ ذُرَى الْاِيْمَانِ • وَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ كُلِّ شَجَرٍ
وَّحَجَرٍ • وَاعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ • وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ • وَاقْتَفُوْا اٰثَارَ سُنَنِ سَيِّدِ
الْمُرْسَلِيْنَ • صَلَوَاتُ اللّٰهِ تَعَالٰى وَسَلَامُهٗ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ • فَاِنَّ السُّنَنَ هِيَ الْاَنْوَارُ • وَزَيِّنُوْا
قُلُوْبَكُمْ بِحُبِّ هٰذَا النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ • عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ اَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيْمِ • فَاِنَّ الْحُبَّ هُوَ الْاِيْمَانُ
كُلُّهٗ • اَلَا! لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ • اَلَا! لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ • اَلَا! لَآ اِيْمَانَ لِمَنْ لَّا مَحَبَّةَ لَهٗ • رَزَقَنَا
اللّٰهُ تَعَالٰى وَاِيَّاكُمْ حُبَّ حَبِيْبِهٖ هٰذَا النَّبِيِّ الْكَرِيْمِ • عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ اَكْرَمُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيْمِ • كَمَا يُحِبُّ
رَبُّنَا وَيَرْضٰى • وَاسْتَعْمَلَنَا وَاِيَّاكُمْ بِسُنَّتِهٖ • وَحَيَّانَا وَاِيَّاكُمْ عَلٰى مَحَبَّتِهٖ • وَتَوَفَّانَا وَاِيَّاكُمْ عَلٰى مِلَّتِهٖ •
وَحَشَرَنَا وَاِيَّاكُمْ فِيْ زُمْرَتِهٖ • وَسَقَانَا وَاِيَّاكُمْ مِنْ شَرْبَتِهٖ • شَرَابًا هَنِيْئًا مَّرِيْئًا سَآئِغًا لَّا نَظْمَأُ بَعْدَهٗ اَبَدًا •
وَاَدْخَلَنَا وَاِيَّاكُمْ فِيْ جَنَّتِهٖ بِمَنِّهٖ وَرَحْمَتِهٖ وَكَرَمِهٖ وَرَاْفَتِهٖ • اِنَّهٗ هُوَ الرَّءُوْفُ الرَّحِيْمُ • اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ • عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: اَلْبِرُّ لَا يَبْلٰى
وَالذَّنْبُ لَا يُنْسٰى وَالدَّيَّانُ لَا يَمُوْتُ • اِعْمَلْ مَا شِئْتَ كَمَا تَدِيْنُ تُدَانُ • اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ

الرَّجِيْمِ • فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ • وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ • اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ • بَارَكَ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ فِي الْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ • وَنَفَعَنَا وَاِيَّاكُمْ بِالْاٰيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ • اِنَّهٗ تَعَالٰى مَلِكٌ كَرِيْمٌ جَوَادٌ بَرٌّ رَّءُوْفٌ رَّحِيْمٌ • اَقُوْلُ قَوْلِيْ هٰذَا • وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ لِيْ وَلَكُمْ وَلِسَآئِرِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ • وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ • اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ • اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ • وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ •

(ख़ुतबा-ए-सानिया बराए ईदुल अज़हॉ पिछले सफ़हात में पढ़ीए)

मसनून दुआएं

अज़ान के बाद की दुआः जब अज़ान ख़त्म हो जाये तो मोअज़्ज़िन और सुनने वाले दुरूद शरीफ़ पढ़ें, उस के बाद ये दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّآمَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَآئِمَةِ آتِ سَيِّدَنَا مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَنِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ •

मस्जिद में दाख़िल होने की दुआः जब मस्जिद में जाये तो पहले दायाँ क़दम अंदर रखे,दुरूद शरीफ़ पढ़े और ये दुआ पढ़ेः رَبِّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ.

मस्जिद से निकलने की दुआः जब मस्जिद से निकले तो पहले बायां क़दम बाहर रखे,दुरूद शरीफ़ पढ़े और ये दुआ पढ़ेः رَبِّ اغْفِرْلِيْ ذُنُوْبِيْ وَافْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ فَضْلِكَ.

नमाज़ के बाद की दुआएं

✱ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَاِلَيْكَ يَرْجِعُ السَّلَامُ فَحَيِّنَا رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ دَارَ السَّلَامِ وَتَبَارَكْتَ رَبَّنَا وَتَعَالَيْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ •

तर्जुमा: ए अल्लाह! तू ही सलामती वाला है, और तेरी ही तरफ़ से सलामती है, और तेरी ही तरफ़ सलामती लोटती है। ए हमारे परवरदिगार! तो हमको सलामती के साथ ज़िंदा रख और सलामती वाले घर जन्नत में दाख़िल फ़र्मा। ए हमारे परवरदिगार! तू बरकत वाला है। और ए जलाल व बुज़ुर्गी वाले, तू बुलंद है।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! दिल टेढ़े ना कर बाद इस के कि तूने हमें हिदायत दी और हमें अपने पास से रहमत अता कर बेशक तु है बड़ा देने वाला।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! हमें ना पकड़ अगर हम भूलें या चूकें, ऐ हमारे रब! और हम पर भारी बोझ ना रख जैसा तू ने हमसे अगलों पर रखा था, ऐ हमारे रब! और हम पर वो बोझ ना डाल जिसकी हमें सहार (बर्दाश्त) ना हो और हमें माफ़ फ़र्मा दे और बख़्श दे और हम पर रहम कर तू हमारा मौला है। तू काफ़िरों पर हमें मदद दे।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! हम ईमान लाए तू हमारे गुनाह माफ़ कर और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब बख़्श दे हमारे गुनाह और जो ज़्यादतियां हमने अपने काम में कीं और हमारे क़दम जमा दे और हमें इन काफ़िर लोगों पर मदद दे।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब!हम ईमान लाए तू हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर और तू सबसे बेहतर रहम करने वाला है।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाईयों को जो हमसे

पहले ईमान लाए और हमारे दिल में ईमान वालों की तरफ़ से कीना (बैर) ना रख। ऐ हमारे रब! बे-शक तू ही निहायत मेहरबान रहम वाला है।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! हमने अपने आप पर बुरा किया, अगर तु हमें ना बख़्शे और हम पर रहम ना करे तो हम ज़रूर नुक़्सान वालों में हुए।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ •

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! हम पर सब्र उन्डेल दे और हमें मुसलमान उठा।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ•

तर्जुमा: ऐ हमारे रब! मुझे बख़्श दे और मेरे माँ बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ायम होगा।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا•

तर्जुमा:ऐ हमारे रब! हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे काम में हमारे लिए राह याबी के सामान कर।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ•

तर्जुमा:ऐ मेरे रब! मेरे दिल में डाल कि मैं तेरी नेअमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर की, और मैं वो काम करूँ जो तुझे पसंद आए, और मेरे लिए मेरी औलाद में सलाह रख, मैं तेरी तरफ़ रुजू लाया (तौबा की), और मैं मुसलमान हूँ ।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ•

तर्जुमा: ऐ मेरे रब!मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं शुक्र करूँ तेरे एहसान का जो तू ने मुझ पर और मेरे माँ बाप पर किए और ये कि मैं वो भला काम करूँ जो तुझे पसंद आए और मुझे अपनी रहमत से अपने उन बंदों में शामिल कर जो तेरे क़ुरबे ख़ास के सज़ावार (लायक़) हैं।

* اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे राहे रास्त पर दवाम, परहेज़गारी, पाक दामनी और दौलत-मंदी मांगता हूँ।

* اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِیْ بِمَا عَلَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْنِیْ بِمَا یَنْفَعُنِیْ وَزِدْنِیْ عِلْمًا•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मुझे उस इल्म से नफ़ा दे जो तूने मुझे अता किया और मुझे उन चीज़ों का इल्म अता फ़र्मा जो मेरे लिए नफ़ा बख़्श हों और मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़र्मा।

* اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّعَمَلًا مُتَقَبَّلًا وَّرِزْقًا طَيِّبًا•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इल्मे नाफ़े, अमले मक़बूल और रिज़्के हलाल तलब करता हूँ।

* اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ وَالْاَمَانَةَ وَحُسْنَ الْخُلُقِ وَالرِّضَا بِالْقَدْرِ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सेहत व तंदरुस्ती, पाकी व परहेज़गारी, अमानतदारी, हुस्न-ए-अख़लाक़ और तक़दीर पर रज़ा का तालिब हूँ।

* اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِیْ مِنَ النِّفَاقِ، وَعَمَلِیْ مِنَ الرِّيَآءِ، وَلِسَانِیْ مِنَ الْكِذْبِ، وَعَيْنِیْ مِنَ الْخِيَانَةِ، فَإِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! तू मेरे दिल को निफ़ाक़ से, मेरे अमल को रिया से, मेरी ज़बान को झूट से और मेरी आँख को ख़ियानत से पाक कर दे। यक़ीनन तू ख़ियानत करने वाली आँखों को जानता है और उन चीज़ों को भी जानता है जो सीनों में पोशीदा (छुपे हुऐ) हैं।

* اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَضَلَعِ الدَّيْنِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ रंज व ग़म से, आजिज़ी और सुस्ती से, बुज़दिली और कंजूसी से, क़र्ज़ चढ़ जाने और लोगों के ग़लबा से।

* اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَالْهَرَمِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं आजिज़ी, सुस्ती, बुज़दिली और कंजूसी, इंतिहाई बुढ़ापे और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहता हूँ।

❋ اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِیُّهَا وَمَوْلٰهَا•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! तू मेरे नफ़्स को उस की परहेज़गारी अता फ़र्मा और उसे पाक कर दे, तू बेहतरीन पाक करने वाला है, तूही नफ़्स का वाली और उस का मालिक है।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا یَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَا یَخْشَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَا یُسْتَجَابُ لَهَا•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ऐसे इल्म से जो नफ़ा ना दे और ऐसे दिल से जो ना डरे और ऐसे नफ़्स से जो आसूदा ना हो और ऐसी दुआ से जो क़बूल ना हो।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं मोमिनीन की अदावत व मुख़ालिफ़त, निफ़ाक़ व रियाकारी और बदखुल्क़ी से तेरी पनाह चाहता हूँ।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कुफ़्र, मोहताजी और क़ब्र के अज़ाब से।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ मोहताजी, नेकियों की कमी और ज़िल्लत व रुस्वाई से और तेरी पनाह चाहता हूँ इस से कि मैं किसी को या ख़ुद सताया जाऊं।

❋ اَللّٰهُمَّ رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ•

तर्जुमा: ऐ परवरदिगार! तू अपने ज़िक्र व शुक्र और हुस्ने इबादत पर मेरी मदद फ़र्मा।

❋ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! तू मुझे रिज़्क-ए-हलाल अता कर के हराम से बे-नियाज़ कर दे और अपने फ़ज़ल व करम से मुझे दूसरों से बेपरवाह कर दे।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِیَتِكَ وَفُجَاءَةِ نَقْمَتِكَ وَجَمِیْعِ سَخَطِكَ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ तेरी नेअमत के ज़वाल

(जाने) से, और तेरी आफ़ियत के बदल जाने से और तेरे अचानक इताब (सज़ा) से और तेरी हर तरह की नाराज़ी से।

❋ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّمَالَمْ اَعْمَلْ•

तर्जुमा: ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस अमल के शर से जो में कर चुका और उस अमल के शर से भी जो मैंने नहीं किया।

یارب! شدہ ام تبہ بیامرزمَرا　　شدروے دلم سیَہ بیامرزمَرا
درداکہ بجزگنہ نہ کردم کارے　　بخشندۂ ہرگنہ بیامرزمَرا

शजर-ए-आलिया

हज़राते आलिया क़ादरिया बर्कातिया रज़विय्या

या इलाही रहम फ़रमा मुस्तफ़ा के वास्ते
या रसूलल्लाह करम कीजे ख़ुदा के वास्ते

मुश्किलें हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते
कर बलाऐं रद शहीदे कर्बला के वास्ते

सय्यदे सज्जाद के सदक़े में सादिक़ रख मुझे
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते

सिदक़े सादिक़ का तसद्दुक़ सादिकुल-इस्लाम कर
बे ग़ज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते

बहरे मारूफ़ व सरि मारूफ़ दे बेख़ुद सरी
जुन्दे हक़ में गिन जुनैदे बा-सफ़ा के वास्ते

बहरि शिब्ली, शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा
एक का रख अबदे वाहिद बे-रिया के वास्ते

बुल फ़रह का सदक़ा कर, ग़म को फ़रह दे हुस्न व साअद
बुल हसन और बू-सइदे साद ज़ा के वास्ते

कादरी कर कादरी रख कादरियों में उठा
क़द्रे अब्दुल क़ादिरे क़ुदरत नुमा के वास्ते

अहसनल्लाहु लहुम रिज़्क़न से दे रिज़्के हसन
बंद-ए-रज़्ज़ाक़ ताजुल अस़फिया के वास्ते

नस्र अबी सालिह का सदक़ा सालिह व मंसूर रख
दे हयाते दीं, मुह़िये जाँ-फ़ज़ाँ के वास्ते

तुरे इर्फ़ान व उलुव्व, व हमद व हुस्ना व बहा
दे अली, मूसा, हसन, अहमद, बहा के वास्ते

बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे ग़म गुलज़ार कर
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते

ख़ान-ए-दिल को ज़िया दे रुये ईमां को जमाल
शह ज़िया मौला जमालुल-औलिया के वास्ते

दे मुहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए
ख़्वाने फ़ज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते

दीन व दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से
इश्क़े हक़ दे इश्क़िए इश्क़-इंतिमा के वास्ते

हुब्बे अहले बैत दे आले मुहम्मद के लिए
कर शहीदे इश्क़ हमज़ा पेशवा के वास्ते

दिल को अच्छा, तन को सुथरा जान को पुर-नूर कर
अच्छे प्यारे शम्से दीं बदरुल उला के वास्ते

दो-जहाँ में ख़ादिमे आले रसूलुल्लाह कर
हज़रते आले रसूले मुक़तदा के वास्ते

नूरे जान व नूरे ईमां, नूरे क़ब्र व हश्र दे
बुल हुसैने अहमदे नूरी लिक़ा के वास्ते

कर अता अहमद रज़ा-ए-अहमदे मुर्सल मुझे
मेरे मौला हज़रते अहमद रज़ा के वास्ते

हामिद व महमूद और हम्माद व अहमद कर मुझे
मेरे मौला हज़रते हामिद रज़ा के वास्ते

साय-ए-जुमला मशाइख़ या ख़ुदा हम पर रहे
रहम फ़रमाँ आले रहमां मुसतफ़ा के वास्ते

बहरे इब्राहीम भी लुतफ़ व अता-ए-ख़ास हो
नूर की सरकार से हिस्सा गदा के वास्ते

ऐ ख़ुदा अख़तर रज़ा को चर्ख़ पर इस्लाम के
रख दरख़शां हर घड़ी अपनी रज़ा के वास्ते

सदक़ा इन आयाँ का दे छ ऐनः इज़, इलम व अमल
अफ़व, इरफ़ाँ, आफ़ियत हम सब गदा के वास्ते

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किल-कुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊं नज़ाअ की तकलीफ़ को
शादि-ए-दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरह की जब आए सख़्त रात
उनके प्यारे मुँह की सुबहे जाँ-फ़ज़ाँ का साथ हो

या इलाही जब पड़े महशर में शोरे दार व गीर
अमन देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौसर शहे जूद व अता का साथ हो

या इलाही सर्द-मेहरी पर हो जब ख़ूर्शीदे हश्र
सय्यदे बे-साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मि-ए-महशर से जब भड़कें बदन
दामने महबूब की ठंडी हआ का साथ हो

या इलाही नाम-ए-आमाल जब खुलने लगें
ऐब पोशे ख़लक़ सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आँखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे ख़ंद-ए-बेजा रुलाए
चश्मे गिरयाने शफ़ि-ए-मुर्तजा का साथ हो

या इलाही रंग लाएं जब मेरी बे-बाकियाँ
उनकी नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुल सिरात
आफ़ताबे हाश्मी नूरुल हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बि सल्लिम कहने वाले ग़म ज़ुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआयें नेक मैं तुझसे करूँ
क़ुदसियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब रज़ा ख़्वाबे गिरां से सर उठाए
दौलते बेदारे इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

माख़ज़ व मराजे पर एक नज़र

क्र.स.	नाम किताब	साहब-ए-किताब
1-	क़ुराने पाक	अल्लाह तबारक व ताला
2-	कंज़ुल इमान तर्जुमा क़ुरआन	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी
3-	ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	सदरुल अफ़ाज़िल नईमउद्दीन मुरादाबादी
4-	तफ़सीरे रूहुल ब्यान ज:1	शेख़ इस्माईल हक़्क़ी बरोसवी
5-	तफ़सीरे नईमी , ज:1	हकीमुल उम्मत अहमद यार ख़ां नईमी
6-	बुख़ारी शरीफ़, ज:1	हाफ़िज़ुल हदीस इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी
7-	मुस्लिम शरीफ़, ज:1	इमाम अबुल हसन मुस्लिम बिन हज्जाज क़ोशैरी
8-	सुंनने इबने माजा	मुहम्मद बिन यज़ीद बिन माजा क़ज़विनी
9-	मिशकातुल मसाबीह	शेख़ मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ख़तीब तबरेज़ी
10-	कंज़ुल उम्मल, ज:4	अलाउद्दीन अलमुत्तक़ी बिन हुसामुद्दीन
11-	अत्तरग़ीब वत्तरहीब ज:1	इमाम अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल क़वी मंज़री
12-	मुनीयतुल मुसल्ली	अल्लामा सदीदुद्दीन बिन मुहम्मद काशग़री
13-	नुज़हतुल क़ारी, ज:2	मुफ़्ती मुहम्मद शरीफ़ुल हक़ अमजदी
14-	हिदाया, ज:1	बुरहानुद्दीन अली बिन अबू बकर मुर्ग़ीनानी
15-	फतावा रज़वीया, ज:2,3	आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी
16-	बहारे शरीयत , ज:2,3,4	सदरुश शरीअह अमजद अली आज़मी
17-	नूरुल एज़ाह	शेख़ हसन बिन अम्मार शरमबुलाली
18-	अहयाउल उलुम अरबी ज:1	हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली
19-	मुकाशफ़तुल-क़ुलूब मुतर्जिम	हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली
20-	नुज़हतुल मजालिस, अरबी, ज:1	इमाम अब्दुर रहमान बिन अब्दुस्सलाम सफ़ोरी
21-	दुर्रतुन्नासिहीन, अरबी	उसमान बिन हसन बिन अहमद ख़ोबवी
22-	रियाज़ुन्नासिहीन फ़ारसी	मौलाना मुहम्मद बिन शेख़ मुहम्मद रबहामी
23-	तंबीहुल ग़ाफिलीन उर्दू	अल्लामा इबने हजर असक़लानी
24-	शरहुस्सुदूर मुतर्जिम	अल्लामा जलालुद्दीन सिवती
25-	क़लयुबी अरबी	अल्लामा शेख़ शहाबुद्दीन
26-	रुहानी हिकायात अव्वल	अल्लामा अबदुल मुसतफ़ा आज़मी

अज़मते नमाज़ और उसके मुअल्लिफ

अज़ :मौलाना जुनैद अहमद मिस्बाही
उस्ताज़ जामिआ अशरफ़िया मुबारकपुर

नमाज़ के विषय पर एक ज़माना क़लम उठा चुका है और ये मुबारक सिलसिला जारी है। अरबी, फ़ारसी ज़बान में जहां ओलमा-ए-किराम ने नमाज़ की अहमियत-व-इफ़ादीयत पर बहुत कुछ तहरीर किया है, वहीं उर्दू ज़बान में भी इस विषय पर काफ़ी ज़ख़ीरा है और क्यों ना हो नमाज़ अहम्मुल फ़राइज़ है। बार-बार क़ुर्आन व अहादीस में इस की ताकीद की गई है। मगर हिन्दी ज़बान में बहुत कम काम हुआ है।

ज़ेरे नज़र किताब "अज़मते नमाज़" उस्तादे गिरामी वक़ार हज़रत मौलाना अल्हाज साजिद अली मिस्बाही مدظلہ العالی उस्ताज़ जामिआ अशरफिया, मुबारकपुर की तसनीफ़ी ख़िदमात के बाब में एक और इज़ाफ़ा है। ये किताब उर्दू ज़बान में छप कर काफ़ी मक़बूल हुई; इसलिए किताब की अहमियत व इफ़ादीयत के पेशे नज़र उस को हिन्दी में भी प्रकाशित किया जा रहा है।

हिन्दी ज़बान में कम्पोज़िंग के बाद हज़रत ने प्रूफ़ करने के लिए ये किताब राक़िम के हवाले की और प्रूफ़ के बाद कुछ तअस्सुरात लिखने का हुक्म दिया, हुक्म की बजा आवरी करते हुए प्रूफ़ करते वक़्त किताब का गहराई से मुताला किया तो अंदाज़ा हुआ कि हज़रत ने आम अंदाज़े तहरीर से हट कर पहले नमाज़ की अहमियत व इफ़ादीयत पर रोशनी डाली है और इस के बाद नमाज़ छोड़ने वालों के अज़ाब व इक़ाब को अहादीस व वाक़ियात की रोशनी में इस अंदाज़ से बयान फ़रमाया है

कि दिल प्रभावित हुए बग़ैर नहीं रह सकता। यक़ीनन ये किताब बेनमाज़ियों को आख़िरत के अज़ाब से डराने वाली और नमाज़ी बनाने वाली है। किताब में अहादीस व वाक़ियात ज़िक्र करने के बाद क़ौम के फ़रज़न्दों से गुनाहों से तौबा और नमाज़ की पाबंदी की जो दर्द मंदाना गुज़ारिश की गई है वो किताब की अहमियत को दो-बाला कर रही है और फिर किताब के अख़ीर में कुर्आने पाक की ग्यारह सूरतें, मसनून दुआएं, नमाज़े जुमा व ईदैन के ख़ुतबात नमाज़ के तरीक़े के साथ ज़िक्र कर के क़ारी (किताब पढ़ने वाले) को नेक और अइम्मा के लिए मुआविन (मदद गार) बनाने की कोशिश की है। अल्लाह तआला इस किताब को हम सब के लिए मुफीद बनाए और हमें नमाज़े बा जमाअत का पाबन्द बनाए। आमीन

साहिबे तसनीफ़, उसताज़े मुकर्रम, हज़रत मौलाना **साजिद अली मिस्बाही** साहेब क़िबला एक जय्यद (अच्छे) आलिम और ख़ुदादाद इल्मी सलाहीयत के मालिक हैं।

आपकी तालीम व तर्बीयत दारुल उलूम अहले सून्नत शमसुल उलूम मेहन्दुपार संतकबीर नगर

दारुल उलूम अहले सून्नत तनवीरुल इस्लाम, अमरडोभा, संतकबीर नगर

जामिआ अमजदिया रज़विय्या, घोसी, मऊ

और जामिआ अशरफिया मुबारक पूर में हुई।

आपने अच्छे तालीमी माहौल के साथ बा कमाल और माहिर असातिज़ा से तर्बीयत पाई,अल्लाह-तआला ने आपको ज़िहानत व फ़तानत (अक़्लमंदी व होशमंदी) से भी ख़ूब नवाज़ा है यही वजह है कि आप एक बेहतरीन आलिमे दीन होने के साथ साथ तहक़ीक़ी मुसन्निफ़ भी हैं।

तदरीसी ख़िदमात:

फ़राग़त के बाद दारुल उलूम वारसिया लखनऊ में शव्वाल 1419ह / 27 / जनवरी 1999 से 8 / शव्वाल 1422 ह / 24 / दिसंबर 2001 इ० तक, तीन साल बहैसीयत नायबे सदरूल मुदर्रेसिन ख़िदमत की। इस के बाद जामिआ अशरफिया में दो साल शोबए तरबियते तदरीस में रहे। 5 / शव्वाल 1422 ह० / 25 / दिसंबर 2001 इ० ता 8 / शव्वाल 1422 ह० 2003 इ।

फिर 9/ शव्वाल 1424 ह / दिसंबर 2003 इ से अबदक जामिआ अशरफिया में दीनी ख़िदमात अंजाम दे रहे हैं और मोतमद (क़ाबिले ऐतबार असातिज़ा में उन्का शुमार है।

अब तक आपकी दर्ज ज़ैल किताबें छप कर दादे तहसीन वसूल कर चुकी है:

(1) इक़ामत के वक़्त खड़े होने की तीन सूरतें
(2) शादी और तर्ज़े ज़िंदगी
(3) फरहंगे अलफ़ाज़ फ़ारसी की पहली
(4) फरहंगे अलफ़ाज़ फ़ारसी की दूसरी
(5) अज़मते नमाज़
(6) क़वाइदुन नहव
(7) दिरासतुस सर्फ़
(8) मिरज़ात हल्ले मिरक़ात (हाशिया मिर्क़ात)
(9) हाशिया मीज़ानुस सर्फ़
(10) हाशिया मुनशइब
(11) हाशीया अल-मदीहुन्नबवी
(12) अज़मते ज़कात
(13) मलिकुल उलमा क़ाज़ी शहाबुद्दीन दौलत आबादी

इस के इलावा मतबूआ (छपा हुआ) और ग़ैर मतबूआ (जो छपा ना

हो) तहक़ीक़ी मक़ालात की तादाद भी तक़रीबन 25/ है जो मजलिसे शरई जामिआ अशरफिया के तहत होने वाले फ़िक़ही सेमीनार के लिए लिखे जानेवाले मक़ालात के इलावा हैं।

आप फ़ित्री (स्वभाविक) तौर पर मवाद की तलाश व जुसतुजू के ख़ूगर (आदी) और तहक़ीक़ व मुताला के आदी हैं इसलिए आपकी तसनीफ़ात व तालीफ़ात बड़ी वक़ीअ (अहम) और पुरमग़ज़ हैं शवाहिद व दलाइल की फ़रावानी (ज़्यादती) और अक़ाइदे हक़्क़ा की तर्जुमानी आपकी तहरीरों की खुसूसिआत हैं।

अल्लाह-तआला हज़रत के इल्म व अमल और उम्र में बरकत अता फ़रमाए। आमीन

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मज़ामीन की एक झलक

	मज़ामीन	पेज़ न०
(1)	तफसीलात	2
(2)	शरफ़े इंतिसाब	3
(3)	हदीय-ए-शुक्र व सिपास	4
(4)	दुआइया कलिमात	5
(5)	तअस्सुराती कलिमात	6
(6)	अनोखी फ़िक्र व तदबीर	7
(7)	मंज़ूम तबसिरा(1)	10
(8)	मंज़ूम तबसिरा(2)	12
(9)	मंज़ूम तबसिरा(3)	14
(10)	ह़ासिले मुतालआ	16

बाबे अव्वल

(11)	नमाज़ की अज़मत व अहमियत	19
(12)	इरशादाते रब्बानी	22
(13)	अहादीसे मुस्तफ़ा	23
(14)	पाँच वक़्त की नमाज़ें और उनका समरा	25
(15)	नमाज़ किस तरह पढ़नी चाहिए	27
(16)	एक सबक़ आमोज़ ह़दीस	28
(17)	बारगाहे ख़ुदावंदी का अदब	29
(18)	ह़ालते नमाज़ में शयातीन का ह़मला	31

(19) दो नमाज़ों में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ _____ 33
(20) शैतान की तरफ़ तवज्जोह ना करने का इनाम _____ 34
(21) जन्नत में ले जाने वाला अमल _____ 35
(22) इमामे आज़म رضی اللہ عنہ की बसीरत _____ 36
(23) राहिब के इस्लाम लाने का वाक़िआ _____ 37
(24) खूबियां हैं क्या-क्या नमाज़ में _____ 38
(25) क़यामत के दिन रोशन चेहरे _____ 39
(26) नमाज़ी के लिए नौ सआदतें _____ 40
(27) क़ैदख़ाना का नमाज़ी और अमीरे ख़ुरासान _____ 41
(28) नमाज़ी औरत और ज़ालिम शौहर _____ 43
(29) नमाज़ की दस नुमायां खूबीयां _____ 44
(30) वीरान घर की आबादी का बसीरत अफ़रोज़ वाक़िआ 45
(31) ख़ुदा की इबादत का अनोखा जज़बा _____ 47
(32) जन्नत में कौन रहेगा? _____ 48
(33) एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत _____ 49
(34) जन्नत का अज़ीमुश्शान महल _____ 51
(35) दुनिया में जन्नती बीवी से मुलाक़ात _____ 52
(36) महज़ दावा बेकार है _____ 53
(37) सो दीनारों की थैली _____ 53
(38) नमाज़ी और शेर का सामना _____ 54
(39) इस उम्मत के नमाज़ियों की मिसाल _____ 56
(40) नमाज़ें इन ही औक़ात में क्यों? _____ 57
(41) बुज़ुर्गों की नमाज़ और उनके इर्शादात _____ 61

बाबे दोम

(42) नमाज़ छोड़ने वालों का दर्द-नाक अंजाम _____ 65
(43) बे नमाज़ियों के लिए वईदे इलाही _____ 66
(44) आतिश-ए-जहन्नम की होलनाकियां_____ 66
(45) "वैल" किसे कहते हैं? _____ 67
(46) "ग़य्य" क्या चीज़ है? _____ 68
(47) उख़रवी नुक़्सान से बचने की सूरत _____ 69
(48) मैदाने महशर की कैफ़ियत _____ 71
(49) बे नमाज़ियों से संबंधित इरशादे रसूल_____ 73
(50) बे नमाज़ी का हश्र_____ 75
(51) बे नमाज़ी, सहाबा की नज़र में _____ 76
(52) अहदे नबवी का एक दिल-दोज़ वाक़िया_____ 77
(53) अहदे सिद्दीक़ी का एक इबरतनाक मंज़र _____ 79
(54) मदीना की एक औरत का दर्द-नाक अज़ाब _____ 79
(55) समुंद्र में बे-नमाज़ी की नहूसत का असर _____ 81
(56) सरसब्ज़ व शादाब गांव की तबाही का सबब _____ 81
(57) एक बे-नमाज़ी और फ़र्यादी ऊंट _____ 82
(58) बे-नमाज़ी मुसाफ़िर और भागता हुआ शैतान _____ 85
(59) इबलीस से ज़्यादा हीलागर शख़्स _____ 86
(60) तर्के नमाज़ ज़िना से बदतर गुनाह_____ 87
(61) तारिकीनें जमाअत के लिए वईदें _____ 89
(62) तारिके जमाअत मलऊन है _____ 90
(63) जमाअत छोड़ने वाला जन्नत की ख़ुशबू नहीं पाएगा _ 91
(64) जमाअत छोड़ने वाले का अंजाम_____ 91
(65) नमाज़ बा-जमाअत में सुस्ती पर मसाइब_____ 92

बाबे सोम

(66) वुज़ू व नमाज़ के तरीक़े और मसाइल 94
(67) वुज़ू का तरीक़ा 94
(68) नीयते नमाज़ का बयान 95
(69) नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा 97
(70) औरत की नमाज़ का तरीक़ा 99
(71) बीमार की नमाज़ का तरीक़ा 100
(72) रकअतों की तादाद और तर्तीब 100
(73) रकअतों का तफ़सीली नक़्शा 101
(74) शरिअत की इस्तिलाहात 101
(75) नमाज़े वित्र 102
(76) नमाज़े तरावीह 103
(77) मुसाफ़िर और उस के अहकाम 103
(78) क़ज़ा नमाज़ों के अहकाम व मसाइल 105
(79) क़ज़ाए उमरी का तरीक़ा 107
(80) निय्यत का तरीक़ा 108
(81) क़ज़ाए उमरी की कुछ आसान सूरतें 109
(82) फ़िदय-ए-नमाज़ के मसाइल 110
(83) नमाज़े ईदैन का तरीक़ा 111
(84) नमाज़े तहीय्यतुल वुज़ू 112
(85) नमाज़े तहीय्यतुल मस्जिद 112
(86) नमाज़े इशराक़ 112
(87) नमाज़े चाश्त 113
(88) नमाज़े अव्वाबीन 113
(89) नमाज़े तहज्जुद 113
(90) सलातुल्लैल 114

(91) नमाज़े इस्तिख़ारा 114
(92) नमाज़े हाजत 115
(93) नमाज़े गौसिया 116
(94) नमाज़े सफ़र 116
(95) नमाज़े वापसी सफ़र 117
(96) सलातु त्तसबीह 117
(97) नमाज़े तौबा 118
(98) आंधी वग़ैरा की नमाज़ 118
(99) नमाज़े जनाज़ा का तरीक़ा 118
(100) दिले मुज़्तर की आख़िरी चंद बातें 119
(101) क़ुराने पाक की ग्यारह सूरतें 121
(102) ख़ुतब-ए-ऊला बराए जुमा 122
(103) ख़ुतब-ए-सानिया बराए जुमा 123
(104) ख़ुतब-ए-ऊला बराए ईदुल-फ़ित्र 124
(105) ख़ुतब-ए-सानिया बराए ईदुलफ़ितर-व-ईदुल अज़हॉ 125
(106) ख़ुतब-ए-उला बराए ईदुल अज़हा 126
(107) मसनून दुआएं 128
(108) नमाज़ के बाद की दुआएं 128
(109) शजर—आलिया 134
(110) मुनाजात 137
(111) माख़ज़ व मराजे पर क नज़र 139
(112) अज़मते नमाज़ और उसके मुअल्लिफ 140
(113) मज़ामीन की एक झलक 144